

प्रारंभिक

[हिन्दी अनुवाद विभाग १ व २]

गुरु भुगर्गीके प्रवात मपादन

श्री ए जे गोडलिया

श्री जैन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ—पूनाकी

पाठ्यपुस्तक प्रकाशन समितिद्वारा

॥ मम्पादित ॥

— प्रकाशिका —

श्री लवजीवन ग्रथमाला
गर्गाआधार (सौराष्ट्र)

यह पुस्तक श्री जन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ-पूनाने अपनी प्रारम्भिक
परीक्षाके लिये मंजूर की है।

नवजीवन ग्रथमाला-पुष्प : ५ (हिन्दी):

संस्करण—पहला
 स २०१२ विद्यमो



संख्या—१०००
 सन १९५५ इस्वी

मूल्य डेट रुपया

— सब अधिकार सुरक्षित —

श्री जन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ पूनाकी पाठ्यपुस्तक प्रकाशन समितिने
 इस पुस्तकके सब अधिकार सुरक्षित रखे हैं। अतः
 कोई भी इस पुस्तकके किसी भी विभाग



या अंगको बिनाप्रीठकी मजूरी



निय बिना नहीं छापा

सकता।

— प्राप्तिस्थान —

★ श्री नवजीवन ग्रथमाला, गारीआधार (सौराष्ट्र)

★ श्री जैन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ

केन्द्रीय कार्यालय—१५६-५७, रविवार पेठ, पूना २

महद गुजरात शाखा
 रायपुरा राट,
 बडोदा १



सौराष्ट्र शाखा
 चांदी बाजार,
 जामनगर



विषय-सूची



पहला विभाग

पृष्ठ १-१४०

क्रमांक	सूत्र	पृष्ठ	क्रमांक	सूत्र	पृष्ठ
(१)	श्री नवकार मंत्र	१	(१५)	श्री जावत के वि साहू	
(२)	श्री पंचिदिय सूत्र	९		सूत्र ८२	
(३)	श्री सवाममण सूत्र	१६	(१६)	श्री पचपरमेष्ठि	
(४)	श्री इच्छवार सूत्र	१९		नमस्कार सूत्र	८६
(५)	श्री इरियावहियं सूत्र	२३	(१७)	श्री उवसगहुर स्तोत्र	८८
(६)	श्री तस्स उत्तरी सूत्र	२८	(१८)	श्री जयवीरराय सूत्र	९४
(७)	श्री अन्नरथ सूत्र	३१	(१९)	श्री भरिहृत चइयाण	
(८)	श्री लोगस्म सूत्र	३८		सूत्र	१०३
(९)	श्री वरेमि भते सूत्र	४५	(२०)	श्री कल्लणकड सूत्र	१०८
(१०)	श्री सामाइयवज्जुतो सूत्र	५०	(२१)	श्री ससारदावानल	
(११)	श्री जगचित्तमणि सूत्र	५६		स्तुति	११६
(१२)	श्री ज विचि सूत्र	६७	(२२)	श्री नवकार मंत्रसे	
(१३)	श्री नमुरयु ण सूत्र	७०		श्री समारदावानल	
(१४)	श्री जावति चइआइ सूत्र	७९		स्तुतितक मूल सूत्र	१२७

दूसरा विभाग

पृष्ठ १४१-२१६

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
(१)	अमण भगवान् श्रीमहावीर श्रेवका आन्ध्र जीवन चरित्र	१४१
(२)	प्रधान तीर्थोना सक्षिप्त परिचय	१७६
(३)	सोलह सनियवि नाम	१८०
(४)	चौबीस तीर्थरुके नाम और लक्षण	१८१
(५)	दशपाल चरित्र	१८२
(६)	प्रारम्भिक परीक्षाके पुराने प्रश्न-पत्र	२०३

गुरुमंसे

(१)	प्रकाशवती ओरसे	
(ii)	नम्र निवेदन	iv
(iii)	शुद्धिपत्रक	v
(iv)	प्रारम्भिक पाठ्यक्रमका अध्ययन किम प्रकार करेंग ?	viii
(v)	माननीय सहायक	x
		xi

प्रकाशककी ओरसे

अभी अभी हमारी यह संस्था अभिनव परिवारवाली पुस्तक जमाना प्रगट कर रही है। इस प्रयासमें यह पुस्तक अब रटा ही है। हमें विद्वान है कि रत्नदीपके समान यह पुस्तक गानाका बहुत ही उपयुक्त मायूम होगी। धार्मिक गिना यह जीवार्था नाव है जाकनरी बुनियाती तागीम है और यह गिना इस पुस्तकमें बहुत ही सरलतासे दी गई है, इसलिये सबमुख यह पुस्तक जनताके लिये आगीवात्समान हागी एसा हमें अब प्रतीत होने लगा है।

श्री जन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ बनाने अपनी प्रारम्भिक परीक्षाके लिये यह पुस्तक मजूर की है अब यह पुस्तक सबमाय भा हागी लगी हमें आगा है। साथ ही यह पुस्तक सबमाय विद्वद्भोग्य व हृदयप्राप्ती हुई है, इसका हमें आनंद है।

सुदृष्टिपूर्ण और सुंदर छापाईने लिये यथागत सर्व प्रयत्न किये गये हैं।

श्री सचके गुन आशीर्वात्तोंसे ऐसे ऐसे अनेक प्रकाशन प्रकाशित करे पानसेवाका लाभ हम निरंतर उठा सक एसा नामनदेवका हृदयसे प्रार्थना।

गारीआधार (सौराष्ट्र) }
ता १५-७-१९५५ }

व्यवस्थापक
श्री नवजीवन प्रथमाला

❀ नम्र निवेदन ❀

हमारे अंतरका ऊमियाँ जिसने लिय उमड़ रही थी हिमोरेँ ले रही थी उन "प्रारम्भिक-पाठक्रम" को मली मानि सम्पादन कर श्री चतुर्विध सभके कार्यक्रमलामें अपण करते हुए हम एक अनिवचनीय आनन्दका अनुभव कर रहे हैं। श्री जन सिद्धांतमें पञ्चावस्थाको प्रधानरूपमें विरतिसाधक माना गया है और उनका विवरण बहुत ही विस्तारक साथ श्री आवश्यक सूत्रमें लिखा गया है। हरेक जनीको इनकी पूरी-पूरी जानकारी होनी अत्यंत ही जरूरत है। जिस प्रकार आक्वी कायपद्धति रेल्वे (अग्निगाडी), स्टीमर (बड़ा जहाज) या बैरॉप्लान (विमान) के साथ सम्बद्ध है उसी प्रकार ये पञ्चावस्थाक प्रतिक्रमण सूत्रोंके साथ बहुत ही निबटका सम्बद्ध रहते हैं। श्री आवश्यक सूत्र में छूट (अलग-अलग) सुमन-पुण्य समान है उन्हें प्रतिक्रमणोंमें मनोहर मालाकी तरह सुंदर व थपठ ढंगसे भूषा गया है। इसी लिये श्री जन शासनमें पञ्चप्रतिक्रमणका बड़ा भारी महत्व माना गया है। आराधकोंकी दुनिया भाल और क्रियारूपी दो आँखासे अपनी मुक्ति साधना करती है। क्रिया ता उमरी एक ही आँख है। श्री प्रतिक्रमण सूत्र में श्री जन शासनकी आराधनाकी तीव्र (मूलाधार) है। धार्मिक क्रिया और सूत्रोंके अथ रहस्योंका ज्ञान में दो इन सूत्राद्वारा प्राप्त होनवाले और साधकताके दिव्य स्वरूपके दान करनेके लिये समर्थ एस निमल चक्षु है। अब इस अवसरपर हम जनताका याद दिलाना चाहते हैं कि निरे क्रिया चक्षुसे विनोद मिद्धि नहीं प्राप्त हो सकती। इस लिये आजक जमानमें क्रियाचक्षुकी मन्द करनेके लिये ज्ञानचक्षुकी भी खालनकी अत्यन्त ही आवश्यकता है।

यद्यपि ज्ञानचक्षु खालनकी—प्रतिक्रमणके सूत्ररूपी सुमन पुष्पाकी अथ ज्ञानरूपी सुगंधी (सुगन्ध) लेनेकी आवश्यकता तो हरेक समयमें-युगमें होती ही है, फिर भी आज जो इस ज्ञानकी ओर बहुत ही असावधानीका

वर्तान बिद्या गता है इसमें समाजमें बड़ा बमनस्प पल गया है। इसने दुष्परिणाम-स्वरूप समाजकी अवनति (ह्रास) हा रही है। जीवन और दूर करनेके लिये इस समय गूत्रों अथानानकी घड़ी आवश्यकता है। अतः हम निम्न निवेदन करते हैं—प्रतिभ्रमण पट्टप्रभृत् हुए अथानानका बड़े जोर शोरसे हरेक गाँवमें प्रचार कीजिए अपनी सतानको (विद्यार्थी विद्यार्थिनियों) इन गूत्रों (अथ रहस्य साथ) सिखा लीजियेगा, जयान यड़े बड़े—मर्मा इगते लाभ उठा ऐमा करनेसे मूल मिलाप—संगठनकी नींव बहुत ही मजबूत (पुष्ट) जायगी, इसमें सन्देहका स्थान ही नहीं।

इसी ज्ञान प्रचारके महान् कार्यके लिये विद्यापीठकी परीक्षाएँ सतोपजनक एवं उपायेय सिद्ध हुई हैं। समाजकी बमाको दूर विद्यापीठके इस प्रमाणमें आप सब लोग हाथ बटावें, ऐसी हमारी एक आशा है।

हमारी पाठ्यपुस्तक प्रकाशन समितिद्वारा विद्यापीठकी हरेक पाठ्यपुस्तककोका संपादन कार्य शुरू किया गया है जिसका यह प्रयास (आदर्श) है। इसी दक्षिण पद्धति अथ पाठ्यपुस्तकको य प्रगट करनेकी हमारी मन कामना है। यह पुस्तक प्रकाशित कर रहे हम अपना अन्विष्ट समान है। आज ज्ञानसंधाका जो कुछ लाभ उठानेका अगुव सुअवसर प्राप्य हुआ है उसने हमें अपरिमित रहा है। जहाँतक हम जानते हैं सूत्रोंके रहस्योंको इतने विचार करनवाली पुस्तक आजतक किसी भाँ सस्थाद्वारा प्रकाशित नहीं अतः आपलोग इसका आनन्द करने हुए हमें अधिक उत्साहित करने आशा है।

इस पाठ्यपुस्तककी नवीनता यह है कि इसमें हर एक सूत्रम सुत्राथ भावाथ परिमल और सरल प्रतीति—गम पाँच विमल गये हैं। पहले विभागमें अन्तमें मूल सूत्र भी बड़े टाईपोमें छपा इसने सूत्र कष्टम्य करनेके लिये और उन्हें सुदृढ़पूरा स्थिति बहुत ही सहायता होगी।

यह पुस्तक प्रथम गुजरातीमें प्रकाशित की गई थी उसीका यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें कुछ अनावश्यक परिवर्तन परिवर्द्धन भी किये हैं फिर भी यह गुजराती पुस्तकके अक्षर-अक्षरको स्यासमें लेकर यथायथ अधिकारी और रनी हा सावधानीसे किया हुआ अनुवाद है। इसी प्रकार इसी पुस्तकका मराठी अनुवाद भी यथाशील ही प्रकाशित करनेकी भावना है। इस प्रकार गुजराती, हिन्दी और मराठी—इन तीन भाषा भाषी प्रदेशोंमें समान पाठ्यक्रमकी पुस्तकीका प्रचार होना हम सगठनके निकट पहुँचेगा।

इस पुस्तकमें हस्त दीर्घ आदि अगुडियापर बहुत ही सावधानी रखी गई है फिर भी मानवस्वभावसे का छपाईकी भूलग ता कोई भी अगुडि रह गई हो उस ठीक कर पढ़नकी धीर उन सब अगुडियोंको आगामी संस्करणमें सुधारनके लिये हमें लिखनकी हम आस—यव पाठकोसे आग्रहपूर्वक विनती करते हैं।

अन्तमें, इस प्रकाशनमें हमारे द्वारा श्रीविनेश्वर प्रभुजीरा आगामे विरुद्ध जो कुछ भी मतिमांस का छपाईकी भूलग छप गया हो उससे लिये हम श्री अनुविध सघने समस्त मिच्छा मि दुःखम् कहते हैं।



प्रधान संपादक,
पाठ्यपुस्तकप्रकाशन समिति,
श्री जन तत्त्वज्ञान विद्यापीठ,
पूना २

ता १५-६-१९५५

शुद्धिपत्रक

(चिन्ति-सदप्रथम इस शुद्धिपत्रकसे अशुद्धियोंको ठीक कर लोजिये और बादमें पुस्तक पढ़िये ।)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	१	दोत्रकर	मिया कर	५	उत्तरक	जवतक
११	१०	उत्तर पत्र	उत्तर हाथ	८	यो रु द	जो पढ़े
१२	१७	पाचोप्य	पविदिय	२१	इसा लिजे	तो फिर
२०	७	गुणवन्तक	गुणवन्तने	९	बदन	बन्ने
२१	२४	समाप्त	समाप्त	११	स	इस
२४	८	द्विपदाक	द्विपदकाल	१५	स्पर्शता बन्नामे	जपाती बमोसे
२७	३	मो सो	मो इसी	१५	रु	क
३२	१८	सततचालेहि	सततचालेहि	२	अपूर्ण है	अपूर्ण है
३७	१	लगा	लगा	२४	बमको	बमको
३९	३	(२१) नमिनायका (२१) नमिनायको	(२१) नमिनायका (२१) नमिनायको	५	समसाहवे	समसाहवे
८०	७	करहे ते	बगिह ते	२०	मेने	मने
		सविदि	सविदि	२१	अस्ति	अस्ति

पृष्ठ	पंक्ति	अष्ट	श्ल
८६	१६	मः	मू
८७	५	का	काय
८८	२०	न्य	लिय
८९	२०	अवयाथ	अवयाथ
९०	२०	वर	बुरे
९१	२	अरि त	अरिहत
९२	१६	दगना	देना
९३	१५	क्रिया	क्रिया
९४	९	कठिण	कठिन
९५	१३	सच्चि	सुचि
९६	१६	युतिदेवी	युतदवी
९७	१९	आर	और
९८	६	सत्तजि	सत्तुजि
९९	११	सत्तावणर	सत्तावणर
१००	१३	व	वि
१०१	६	पत्थकरण	परत्थकरण
१०२	१९	न	न
१०३	११	न्या	न्या

पृष्ठ	पंक्ति	अष्ट	श्ल
१५०	२२	वनतः	गंड
१५१	१	यह	वनकवल
१५२	२५	गुजीने	वह
१५३	२०	दुल	प्रभुजीने
१५४	२०	निद	दुल
१५५	२७	मपवा	नी
१५६	१८	इदभूतिजी	मपवा
१५७	२७	सा	इदभूतिजी
१५८	२	माक	साथ
१५९	१३	अमोद	कमाक
१६०	९ व ११	ममेहुगिखर	अमोद
१६१	१८	गणियाजी	समतगिखर
१६२	९	व	गुणायाजी
१६३	२०	जन	व
१६४	२१	।	जिन
१६५	२२	लिय	है
१६६	६	रह	लिये
१६७	१२	लग	रहा

आप इस प्रारम्भिक पाठ्यक्रमका अध्ययन (प्रारम्भिक परोक्षाकी तैयारी)

★ किस प्रकार करेंगे ? ★

इस पुस्तक अगुद्धि गेधन (प्रुफ रीडिंग) के कायमें यमागलय पूरा पूरा सावधानी रगी गई है । अत इस पुस्तकके ह्रस्व दीघरे अनुगार अध्ययन बीजियेगा । सुविधाके लिय नीचे समयपत्रक भी दे रहे हैं ।

सोमवार-मूलसूत्र (वण्ठस्थ करना और गुड लिखना)
मंगलवार-भगवान महावीर स्वामीका चरित्र सतियोगी नाम और प्रभजीके लछन बुधवार-सुत्रोक सध (सप्रयाध और सूत्राध)
गुरुवार-नेपाल चरित्र और तायाकी जाम वारी गुधवार-सामायजान, निबधकी तैयारी शनिवार-सूत्राक भावाध और परिमल दिभाग रविवार-सूत्राका प्रदोत्तरी विभाग

मूल सूत्रके ह्रस्व-दीघपर बिनाग क्याठ रखना चाहिये । इस प्रकार अध्ययन करनेगे आप विशेष योग्यता बगमें उत्ताण हा सन्ते ह ।

श्री जैन सत्यज्ञान विद्यापीठ—पुनाही परोक्षाओंके लिय

★ हमारे प्रकाशन ★

- | | | |
|-------|--|-------|
| (१) | प्रारम्भिक पाठ्यक्रम (गुमराती हिन्दी मराठी) | १-८-० |
| (२) | श्री जैन प्रदोत्तर यादिका | १-८-० |
| (३) | प्राचान रनवनावली | १-८-० |
| (४) | जयगिरा किरणावली | १-०-० |
| (५) | रसकुपिका | ०-८-० |
| (६) | प्रवेश पाठ्यक्रम भा २ (सहलित श्री नेमि जिनवर पचकस्याणक पूजा व दो सग्रायें) | ०-८-० |
| (७) | उद्योतिय प्रवेश | ०-६-० |
| (८) | श्री अयभदव नेमनाध | ०-४-० |
| (९) | स्नाय पूजा | ०-२-० |

नवजीवन ग्रथमाला—गारीआधार (सोराष्ट्र)

★ परमपूज्य मुनिराज श्रीजितेन्द्रविजयजी महाराज ★



प्रमत्तरी वा लोम स

★ पू मु श्रीहरीगभद्रविजयजी महाराज ★ पू मु श्रीवलभद्रविजयजी महाराज ★



माननीय सहायक



पूज्य मुनिराज श्रीजितेन्द्रविजयजी महाराज एव पू. मु. श्रीबलभद्रविजयजी महाराजों से सद्गुणदेवता गुजरानी, 'प्रारम्भिक पाठपत्रम्' का (सशोषण और परिवर्द्धन कर) हिंदी अनुवाद प्रकाशित करनेमें नीचे लिखे महामना धर्मप्रमियाजी ओरसे सहायता प्राप्त हुई है। उन महानुभावोंकी नामावली प्रसिद्ध करने हमें अत्यन्त आनन्द हो रहा है। इसी तरह दानवीराजी धारणे सहायता प्राप्त होनी रहेगी, तो आगेकी परीक्षाअर्थात् पाठपत्रमाफे अमूल्य (अनुष्ठे) ग्रन्थ हिंदी भाषामें प्रकाशित करनेकी अभिलाषा है।

व्यवस्थापक—श्री नवजीवन ग्रन्थमाला, गारीआधार

रूपमें

नाम

- २५१) श्रीमान शेठ जावतमलजी
जीवराजजी रामपुरिया, कलकत्ता
- २५२) श्रीमान शेठ सपतलालजी छाजेड,
राजनादगाँव
- १३१) श्रीमान शेठ रामलाल बुधमल, धमतरी
- १०१) शेठ भेरोदानजी मानकलालजी नाहर,
धमतरी
- १०१) श्री जैन सध, जबलपुर
(द्वाग—श्री चादमलजी दोचर)

ક નામ

૧૦૧) શ્રી મહાસમુવ ઓસવાલ પચાયત
મહાસમુવ (દ્વારા-શ્રી ચાદમલજી કોચર)

૧૦૧) શ્રી સઘ પચાયતી, પઢરિયા
(દ્વારા-શ્રી ચાદમલજી કોચર)

૧૦૧) ગ સ્વ સોનીવાઈ દસ્માની, રાયપુર

૧૦૧) ઝ સૌ તેજીવાઈ શ્રીશ્રીમાલ, યાગવહારા

૧૦૧) ઝ સૌ ઘેલાવાઈ શ્રીશ્રીમાલ, યાગવહારા

૧૦૧) ઝ સૌ આશીવાઈ મોલેચ્છા, યાગવહારા

સ્વયે	સહાયક નામ	સ્થાન
૭૫)	શેઠ હીરાલાલ જીવનલાલજી લાકડ	રાયપુર
૭૫)	શ્રીજ્ઞાનસાતા (દ્વારા-શ્રી રાણુગાલજી મલ્લેચ્છા)	ધમતરી
૫૧)	શેઠ ધાંવમલ ધીરચંદજી	રાયપુર
૫૧)	„ રતનચંદ ધરમચંદજી	,
૫૧)	„ અગરચંદ મુગરચંદજી	,
૫૧)	„ મેઘરાજ હર્ષોત્તમલ પોંચા	મહાસમુ
૫૧)	„ હેમરાજ નેમિચંદ શ્રીશ્રીમાલ	„
૫૧)	„ દોષચંદ પાચુલાજી ચંદ	ધમતરી
૫૧)	„ કુવનમલ સપતલાલ પારેલ	„
૫૧)	„ પુખ્તોરાજ મિશ્રીમલ ચંપાળી	„

पृष्ठ	सहायकोंके नाम	स्थान
५१)	गेठ प्रेमराज कीरतमल गेठिया	धनपुरी
५१)	" सुनिलालजी मेघराज कीवर	बनर्षी
५१)	अ सो मानुवाई गोलेच्छा	धनपुरी
३६)	श्री बालाघाट जैन मय (द्वारा-श्री चादमलजी कावर)	बनर्षी
३१)	गेठ जोगवरमल मेघराज	धनपुरी
२७)	एक सदगृहस्थ	"
२५)	गेठ जेटमलजी भणसाली	बनर्षी
२५)	" निवराज बनयालाल शास्त्र	धनपुरी
२१)	गेठ अनीलाल अमरनाथ नाहर	बनर्षी
२१)	" गुठराजजी मेघसाली	धनपुरी
२१)	" देवाचर लक्ष्मीचर कावर	धनपुरी
२१)	" जीवनलाल जोगराजरा	धनपुरी
२१)	" बनारसलालजी बाधा	धनपुरी
२१)	एक सदगृहस्थ	बनर्षी
२१)	गेठ देवचर अचरीलाल कीवर	धनपुरी
२१)	एक ब्रह्म	बनर्षी
२०)	गेठ नैमिषदत्त चौपड़ा	"
१५)	" आगमल अमरचर बाजी	धनपुरी
१५)	हुवरजीभाई गुबराणी	"
११)	" मिथीमल अमरराज कीवर	"
११)	सपतलाल आगराचर बाजी	"
११)	" छोमल नैमिषदत्त बिले	"
११)	" जोधराज सपतलाल बाजी	"
११)	" बंसोलाल मेघराज बाजी	"
११)	अमृतमल सुनवर बाजी	"
११)	" सुखीराज मेघराज बाजी	"
११)	" लामचर अमरचर बाजी	"

क्र.सं.	सहायकोरे नाग	स्थान
११)	शेठ रतनचंद धाग्वमळ कोचर	धमतरी
११)	, धस्तिमल उत्तमचंद सोडा	"
११)	" वधोचंदजी वगणी	"
११)	तेजपाल एवढ सत्त	"
११)	शाठ सोनराज परमचंद लच्छावण	"
११)	" बीनराज मूलचंद गोलेच्छा	"
११)	मुसराम फुलचंद संवलेच्छा	"
११)	तेजमल धवरचंदजी	"
११)	" मुलावचंद भागकरण	"
११)	, पुनमचंदजी धंद	रायपुर
११)	, तेजमल गिवराज	"
११)	, भागकरण जगोपचंद	"
११)	हस्तिमल मुलावचंद	"
११)	, रामचंद टोपमचंद	"
११)	सतमलजी बुरठ	"
११)	भवरतल सागरमन	"
११)	श्री कचराबाई चोपडा	धमतरी
११)	, गौरीबाई लोंकड	"
११)	" गुमानीबाई सावक	"
११)	रामकुंवरबाई सोडा	"
११)	बस्तुरीबाई तात्तीआना	"
११)	समकीबाई कोचर	"
११)	सततीबाई श्रीधीमाल	राजनांदगांव
११)	" ननीबाई धोंवा	महासमुद्र
११)	, साधबाई	कोतरगो
९)	श्री धमाबाई भाटु	लिसोरा
७)	शेठ जठमलजी पारेच	रायपुर
७)	, गनमल धवरचंद कोचर	धमतरी
७)	, कनयालाल लुनोआ	भामाभांचा

संख्या	सहायकोंके नाम	स्थान
७)	श्री पांजीबाई गोलेच्छा	धमतरी
७)	„ रूपीबाई	„
७)	„ मुलीबाई श्रीथीमाल	महासमुद्र
७)	„ जमनाबाई श्रीथीमाल	„
७)	„ मिरगोबाई बरडिमा	„
७)	„ उदलसबाई बाफना	„
७)	„ तेजाबाई कोचर	„
७)	„ पानुबाई पारेख	„
७)	„ बचराबाई लुनीआ	„
६)	„ चपाबाई गोलेच्छा	धमतरी
६)	गौठ माणकचंद बनयागार पारेख	„
६)	पुसीलाल बघ	„
६)	„ तुलसीराम रामलाल गोलेच्छा	„
६)	„ सुदरलालजी महाटा	रायपुर
६)	„ बागकरण मूलचंद	„
६)	„ जेठमलजी पारेख	„
६)	„ माणकचंदजी सावनमुखते	„
६)	„ गुलाबचंद मांगीलाल	„
६)	„ जेठमलजी मुखलालजी	बागबहारा
६)	„ तेजमल भीखमचंद	सरुना
६)	„ सुभागमल मांगीलाल कोचर	बाटाभजी
६)	„ लक्ष्मीचंदजी बोयरा	जयगढ़पुर
६)	„ अगरचंदजी बहालाल	„
६)	„ बजराल मदनचंदजी	„
६)	श्री जुगाबाई सकरेच्छा	धमतरी
६)	पायसीबाई सठिया	„
६)	प्रमिबाई चापडा	„
६)	पेपोबाई चापडा	„
६)	„ पानीबाई लाकड	„

दरये	सहायकोवि नाम	स्थान
५)	थी घाईवाई लावड	धमतरी
५)	बस्तुरीवाई वगाणी	
५)	जीयावाई वगाणी	
५)	रमकुवाई रावेचा	
५)	रमकुवाई लावड	,
५)	गोमावाई पारेख	"
५)	बमलावाई बापडा	,
५)	पाणीवाई बापडा	,
५)	गतावाई चोपडा	,
५)	मवरवाई गांछा	
५)	घाणुवाई लीजा	
५)	दीपावाई कुनीआ	"
५)	शुमकीवाई लावड	
५)	फुलुवाई लावड	
५)	तापतवाई मानर	,
५)	वेसनवाई नाहर	,
५)	भीखीवाई पारेख	,
५)	जमनावाई घटिया	,
५)	गुदरवाई घटिया	
५)	जीयावाई सवेचा	
५)	जवरीवाई गुंछा	,
५)	सभावाई लुरड	
५)	गांवावाई वगाणी	
५)	जगावाई घुसलीजा	पट्टिया
५)	छमनीवाई डाधा	रायपुर
५)	जमनावाई मोठ्ठ्या	
५)	जनीवाई गांछा	
५)	पानवाई बेगानी	
५)	पद्मावाई वगाणी	,

हपये	सहायकोचे नाम	स्था
५)	श्री आणीबाई बगानी	रायपुर
५)	, माणवबाई बांठिया	,
५)	, मंगीबाई चापडा	"
५)	, पानबाई मारोटी	,
५)	, कमलाबाई बंद	"
५)	, चंद्रकाताजन गुजराती	,
५)	कमलाबाई मालु	महाममुंद
५)	, हीराबाई माल	,
५)	, धातुबाई मालु	,
५)	रत्नाबाई श्रीश्रीमाल	,
५)	लीलाबाई पाचा	"
५)	गुलाबबाई	कान्हा ता
५)	, पतासीबाई श्रीश्रीमाल	बागवारा
५)	आणीबाई श्रीश्रीमाल	,
५)	केसरीबाई गोलेच्छा	,
५)	, पानीबाई गठिया	,
६)	गठ दानमल नेमिचंदजी डाघा	मामामाथा
६)	श्री जननबाई पारेख	धमतरी
४)	अनोपाबाई गाळेच्छा	
६)	ढलाबाई बोयरा	महाममुंद
३)	कु मादुबाई बगानी	धमतरी
३)	श्री पेपीबाई पीचा	बोछरणी
२)	शठ हस्तिमल राणुलाल पारेख	धमतरी
२)	, तेजमल धवरचंजी बगानी	"
२)	, जमनालाल दुमंड	
२)	सोनराज लक्ष्मीचंद सोनी	
२)	विद्यार्थी राणुलाल दयाणा	"
२)	शठ जेवरचंदजी पोयरा	"
२)	, गणुददास सुंदरजी गाधी	"
२)	गैठ जठमलजी बोयरा	जमना

रूपये	सहायके नाम	रुपा
२)	, आनन्दमल्लजी वैद	"
२)	, सुगनमल्ल शिवनलाल तबल्ला	"
२)	" दीपचन्द लालचर्मा जैन	"
२)	, भधराजजी घुंरा	,
२)	श्री अचीवाई छात्रेद	प्रमोद
२)	, गंगावाई घटिया	"
२)	, रमकु गार्ड पारैल	,
२)	, धपावाई श्रीवद	,
२)	" लाडावाई सबलच्छा	,
२)	, पानीवाई	,
२)	, जीर्णवाई राकैवा	"
२)	हु आणीवाई गटिया	
२)	श्री जमनावाई गोलेच्छा	देवका
२)	, गंगावाई गोलेच्छा	वीरगुई
२)	, जननवाई घटिया	बागदलपुर
२)	, सुन्दरवाई गटिया	मुमल
२)	, सरजूवाई गटिया	गोमिष
२)	, कमलाना गटिया	लु
२)	, प्यारीवाई शावर	रायपुर
२)	, धाणुवाई बगानी	
२)	, दिनाजीवन मुखराती	
२)	, गिरियावाई लोका	
२)	, गुलाबवाई पारैल	
२)	, शान्तिवाई गोलेच्छा	महागम
२)	, मातीवाई हाथा	
२)	, केसरवाई मुनीजा	
२)	हु जसुमती धारलगाव	
२)	श्री मोनीवाई पावा	कोतरग
२)	, वलामीवाई छानाणी	बागमहार
१)	छठ भवरलालजी न	जमालपुर
१)	श्री केररीवाई छात्रेद	धमनरी
१)	हु राधावाई घोषडा	"

॥ श्रीशंखधरपादनाथाय नमः ॥



प्रारंभिक पाठ्यक्रम.



• विभाग पहला •

श्री नवकारमंत्रसे समारंभात् २१ सूत्र

• अन्वयार्थ • मंत्रार्थ • भाषा • परिमल

• सरा प्रज्ञेयती • मन्त्र सूत्र

१ श्री नवकार मन्त्र (पंचमंगल सूत्र)

अन्वयार्थ

नमो-नमस्कार हो अरिहताण-चार पाती नमोका नाश करनेवाले श्रीतीर्थकर भगवतोको मिद्वान-आठ कर्मोका क्षय करनेवाले सिद्ध भगवन्तोको आपरियाण-छत्तीस गुणोसे विभू पित आचार्य महाराजोको उवज्झायाण-पचीस गुणोसे अलहून उपाध्यायजी महाराजोको लोअे-(ढाई द्वीप प्रमाण) मनुष्य लोकमें सचार करनेवाले सव्यमाहूण-सत्ताईस गुणमंडित, सर्व नाथु महाराज एव साध्वीजी महाराजोको एसे-ये पंच-पाच नमुक्षारो-नमस्कार सव्य-सत्र पात्र-पापाका प्यणामणो-सम्पूर्णनया नाश करनेवाले भगलाण-भगलोमें च-आर सव्वेमि-सव(में) पढम-प्रथम, श्रेष्ठ हवइ-हैं मंगल

मंगल

सुप्रार्थ

नमो अरिहताण-चार घातीकमेंका १ नाग करनेवाले श्री
भगवन्तोको (मेरा) नमस्कार हो। (मैं उन्हें नम
करता हूँ।)

नमो सिद्धाण-जिहने आठ कमाना क्षय करके मोक्ष
किया है-को परमगुद्ध हुए हैं, ऐसे श्रीसिद्ध भग
वन्तोको नमस्कार हो।

नमो आपरियाण-आचार्य महागुरुको नमस्कार हो।

नमो उवज्जायाण-उपाध्यायजी महागुरुको नमस्कार हो।

नमो लेण मन्वमाहूण-दोई द्वीप प्रमाण मनुष्यलोकमें
करनेवाले सर्व साधु महाराजको नमस्कार हो।

एतो पचनमुकारा-(उपर कहे हुए) पांच परमेष्ठियोंको
हुए ये नमस्कार

सव्वपापप्पणामणो-अनन्त जर्मोंके सचित सब पापाका
तथा नाग करते हैं।

भगलाण च मन्नेमि-और यहि एव पारलौकिक मर
पढम हरड भगल-प्रथम (सर्वश्रेष्ठ) कल्याणकारी हैं।

१ कर्म नाग है : चार घाता कर्म और चार अधर्मी कर्म। ना
शनाउरणाय मोहनाय और भतराय ये चार घाता
कर्मोंके, आय नाग और मोहनाय ये चार अधर्मी

मार्गार्थ

इस सूत्रमें पाँच परमेष्ठियोंको नमस्कार किया गया है। इनमेंसे एकको भी मन्त्रे दिवसे नमस्कार किया जाय, तो वह सब विद्याको दूर कर भविष्यको मंगलमय बनाता है। इस सूत्रका धामहानिर्णीधसूत्रम वृत्ता नाम पञ्चमंगल महाश्रुतस्त्वध है। इस नवकारमन्त्रको श्री नमस्कार महामन्त्र भी कहते हैं। यह चौदह पूजाका मन्त्र है। यह आध्यात्म अर्थात् अनादि मन्त्र है। इसका रक्षयिता कोई नहीं है। तादृश भगवान् तो इसे प्रकाशमान होनेका कार्य करते हैं। सूत्रम दृष्टिसे विचार किया जाय, तो एक बात साफ साफ च्यालमें आएगी कि अरिहत किमा यत्कि विद्वेषका नाम नहीं है। जो मन्त्र सज्जन होकर राग और द्वेषरूपी आतुरिक गन्धु (अरि) भोजन नाश (हन्त) करते हैं, उन भीतराग तार्थकराका ही यहाँ 'अरिहन्त' पदसे बोध होता है। इस प्रकार मूलमन्त्रम जब कि भगवान्का ही नाम नहीं आता तब आध्याय या उपाध्याय महाराजका नाम कहाँसे आएगा? इसीका नाम गुणपूजा है। चैन ज्ञाननम श्यनिपूना और दृष्टिरागको स्थान नहीं है। जिस प्रकार उत्तम औषधिस रोग दूर होता है, और शरीरकी शक्ति भी बढ़ती है, उसी प्रकार इन पाँच परमेष्ठियोंका नमस्कारसे (इस महामन्त्रसे) (१) मन्त्र पापोंका नाश और (२) भविष्यम श्रेष्ठ मंगलकी प्राप्ति होती है। अर्थात् यह मन्त्र भूतकालका पापको (पापसे उत्पन्न होनेवाले विद्वेषोंको) दूर कर भविष्यको उज्ज्वल बनाता है। यह मन्त्रकार मन्त्र ६८ अक्षरामय पूर्ण माना जाता है। इसके जरत आत्मा पवित्र और क्षीण कमबख्तबाली बनती है। नवकारका नौ लाम्ब अप होनेसे जीवको नारकी योनिमें नहीं जाता पड़ता।

परिमल

★ विधिपुरस्सर ९ कतेइ नवकारका यह हविसे तान नमम मोक्ष प्राप्ति होती है। नवकार उपरी विधि भगवान्, उनकी तस्वीर या श्रीमित्रचक्रक

समुच्च हरियावही मोलकर ५-१०-१५ इस तरह पाचकी गिनतीसे मागणें करनी चाहिये, अधूरी या कम नहीं। जपक स्मरण मात्र सुपर धन शुद्ध कपड़े पहनने चाहिये।]

- ★ चापत नवकार मन्त्र चापत आगमाओं पवित्र बनाकर उसके अन्तर्गत दुर्गराजा नाश करता है—इससे इस मन्त्रका प्रभाव स्पष्ट होता है।
- ★ नवकार महामन्त्रके प्रभावका साक्षात्कार करना हो तो ८ मास तक त्रिपुंज नवकार मास्त्रका जप कीजिये।
- ★ भिन्न प्रकार तैराक पोंव डिलाकर पीउके पानीको छुटाला ६ और हाथसे आगेवे जलप्रवाहका दूर करन हुए आगे बढ़ता है उसी प्रकार नवकार मन्त्रका जप करनगला पूरवचित (पीउके) पापना नाश करता है और जानवाणे (आगेवे) शिमाको दूर करने हुए आराधनामार्गमें आगे बढ़ता है। नवकार मन्त्रको हरदस पहनेराला इस नवकार और जीपण अरममुद्रको सहजस पार करता है।
- ★ परमेष्ठियोकी गुणगुणका उच्चार और व्यापक भाव नवकार महामन्त्रकी महत्ताका धोतक है। इसके स्मरणस आगमास परिपूर्ण धन-धका भाविर्भाव और स्वस्वरपका ज्ञान होता है। इसके 'नव'—'दम'—'भक्षर'—'भक्षरम' जीर्णक प्राति वाग्यव्यभावना है।
- ★ चांदह पूरक दोहमक्य नवकार मन्त्र'के 'गुरुम ही जमी' चांदसे उपकारिपोंकी नमस्कार करनेका विधान है इससे एक बार स्पष्ट होगी है कि धमका मूल विषय है।
- ★ सालार १०८ मणियोंने जप करना और पाच परमेष्ठियोंकी नमस्कार करना इसका आदर्श प्रमाण यह है कि जब पाच परमेष्ठियोंके १०८ गुण अपनेमें आ गयेने हैं।
- ★ नवकार मन्त्रमें बाईं होपप्रमाण मनुष्य शोकके भूत मजिय और वतमान तीर्ण कागक सब चीजेंकर मगजान भावार्थ मदरान उपाध्यायकी महाराज और माधु महाशयकी गुणगुनी है—इस बातका विचार करनमे भी यह मन्त्र धमकारण और प्रभावशाली मान्यम पवता है।

★ नमो अरिहताण पदसे हम यह जान सकते हैं कि जिस प्रकार अभी भारतभूतमें तीर्थस्वरूपिहान वाला है, उस प्रकार समूचे मनुष्यलोकमें नहीं होता। मनुष्यलोकमें तो २० या उससे अधिक तीर्थस्वरूपि विद्यमान होते हैं। अपने साथ बिना पथीदेवी रह ही नहीं सकते। यहाँ अरतक्षत्रमें नहीं तो महाविदेक्षत्रमें साथकर भगवत् रहते हैं। इस समय भी महाविदेक्षत्रमें ४ घाती कर्मोंका क्षय किया है ऐसे कर्मजानों अरिहत् भगवत् विजयक साथ विहार करते हैं। इसी विषय भाव तीर्थस्वरूपी घटनासे भी यह पद आज हम गौरवक साथ बोल सकते हैं।

★ मूलन घटका अभिनन्दन परिचिनोंकी ही किया-भजा जाता है पर जिन्हें हमने देखा नहीं और जिनसे हम बिल्कुल अपरिचित हैं—एक (बाईं द्वीपप्रमाण मनुष्यलोक-कर्मभूमिमें विहार करनेवाले एक महाव्रतोंका पालन करनेवाले) सब मनिराजोंकी भी हम नमो लोए सत्यसाधू इस पदसे नमस्कार करते हैं यह हमारा सौभाग्य है। इससे जैन शासनका विनाश उन्मत्ता (एक घम प्रीति) प्रगट होती है।

★ नवकार महामन्त्र १४ पूर्वोंका वा सार—४५ आत्मोंका निष्कोट [एक तरफ ४५ आत्मोंके तत्त्वमयनसे विद्वान् पुरुष अपना कल्याण करते हैं जबकि दूसरी ओर नवसामाज्य एक अज्ञानी लोग अज्ञापूर्वक नवकार मन्त्र अपने ही अपना भेद सिद्ध करते हैं। आत्मोंकी पन्नेका अधिकार साथ साथ महारजोंकी ही है, नव धावक धाविका समाजके लिए अधिकतर तो नवकार मन्त्र ही परम आधार है।

★ पाँचों परमेष्ठी सूत्र और हम पूजक (पुजारी) हैं—यह भाव 'नमो' पदसे निकलता है।

★ व्यक्तिपूजाका छोड़कर गुणपूजाका ही महत्त्वपूर्ण स्थान होना भी नवकार मन्त्र 'महामन्त्र' कहा जाता है। इससे एक बात स्पष्ट

प्रश्न २—नवकारमन्त्रमे किनका स्मरण और किन्हें नमस्कार किया जाता है ?

उत्तर —इस महामन्त्रसे जगतके परम पवित्र पाच परमेष्ठियोंका स्मरण और उन पाचोंको नमस्कार किया जाता है।

प्रश्न ३—परमेष्ठी माने कौन ? उनके नाम कहिये।

उत्तर —उच्चतम स्थानको प्राप्त हुई आत्मा परमेष्ठा है।

(१) अरिहत (२) सिद्ध (३) आचार्य (४) उपाध्याय (५) साधु—ये पाच परमेष्ठी हैं।

प्रश्न ४—जैन दर्शनका यथार्थता—गुणग्राहकता अन्य प्रमाणसे बताइये।

उत्तर —बहुश्रुतशिरोमणि पू आ म श्राहरिभद्रसूरिजीका एक श्लोक पढ़नेसे इसका पूरा पूरा ज्ञान हो जायगा।
श्लोक—पक्षपातो न मे वारे न द्वेष कपिलादिषु।
युक्तिमद्वचन यस्य तस्य कार्य परिग्रह ॥

भावार्थ यह है कि हमें नामसे मतलब नहीं। नाम चाहे कपिल हो या महावीर—नामकात्रसे ही हम पक्षपात नहीं करेंगे। जिसका वचन समुचित होगा वही हमें मान्य है।

प्रश्न ५—नवकारमन्त्रका जप कब करना चाहिये ?

उत्तर —सूता, बेसता, उठता, जे समरे अरिहत ;

दु खीयाना दु ख भागशे, ठहेशे सुख अनन्त ।

नवकारमन्त्र १४ पूर्वोक्त सार है। १४ पूर्वधर महा-मुनिराजोंको भा अन्तसमय (अशांता वेदनीयके उदयसे

पढ़े हुए पूर्वाको भूल जानेके कारण या उनके मनन चिन्तन करनेका अपसर ७ रहनेके कारण) इस नवकारमन्त्रा हा आश्रय लेना पड़ता है। भगवान् श्री पारवनाथस्वामाजाने कुमार अवस्थाम जलते हुए नामकी यह मन्त्र सुनाया था, इसके प्रभावसे मरनेके बाद नाम परणेन्द्र हुआ था। इस महामन्त्रका प्रभाव अनन्त और आश्चर्यकारक है।

प्रश्न ६—३रे, ४थे और ५वें परमेष्ठी तो वातराग नहीं ह, तो वे पूज्य कैसे? इसी प्रकार अन्य छत्रस्थ मनुष्योंको इस मन्त्रम स्थान क्यों नहीं दिया गया?

उत्तर —आकार-प्रकारसे तो ये तानों परमेष्ठा मनुष्य जैसे हा ह, किन्तु समारियोंसे-रागियोंसे इस संसारके त्यागियोंका कामत निश्चित हा अधिक माननी पड़ेगा। वे वातराग नहीं है, पर वातराग होनेकी निरंतर चेष्टा कर रहे हैं और वातरागकथित मोक्ष मार्ग हा-का उपदेश करते हैं। वे कचन-कामिनाके त्याग और मोक्षमार्गके अनुराग हैं। अत एव वे पूजनीय ह संसारी मानव ऐसे त्यागा, आत्मार्थी, उपकारा और पूज्य नहीं ह, यहा कारण है कि जिससे उनका नाम इस पवित्र मन्त्रमें नहीं आता।

प्रश्न ७—नम्रकार महामन्त्रका श्री सिद्धचक्र यन्त्रके साथ क्या संबंध है?

उत्तर — श्री सिद्धचक्र यत्रमें नौ पद ह और पाच परमेष्ठियोंमें पहले दो देव है और पीछेके तीन गुरुपदको सुशोभित करनेवाले ह । इस प्रकार धर्मके आगार देव और धर्मके दाता गुरु—ये दोनों नवकारमंत्रमें हानिसे गुणगुणा सबधसे धर्मस्वरूप दशन, ज्ञान, चारित्र और तप भा इस महामंत्रमें ह ही । देव और गुरु गुणी ह जबकि दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप आत्माके गुण है । लाल घड़ा ' कहनेमें लालिमा घड़ेसे अभिन्न है—यह गुणगुणी सबध हुआ । आम्बिन और चैत्रकी ओलाजामें दूसरे प्रकारसे इस महामंत्रका हा आराधन होता है, ऐसा भा कह सकते ह । इस प्रकार श्रीसिद्धचक्र मंत्र और श्रानवकार महामंत्र वास्तवमें अभिन्न हा है—यही उनका सबध हुआ ।

२ श्री पचिदिय (स्थापना) सूत्र

अन्वयार्थ

पचिदिय—पाँचों इन्द्रियोंको सवरणो—अपने वशमें रखनेवाले तह—उसा प्रकार नवविह—नौ प्रकारका बभचेर—ब्रह्मचयव्रतका गुप्तिधरो—गुप्तिधरोका धारण (रक्षण) करनेवाले चउविह—चार प्रकारके वसाम—वसायोंसे मुक्को—अलिप्त, दूर, मुक्त

इय-इन अट्ठारस-अठारह गुणहि-गुणोंसे सजुत्तो-
 विभूषित [१] पच-पाँच महव्वय-महान् व्रतों (प्रतिशाओं) से
 जुत्तो-युक्त पचविहायार-पाँच प्रकारके आचारोंके पालन-
 पालनमें समत्थो-समर्थ पचसमिओ-पाँचों मर्मितियोंका
 पालन करनेवाले तिगुत्तो-मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति-
 इनका आचरण करनेवाले इस प्रकार पुठ छत्तीस-छत्ताम
 गुणो-गुणोंसे अलङ्कृत गुरु-गुरुमहाराज भज्ज-मेर [२]

सूत्राय

पचिदियसवरणो (५)—पाँचा इन्द्रियाके विरागोंको अपने
 वशमें रखनेवाले

तह नवविहयभचेरगुत्तिधरो (९)—उसा प्रकार नौ प्रकारका
 ब्रह्मचर्यका गुप्तियोंका (शालग्रतके स्थानाका) रक्षण करनेवाले

चउविहकसायमुवको (४)—बोध, मान, माया और लोभ
 इन चार प्रकारके कषायोंसे दूर रहनेवाले

इय अट्ठारसगुणेहि सजुत्तो—इहा अठारह गुणोंसे
 विभूषित [१]

पचमहव्वयजुत्तो (५)—१ हिंसा न करना २ असत्य ॥
 बोलना ३ धारा न करना ४ स्त्रियोंको स्पर्श न करना
 ५ किसी भा प्रकारका (स्पृश्ये जैसे आदिका) परिग्रह न
 करना—इन पाँच महान् व्रतोंसे युक्त

पचविहायार पालणसमत्थो (५)—ज्ञानाचार, दशनाचार
 चारिणाचार, तपाचार एवं वायाचार इन पाँचों प्रकारके

आचारोंके पालनमें समर्थ, सफल अर्थात् पुरपार्थी एवं शक्तिसम्पन्न

पंचसमिओ तिगुत्तो (५+३)—पाँच समितिओंका पालन करनेवाले और मन, वचन एवं कायाके अशुभ व्यापारोंसे दूर रहनेवाले—तीनों गुणोंका आचरण करनेवाले

छत्तीसगुणो गुरु मज्झ—उपरोक्त छत्तीस गुणोंसे विराजमान मेरे गुरुमहाराज ह । (म उनका स्थापना करता हूँ ।) [२]

भावाय

इस सूत्रमें आचार्य महाराजके छत्तीस गुणोंका वचन किया है । आचार्य महाराज या गुरु महाराज उपस्थित न हों तो उल्टा हाथ रख कर नवकार एवं पश्चिमि सूत्रोंसे उनके गुणोंकी स्थापना कर इस स्थापनाचायजीके सामने स्वयं गुरुमहाराज ही सम्मल विराजमान ह—ऐसी भावनासे हम सामायिक जादि धार्मिक कियाए कर सकते हैं । गुरु महाराजके स्थानपर पुस्तक माला समुद्र या समुद्र दान ज्ञान चारित्रके किसी भी उपकरणको उचित स्थानपर रखकर नवकार और पश्चिमि सूत्र पढ़कर स्थापनाचायजीकी स्थापना की जाती है । इनके समल भी किया करनेसे दिया गद्य हो सकती है इसी लिये इस सूत्रका दूसरा नाम स्थापना सूत्र भी है ।

परिमल

- ★ गरीर और मनको यश करनेके लिये थोड़ा साउनभूत पाँच समितियाँ और तीन गुणियाँ गरीरमें रही हुई आत्मापर निरंतर कडा पहरा करनी है । यदि गुरुमहाराजके आचरणमें होय न होती तो उनका आदर ही कौन करते ? इनके होनेसे ही वे विगुद और निमल हृदयके माने जाते हैं और सार विद्वयमें अपना आदर प्रभाव फला सकते हैं ।
- ★ मन वचन और कायापर उनका कितना अधिकार है और उनकी मनीमत भावनाएँ कितनी उच्च हैं—इसका साक्षात्कार हमें गुरु-

- महाराजक पाँच समितियों और तीन गुप्तियोंक पालन हो जाता है।
- ★ पार्षदिक क्रियाक्रममें सम्पूर्ण उपयोगपुण्यक भा प्रवर्ति की जाती है। उसका नाम समिति यह उसका सरलाय हुआ। उसी प्रकार चवल मन वचन और वाग्यको स्थिर करनेका उपाय या उनको अगुन प्रवृत्तियोंसे दूर रखना—यह है गुप्ति का अर्थ।
- ★ आज १८ सत्तारमें जिस प्रकार भिन्न भिन्न कार्योके लिये अलग-अलग समितियाँ बना कर उनके द्वारा व्यवस्थानत्र सुगमभागे चलाय जाता है उसी प्रकार आचार्यक व्यवस्थानत्र सरलताके चलायके लिये व्यवस्थाना धोवीनराणी भगवान् जिन पाँच समितियों और तीन गुप्तिओंका आयोजन किया है। एक हितावहे यों भी कहा जा सकता है।
- ★ दूसरोंको दुरुत उत्पन्न हो जाय वसी कटुता अपने स्वार्थी मुक्त प्राप वनी रहनी है। मन एक वाणीमें मापुवके मरकारक लि धोवीनराणी भगवान् जिन धुरितताको भाषा समितिक पालनक देन विगपकसे दिया है।

सरल प्रश्नात्तरी

प्रश्न १—पार्षदीय सून किस ठिमे है ? उसमें क्या आता है ?

उत्तर —सामायिक छेते समय स्थापनाचायजीकी स्थापन करनेके छिये नवकार मत्रके बाद तुरन्त ही यह सूत्र कहा जाता है। इस सूत्रमें आचार्य महाराजोंके (३५) छर्नाम गुणोंका वर्णन है।

प्रश्न २—आचार्यमहाराजके छनास गुण बताइये।

उत्तर —५ होन्द्रियोंको वश करनेवाले, १ शीउग्रतके स्थानोंक रक्षा करेवाले, ४ कथाओंसे दूर रहनेवाले, ५ महान् व्रताका धारण करनेवाले, ५ महान् आचारोंका पालन

कग्नेवाले, ५ समितियों और २ गुप्तियोंका धारण करनेवाले—इस प्रकार आचार्य महाराजके ३६ गुण हैं। इन ३६ गुणोंसे विराजमान आचार्य महाराज परमेष्ठीके तीसरे पद—‘आचार्य’को उज्ज्वल करते हैं। इन गुणोंसे वे भावाचार्य कहलाते हैं।

प्रश्न ३—पाँच इन्द्रियोंका काम व्यावहारिक भाषामें समझाइये।

उत्तर —(१) स्पर्शेन्द्रिय (चमड़ा)—स्पर्श जाननेका काम
(२) रसनेन्द्रिय (जीभ)—रसास्वाद चखनेका काम
(३) घ्राणेन्द्रिय (नाक)—गंधज्ञान-सूँघनेका काम
(४) नेत्रेन्द्रिय (आँख)—दखनेका काम
(५) श्रोत्रेन्द्रिय या कर्णेन्द्रिय (कान) सुननेका काम
(इन्द्रियोंका क्रम भी इस प्रकार हा होना चाहिये ।)
एक इन्द्रियवाले जावोंमें मात्र स्पर्शेन्द्रिय हाता है।
दो इन्द्रियवाले जावोंमें स्पर्शेन्द्रिय और रसनेन्द्रिय होता ह। तान इन्द्रियवाले जावोंमें घ्राणेन्द्रिय, चार इन्द्रियवालोंमें नेत्रेन्द्रिय और पाँच इन्द्रियवालोंमें श्रोत्रेन्द्रिय क्रमश ज्यादा होती है।

प्रश्न ४—पाँच महाव्रतोंका स्वरूप समझाइये।

उत्तर —(१) प्राणातिपातविरमण—जाव हिंसा न करना
(२) मृषावादविरमण—झूठ न बोलना
(३) अदत्तादानविरमण—चोरा न करना
(४) मैथुनविरमण—ब्रह्मचर्यका पालन करना

(५) परिग्रहविमर्षण—धन धान्यादि वस्तुओंका सम्पन्न

करना

मूहम जावदयाका पालन और कचन कामिनाका त्याग
यहा इन महाव्रतोंमें मग्य तत्त्व है । आज सारा
दुनिया सा आर धनके पाछ पाछ बना है, अतः
उसे ये महाव्रत अति कठिन मालूम होंगे । अध भी
कामना उपासिका होनम दुनिया आज ऐरान-मरेशान
हो गई है । इना लये महाव्रतोंका तत्त्व अत्यन्त
महत्त्वपूर्ण है, यह बात स्पष्ट हो जाता है ।

प्रश्न ५—पाँच समितियोंके नाम और उनका विवरण लिखिये

उत्तर — (१) इषा समिति — घलते षगते समय जावदिसाक
बचाते ५५ बलना

(२) भाषा समिति—बोलनेमें भी समयपूर्वक योग्य
आवश्यक, मधुर और हितकारी पचन ही बोलना

(३) एषणा समिति—आहार जल आदि आवश्यक
वस्तुओंको निर्दाय अवस्थामें प्राप्त करना
(जैसे कि मुनिराज गोचरी पाना आदि दुयि
न हो जाय वैसा सावधाना रखते ह ।)

(४) आदानभट्टमत्तनिक्षेपणा समिति—पात्र आ
उपयुक्त साधनोंको छेत्ते-रखते समय प्रमाज
करना, पतना रखना, दत्तचित्त(सावधान)रहन

(५) पारिष्ठापनिका समिति—मल—मूत्र आदि मलिन और त्याज्य वस्तुओंको पेंकते समय जीवयतना करना

प्रश्न ६—तीन गुणोंके नाम और उनका विवरण । लखिये ।

उत्तर — (१) मनोगुण—मनके अशुभ विचारोंको कायमें रखना
(२) वचनगुण—बाणापर सयम, दूसरोंको दुःख हो बैसा न बोलना

(३) कायगुण—कार्यवश उठते, बैठते, आते, जाते समय प्रमार्जनापूर्वक शरीरका हिल धल रखना

प्रश्न ७—स्थापनाधायनार्थ स्थापना करते समय हाथ उलटा क्यों रखा जाता है ?

उत्तर — कोई वस्तु रखते समय या किसीको देते समय हाथ उलटा हो रहता है । यहा गुणोंका स्थापना-गुणोंका आरोपण किया जाता है, इस लिये हाथ उलटा रखा जाता है । सूत्रमें कहे हुए गुणोंमें अलङ्कारोंको हा में गुरु मानकर उन परम पवित्र गुरु महाराजका साक्षामें यह धमाकिया करता ह—यह गुणोंके आरोपण का रहस्य है ।

३ श्री खमासमण (प्रणिपात) सूत्र

अवयवार्थ

इच्छामि—म इच्छा करता हूँ खमाममणो—हे क्षमाश्रम (क्षमाको धारण करनेवाले मुनिराज), हे तपस्वा महाराज
 वदिउ—वदन करनेके लिये जावणिज्जाए—शक्ति अनुसार
 निसीहिआए—पाप यापाराका त्याग कर मत्थएण—शिर
 शिर झुकाकर वदामि—(सरारसे भा) वदन करता हूँ ।

सूत्रार्थ

इच्छामि खमाममणो वदिउ—हे क्षमाश्रमण तपस्वा मुनिराज ! म आपको वन्दना करना चाहता हूँ ।
 जावणिज्जाए निसीहिआए—मेरा शक्तिके अनुसार (विधुराये बिना), पाप-व्यापारोंका त्याग कर
 मत्थएण वदामि—म शिर झुकाकर वदन करता हूँ ।

भावार्थ

इस घुटने से हो हाथ और शिर इन पाँच अंगोंसे भूमिके स्पर्श होनेवाले प्रणाम वदनक । खमासमण कहते हैं । इस सूत्रका दूसरा ।
 "पञ्चम प्रणिपात सूत्र" भी है ।

परिमत

- ★ देव, गुरु महाराज या ज्ञानका वदन करते समय शिर झुकाया जात यह नम्रता और विलय गुणोंका द्योतक है ।
- ★ अन्न वायुजल देशाग्नि सलाय वदनका रिवाज है व आम्रवृक्षमें ।
 झोड़कर स्पर्श प्रगट करनेकी पद्धति है वैसे शास्त्रीय पद्धति पर

प्रणिपात की है। उसमें भी इन गार्होक्षिक उच्चारणों के साथ घटन करना चाहिए—यह हम इस सूत्रमें ही जान सकते हैं।

★ ब्रह्म के सामने या शिष्ट समाज के सम्मुख बोलते समय बहुत बड़े आत्मीय व्यवहारों का पाने लगते हैं क्योंकि उनके सम्मुख वे बहुत ही अज्ञान हैं। इनका अज्ञान ही इन्हें धरपराता है। उसी प्रकार देव या गुरु को ब्रह्म करमवाचक कम घटनक समय दर्पिते लगते हैं। अतः एव घटनसे घोर कर्मों का नाश होता है इसमें आश्चर्य ही नहीं।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—प्रणामसमय सूत्रका दूसरा नाम क्या है ? उसका उपयोग बताइये।

उत्तर —इसका दूसरा नाम “प्रणिपात सूत्र” है। इस सूत्रसे देव गुरु को प्रणाम किया जाता है। स्वयं दोषोंसे परिपूर्ण होनेपर ऐसे गुणोंके आगर मिल जानेसे हृदय विनम्र हो जाता है, तब तो शरीरका श्रेष्ठ अंग—सिर स्वयं झुक पड़ता है। गुणोंको प्रणाम करनेसे अपना अज्ञानता अपना नजरमें आता है और पूज्योंका विशेष गुणसम्पन्नता भा स्पष्ट हो जाती है। ऐसे गुण अपनेमें कब आयेंगे—यह आकाशा भी पैदा होता है।

प्रश्न २—प्रणाम कैसे होता है ? उसका नाम क्या है ?

उत्तर —दोनों घुटनाको जमीनपर टेकाकर, दोनों हाथ जोड़, भूमिके स्पर्शपूर्वक सिर झुकाकर जो प्रणाम किया जाता है, उसे “पञ्चांग प्रणिपात” कहते हैं। इस प्रकार

नमस्कार करनेके पहले “निमीहि” शब्द कहकर घर या मन्तारके सब पाप व्यापारोंका त्याग दिया जाता है। अन्य प्रवृत्तियोंको भूल जानेसे ही प्रणाममें भावशुद्धि आ सकती है। इसी कारणसे मंदिरमें या उपाश्रयमें (देव या गुरुके पास) जाते समय ‘निमीहि’ बहनेका प्रणाला और विधि है। यहाँ व्यापार मात्र प्रवृत्तियाँ।

प्रश्न ३—क्या नमन और वदनमें कुछ फर है ?

उत्तर —“नमो अरिहन्ताय”से होनेवाला नमस्कार मनसे भा हो सकता है। इस लिये नवकाखालीमें यह नमस्कार गिना जाता है। भावपूवक हादिक नमस्कार ही इसमें मुख्य है। इसमें गरारसे मिर झुकाकर श्री अरिहन्त भववन्तोंका प्रणाम करेका नहीं होता, पर केवल भाव नमस्कारमें ही सतोष मानना पड़ता है। समासमणमें तो शरार झुकाना ही पड़ता है—शरीर या मस्तक झुकाये बिना “समासमण” सूत्र कहा ही नहीं जाता। इतना नमन और वदनमें अन्तर घटाया जा सकता है। तत्त्वतः तो दोनों त्रियाओंसे कर्मके लयका ध्येय ही सिद्ध होनेवाला है।

४ इच्छकार सूत्र (सुगुस्की सुखशातापृच्छा)

अन्वयार्थ

इच्छकार—मैं चाहता हूँ सुहराई—सुखमें रात (या सुहृदेवसि सुखमें दिन) सुखतप—सुखपूर्वक तपस्या शरीर निराबाध—
व्याधिरहित शरीर सुखसज्जमाना—सयमरूपी यात्रामें सुख
निर्वहो छोड़ी—(सत्र सुखही) प्रवृत्त है न ? स्वामी—हे पूज्य !
शाता छोड़ी—सुखशाता है न ? भातपाणीनो—आहारपानी
लाभ देजोड़ी—ग्रहण करनेके लिये पधारकर मेरा घर आगमन पवित्र
काजियेगा ।

सूत्रार्थ

इच्छकार सुहराई (सुहृदेवसि)—अजी गुरुमहाराज ! मैं
जानना चाहता हूँ कि आपने सुखपूर्वक रात बिताई ? (आपको
दिनमें सुखशाता रहा होगा। रात्रीकी सुखशाता प्रातःकालमें
और दिवसका सुखशाता दोपहरीके बाद पूर्ण जाता है।
अतः ये दो शब्द साथ साथ नहीं बोले जाते ।)

सुखतप शरीर निराबाध—तपश्चया निर्विघ्नतासे हुई न ?
शरीर रोगरहित है न ?

सुखसज्जमाना निर्वहो छोड़ी ?—सयमरूपी यात्रामें सर्वत्र
सुख है न ?

स्वामी शाता छोड़ी ?—हे पूज्य ! आप कुशल हैं न ?
(माने कोई अशाता तो नहीं है न ? अशान्ति या पीडाका

कोई कारण हो तो उसे दूर करनेका भ प्रयत्न करें, जिससे मुझे सेवाभक्तिका लाभ मिले—ऐसा भरी नावना है ।)

भातपाणीनो लाभ देजोजी—आहार पानी आदि जिस किया भा वस्तुका आवश्यकता हा, तो गौचरी-ग्रहण करनेके लिये पधारकर मुझे कृताध करें ।

भावाय

गुरुवदनके समय इस सूत्रमें गुरु महाराजकी गुणगाता पूछी जाती है । दिनमें प्रातः काल दोपहरी और शामको ऐसे तीन बार उद्धारक गुरु महाराजकी वदन कर गाता पूछनी चाहिये । रातमें तीन बार वदन करना गृहस्थक लिये अनिवार्य होना गायकी वक्षतिक प्रतिक्रमणके बार गुरु महाराजकी त्रिपाल वदना बहुर शायक घर जाता है ।

परिमल

- ★ गुरुवदनकी विधि यह बतानी है कि गुरुमहाराज भुक्तते कितन विनिष्ट गुणगणमयित है ? उनका उदास्त गुणांक क्यातस्थवप उनका प्रगटतया बहुमान इस सूत्रसे दिया जाता है एवं विनयसे उन गुणाका आरुपण होता है ।
- ★ श्री बितरागी भगव तोंकी आज्ञाका पूणतया पालन ता समय गुरुमहाराजही कर सकते है । उनकी सुल्लभामें हम ता बिनाज्ञाकर भगव भी पालन नहीं कर सकते । इसी लिय अपन लिय गुरुमहाराज पूजनीय है ।
- ★ जस बिना निम्न पाठशाला नहीं चल सकती वस ही प्रतिप्राम विहार करनेवाले गुरु महाराजोंके बिना धर्मका पथ भी नहीं चल सकता । गुरु महाराजोंके सिवा भग्य आमाजीरो सुधमका उप दंग कौन द सकता है ? भोगी विनासोक उपदेगका प्रभाव भी नहीं पड़ सकता । गुरु महाराज वचन-बामिनीके स्थायी होनेसे उनके उपदेगका गहरा प्रभाव पड़ सकता है ।

गुरु महाराजाने आभरण असत्य न बोलनेकी प्रतिज्ञा ली ह, इसी लिये उनके यवनपर विश्वास रखा जाता ॥ वे हमें जो उपदेश देते ह, वह सब धीवीतरागी केवलज्ञानी भगवतोंकी आज्ञानुसार ही ह। वे अपने मनके अनुकूल बना बनाया कुछ भी नहीं कह सकते।

जैसे आप्त मित्र मिलनेपर 'बर्षा, घरमें सब कुशल आनन्दम ह न?' इस प्रकार कुशल समाचार पूछते ह, उसी प्रकार हरेक आराधकका चाहिय कि वह दिनमें तीन बार गुरु महाराजसे 'कुशलता पूछ। कारण यह ह कि आप्यात्मिक दृष्टिसे वे ही अपने तारक सच्चे आप्त ह और उन्होंने परसत्कारका त्याग किया ह इस लिये हम ही उनके सच्चे सबधी ह—भगवन्मणवे तारक सैवकका यह ज्ञाता ह। अतः गाता पूछना हमारा कर्तव्य ह। जिस प्रकार गारीरिक व्याधियोंको बघ या डाक्टर दूर करते ह और मले कपड़ोंका मल धोधी निकाल देता ॥ उसी प्रकार गुरु महाराज हमारी आत्माक दुषणों और विकारोंको दूर कर हमें गढ़ बनाते हैं।

जैसे विमान नियतस्थानपर के खानके लिये पायलाट रहते हैं, वैसे धर्ममागमें हमारे कणधार गुरु महाराज ह। पायलाट सुशिक्षित होते ह, तो पूर्य गुरु महाराज भी जिनाशाके सत्त ह। अग्निभित्त—अनभिज्ञ पायलाट विमान चलानेवाला तो मुकसान पहुँचाएगा वैसेही धारिध्यादिगणविहीन या अज्ञानी गुरु भी धर्मके कणधार होंगे तो अवश्य ही हानि हासी।

जैसे विमान चलानेवाला पायलाट वाबिन्न होनेपर प्रवास निश्चित तासे होता ह, वैसेही दष्टिरागपोषक नहीं किन्तु समाग यतान घाले सुगदका सुमोग हो जानेपर अपना भगवन्मण भितता ह और हमें मुक्ति मिल सकती ह।

जिस प्रकार विमानमें हड़ोअन वायु नरी जाती ह उस प्रकार धर्मात्माओंमें उक्त भावनास्वा वायु गुरु महाराज भरत हैं। इससे नमोपाय हो सकता ह।

- ★ जैसे कृपाके समुद्राल जानसे उसका पुराभा भवका माता बदलकर नया समुद्रानका माता शुरू हो जाता है वैसेही समर्पित प्राप्त होनेके बाद दुनियाका एहिक सबष बदलकर देव, गुरु और धर्मका नया संबंध शुरू होता है । इससे देव धीरे धर्मका सबष करानेवाके गुरु महाराजके प्रति हमहू बढ़ता है ।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—इच्छार सूत्रका उपयोग बताइये ।

उत्तर —गुरुमहाराजोंका सुगशाता पूछनेके समय यह सूत्र कहा जाता है । अशातावेदनाय कमरा उदय हुआ हो अथवा रात, दिन या तपश्चर्यामें समयकी साधना करते समय कोई बाधा आई हो, तो उसे यथाशक्ति दूर करनेकी भावनासे सेवाभक्तिके लिये इस सूत्रसे पूछा जाता है । अन्तमें सुपात्र धार्मी उत्कृष्ट भावनासे आहार पाना ग्रहण करनेके लिये पधारनेके विनता की जाता है ।

प्रश्न २—क्या यह विनता मात्र आहार पानीके लिये ही है ?

उत्तर —आहार-पाना' कहनेसे वस्त्र, पान, औषध, स्थान आदि आवश्यक वस्तुओंका भी अभिनिवेश कर लेना चाहिये ।

प्रश्न ३—देवसि और राह शब्द क्या बताते हैं ? उनका अवधि कितना है ?

उत्तर —देवसि माने दिनसबधा । दीपहराके बारह बजेसे रातके बारह बजेतक दिन कहा जाता है । राह यानी

रात्रिसंभवा । रातके बारह बजेसे दोपहरीके बारह बजेतक रात कही जाती है ।

प्रश्न ४—शांता क्यों पूछना चाहिये ?

उत्तर —अशांता हो तो उसका निवारण करनेकी सेवा भक्तिवाला काम मिल सकता है और सुखशांता हो तो कुशल मंगल जानकर आनन्द होता है । यह सेवा भक्तिका एक प्रकार है । गुरुभक्ति भी मुक्तिका आकर्षण करती है ।

५ श्री इरियावहिय (प्रापदिचत्त) सूत्र

अवयवार्थ

इच्छाकारेण—आपका इच्छानुसार सदिसह—आशा वाजिये भगवन् ! —हे पूज्य ! इरियावहिय—भागमें आने-जानेसे लगे हुए पापोंसे पडिक्कम्ममि—मैं प्रतिक्रमण करूँ ? माने उन पापोंसे मैं दूर हो जाऊँ ? इच्छ—आपका आशा प्रमाण है इच्छामि— मैं चाहता हूँ पडिक्कम्मिउ—प्रतिक्रमण करनेके लिये इरियावहियाए—रास्तेपर चलनेसे हुई विराहणाए—विराघनासे गमणागमणे—जाने—आनेसे पाणक्कम्मणे—कोई प्राणा या जाव पैरसे या अन्यथा दबनेसे बीअक्कम्मणे—बाजोंको पैरसे रगेदनेसे हरियक्कम्मणे—हरी वनस्पति कुचला जानेसे ओसा—ओस उत्तिग—चींटियोंकी बाँवा, रहनेके स्थान पणग—सेवार, लील, काई दग्ग—कच्चा

पाना मट्टी-मिट्टी मक्कड़ा-और मकड़ाके सताणा-जालोंको
 सकमण्णे-पाँवमे दबाने या कुचलनेसे जे-जिन मे-मने जीवा
 -जावोंका विराहिया-विराधना का हो एगिदिया-एक
 इन्द्रियवाले वेददिया-दो इन्द्रियवाले तेददिया-तान इन्द्रियवाले
 चउरिदिया-चार इन्द्रियवाले पाँचदिया-और पाँच इन्द्रियवाले
 जावोंको अभिहया-पाँवरी घाट लगा हो वसिया-पाँवसे
 उठता मिट्टीसे दबाये गये हो लेसिया-जमानके साथ रगेदे गये
 हो सघाइया-इकट्ठे किये गये हो सघट्टिया-स्पर्श किये गये हो
 परियाविया-परिताप या कष्ट पहुँचाया हो किलामिया-धकाये
 हो उद्विया-भयभात या हैरान किये हो ठाणाओ ठाण-
 एक जगहसे दूसरा जगह सकामिया-हटाये गये हो जीवियाओ
 -जानसे बवरोविया-छडाये हो, तमाम किये गये हो तस्स-
 यह मिच्छा-मिप्पा होवे मि-मेरा दुष्कद-पाप या दुष्कृत

सूत्राय

इच्छावारेण सदिसह भगवन्! — हे पूज्य ! आपका इच्छाके
 अनुसार आशा दाजिये । (ऐसा गुम्फद्वाराजसे शिष्य
 पूछता है ।)

इरियावहिथ पडिक्कमामि ? भागमें आन-जानेसे जो कुछ
 पाप लगा हो उससे मैं निवृत्त होऊँ ? (इसके उत्तरमें गुरु
 महाराज पडिक्कमेह " कहते हैं ।)

इच्छ—आपका आशा शिरसा मान्य है ।

इच्छामि पडिक्कमिउ—मैं पापसे निवृत्त होना चाहता हूँ ।

इरियावहियाए विराहणाए—जाने-आनेके समय मागमें जो
बुछ भा विगधना हुई हो,

गमणागमणे—जाने आनेसे,

पाणवकमण बीअवकमणे हरियवकमणे—फिरी जीवको
पाँवसे या अन्यथा दबानेसे, बाजोंको रगेदनेसे, हरी वनस्पति
दबानेसे,

ओसा-उत्तिग-पणग दग-मट्टी मवकडासताणासकमणे—ओस,
चींटियोंके बिल, पाँचों रगका काइ-छील, मचित्त पानी,
मिट्टी और मकड़ीके जालोंको पाँवसे रगेदनेसे या दब जानेसे
जो मे जीया विराहिया—जिन जीवोंका, दुख पहुँचाकर मैंने
विराघना की हो,

इण्दिद्या वेइदिद्या तेइदिद्या चउरिदिद्या पचिदिद्या—एक
इन्द्रियवाले (स्पर्शेन्द्रियवाले—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु,
वनस्पति), दो इन्द्रियवाले (स्पर्श और रसनेन्द्रियवाले—शख,
कौड़ी, जोंक, खपरे, तीसी, कौड़े आदि), तीन इन्द्रियवाले
(स्पर्श, रसना और घ्राणेन्द्रियवाले—खटमल, चींटियाँ, चिऊँटे
वगैरह), चार इन्द्रियवाले (स्पर्श, रसना, घ्राण और
चक्षुरिन्द्रियवाले—बिच्छू, भंरि, मक्खन, डॉस, मच्छर, जुगनू
आदि), पाँच इन्द्रियवाले (स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु और
श्रोत्रेन्द्रियवाले नार्वी, तिर्यँच, मनुष्य और देव) इन सब
एकेन्द्रियसे पचेन्द्रियतकके जावोंको

अभिहया वत्तिया लेसिया—सम्पूरा आते हुओंको घोट
पहुँचाइ दो, पाँवसे उठनेवाला मिटासे दबाये हो, जमानके
साथ रगेदे हो,

सघाइया सघट्टिया—एक दूसरेको ठिक्क किये हो या सर्भीको
हकडे किये हो, थोड़े-बहुत स्पष्टसे पाडा पहुँचाइ हो

परियाधिया किलामिया उहविया—परिताप या कष्ट पहुँचाया
हो, थकाकर निश्चेष्ट बना दिये हो, भयभीत या हैरान-
परेशान किये हो,

ठाणाओ ठाण सकामिया—एक स्थानसे दूसरे स्थान हटाये
या रकरा गये हो,

जीवियाओ धवरोविया—जावितसे नष्ट कर दिये हो अथात्
मुझसे मारे गये हो

तस्त मिच्छा मि दुवकड—इन दुःकृत्योंसे लगे हुए मेरे पाप
मिथ्या होवें—मेरे उन पापोंका नाश होवे ।

भाषाथ

शुक्ति आरम्भगुट्टि करनवाले आराधकको सब प्रथम स्वयं किये हुए
पापोंसे निवृत्त होना नितात आवश्यक है, इस सूत्रमें लगे हुए पापोंकी
समा याचना है—उन पापोंका मिथ्या-दुःकृत कहा गया है । विशेषमें
किस किस प्रकारसे किन किन जीवोंकी विराधना होती है इसका
इस सूत्रमें स्पष्टतया ध्यान किया गया है । पापसे लिप्त आरम्भ
इरियावहिय सूत्र 'से विनाश की जाती है ।

परिमल

★ जन ज्ञानकी वया—अहिंसा कितनी गहरे रहस्यसे भरी हुई है—
यह इरियावहिय सूत्रसे ज्ञान सक्ते हैं । परम जीवोंको हम किन

विन प्रकारोंसे कष्ट पहुँचाते ह और वसी सूक्ष्म हिंसासे भी कैसे कैसे पाप बचन हो जाते ह, यह भी इस सूत्रसे हम जान सकते ह। फिर उन पापोंसे छटकारा भी सो सूत्रसे पा सकते ह।

★ “हिंसा केवल पंचेन्द्रिय जीवोंकी हाँ हो सकती ह” ऐसा मानने वालोंको यह सूत्र आश्चर्यजनक साध बहसा ह कि पंचेन्द्रियोंके सिवा एकन्द्रियसे चतुरिन्द्रियतकके जीवोंकी बहुत ही बड़ी दुनिया ह। वे जाव भी हिंसाके योग्य नहीं ह। जीवसंघट्टि एकन्द्रियसे पंचेन्द्रिय तक ह, यह भी इस सूत्रसे सिद्ध होता ह।

★ चूँकि अथ किसी भी दंगनकारन एकन्द्रियसे पंचेन्द्रियतकके जीवोंकी इनकी सूक्ष्म अहिंसाका निरूपण नहीं किया ह, जनसिद्धांत सबस प्रगल्भत कथित ह यह निर्दिष्ट सिद्ध होता ह।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—‘इरियावाहिय सूत्र’ क्यों बोला जाता है ? उसका दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर —आते जाते, जमीनपर चलते फिरते, शात या अशात अस्थानमें हमने जो कुछ भी अपराध-याप किये हों, उनका क्षमा माँगनेके लिये सामयिकके शुरूमें यह सूत्र कहा जाता है। इसे ‘प्रायश्चित्त सूत्र’ भी कहते हैं। यह सूत्र कहते-कहते बालमुनिश्री आहमुत्ताजीको पापका प्रायश्चित्त करनेका परमशुद्ध भावनापूर्वक आलोचना करते समय बेवल्ज्ञान प्राप्त हुआ था। जाँव विराधनासे मलिन हुई आत्माको पवित्र करनेके लिये यह एक महान् सूत्र है।

प्रश्न २—“तस्स मिच्छा मि दुक्कह” का अर्थ समझाइये।

उत्तर —मेरा वह पाप नष्ट होवे माने मैं उस पापकी क्षमा माँगता हूँ, यह उसका सरल अर्थ है ।

प्रश्न ३—हरिक्रियामें प्रथम 'हरियावहिय' सूत्र क्यों बोला जाता है ?

उत्तर —रोगाको पौष्टिक औषधि देनेके पहले वैद्य उसे विरेचक औषध देता है, उसी प्रकार आत्मशुद्धि चाहनेवालोंके लिये हरिक्रियामें प्रथम 'हरियावहिय' सूत्र शुरू करनेके पहले पूर्वार्जित पापोंका माजन करनेके लिये 'हरियावहिय' सूत्र कहनेका विधान है ।

६ श्री तस्म उत्तरी सूत्र

अव्याप्य

तस्म—उसका उत्तरी—फिरसे शुद्धि करणेण—करने लिये पायच्छित्त—प्रायश्चित्त करणेण—करनेके लिये विसोही विशेष शुद्धि करणेण—करनेके लिये विसल्ली—आत्मशुद्धि शतयत्नहित करणेण—करनेके लिये पायण—पाप क्षमाण—कमाका निग्रायणट्ठाए—निघात माने संपूणतया नाश करने लिये ठामि—स्थिर होता हूँ धाउस्सग्ग—कायोत्सग्ग ध्यान

सूत्राय

तस्म उत्तरी करणेण—उन लगे हुए पापोंका फिरसे शुद्ध करनेके लिये ('हरियावहिय सूत्र' से शुद्ध हुई आत्मका विशेष शुद्धिके लिये),

पापच्छिन्नकरणेण—प्रायश्चित्त करनेके लिये,
 विसोहीकरणेण—आत्माको विशेष शुद्धिके लिये,
 विसल्लीकरणेण—आत्माको मायाशक्त्य, नियाणशक्त्य और
 मिथ्यात्वशक्त्य—इन तीन शक्तियोंसे रहित करनेके लिये,
 पापाण कम्माण—पाप कर्मोंका
 निग्घायणट्ठ।ए—सपूर्णतया नाश करनेके लिये
 ठामि काउत्सग—मैं काउत्सगमें रहता हूँ । (मैं कापोत्सग
 करता हूँ ।)

भावार्थ

पापोंसे उद्भिन्न आत्मा इरियावहिय से विभिन्न होती है, फिर भी
 जो कुछ अपवित्रता रही हो उसे विशेषरूपसे—दुबारा शब्द करनका
 इस सूत्रमें कहा गया है । हर समय आत्मा कर्मबधन करती है, बीच
 भी अनेक हुआ करते ॥ उन पापोंका प्रायश्चित्त करना जरूरी है
 ऐसा शास्त्रोंमें विधान है ।

परिमल

★ इस सूत्रमें आत्माको शुद्ध करनेका जो उपाय बताया है वे बहुत
 ही महत्त्वपूर्ण हैं । जैसे कि—(१) पापोंका प्रायश्चित्त करना
 चाहिए । (२) पापसे आत्मा अशुद्ध रहती है उसे निमल बनानकी
 जरूरत है । (३) जबतक शक्त्य रहते हैं तबतक धार्मिक क्रियाएँ
 बहुधा निष्फल हो जाती हैं इस लिये तानों शक्तियोंको पहचानकर
 उन्हें दूर करनेका प्रयत्न करना चाहिए । (४) पापनिर्घात कर्म
 सिद्धान्तकी प्रमाणित करता है । (५) कर्मका नाश होनेसे आत्मा
 निज सुखको प्राप्ति कर सकती है ।

★ काउत्सगसे आत्मशुद्धि हो सकती है अतः यह विस लिये करना
 चाहिए इसका विधान इस सूत्रमें किया गया है ।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—‘तस्स उत्तरी’ सूत्र किस लिये बोला जाता है ?
शल्य कौन कौनसे है ?

उत्तर —हरियाबही करनेपर भी जो कुछ पाप अवशिष्ट रह गया हो, उसकी विशेष शुद्धि करनेके लिये एष आत्माको विशेष निर्मल बनानेके लिये यह सूत्र कहा जाता है। माया, निपाण और मिथ्यात्व ये तीन शल्य हैं।

प्रश्न २—शल्य माने क्या ? यह क्या करता है ?

उत्तर —जैसे पाँचमें काँटा लगनेपर वह चुभता है और पेटमें शूल होनेपर दर्द होता है वैसे आत्मामें भी पापरूपी शल्य हैं। इन तान शल्योंमेंसे एक भी शल्य हो तो वह हमें चुभते रहता है—हैरान परेशान करता है, इस लिये जबतक शल्य हैं तबतक आत्मशुद्धि असम्भव है। अत एव आत्माको शल्यरहित बनानेकी इस सूत्रमें सूचना दी गई है। शल्योंका नाश हो जानेसे सरलता या निष्कपटीपन नामक गुण प्रगट होता है।

प्रश्न ३—माया, निपाण और मिथ्यात्व इन तानों शल्योंके अथ समझाइये।

उत्तर —(१) मायाशल्य—सरलताको छोड़कर पाप छिपानेके लिये कपट या छल प्रपंच करना (२) निपाणशल्य—(निपाण) मोक्ष देवाली धमक्रियाओंके बदलेमें मोक्ष नहीं किन्तु ऐहिक सुखोंकी याचना करना।

(३) मिथ्यात्वशाल्य कुदेव, कुगुरु और कुधर्ममें विश्वास रखना (केवल ज्ञाना न हों वे कुदेव, पंचमहाव्रतधारी न हों वे कुगुरु और विषय कषायोंको बढ़ानेवाला व जीवदयाविहान कुधर्म)---यह इन तानों शब्दोंकी संक्षिप्त व्याख्या है।

७ श्री अन्नत्य सूत्र

अध्याय

अन्नत्य--(इतने आगारों-अपवादोंके सिवा) अन्यत्र, दूसरे स्थानपर कससिएण-उच्छ्वास लेनेसे नीससिएण-निश्वास छोड़नेसे खासिएण-खाँसी आनेसे छीएण-छींक आनेसे जभाइएण-जँभाइ आनेसे उड्डुएण-डकार आनेसे घायनि-सर्गण-अपानवायु छूटनेसे भमलोए-सिर धूमनेसे पित्तमुच्छ्राए-पित्त विकारके कारण बेहोशी आ जानेसे सुहूमेहि-सूक्ष्म मानसे-अगसचालेहि-शरीर हिल जानेसे खेलसचालेहि-धूँक या कफ निगल जानेसे दिट्ठिसचालेहि-दृष्टि हिलनेसे एवमाइएहि-इत्यादि, ऊपर बतलाये हुए वगैरह आगारोहि-आगारोंसे, नियत अपवादोंमें (जो काउस्सग्गमें मेरा शरीर हिल जाय तो) अभग्गो-अभग्ग, अखडित, सपूण अविराहिओ-विराधनारहित, सम्पक् आराधनापूर्वकका हुज्ज-होवे मे-मेरा काउस्सग्गो-कायोत्सग ध्यान (ध्यानपूर्वक कायाका-शरीरका उत्सर्ग त्याग माने

काउस्सग) जाय-जबतक अरिहताण-आरहत भगवताण-
भगवन्तांको नमुक्कारेण-नमस्कार कर न पारेमि-न पाँके
ताय-तबतक पाय-शरीरको ठाणेण-एक ही स्थानमें स्थिर कर
मोणेण-मीन धारण कर ज्ञाणेण-ध्यानमें रहकर अप्पाण-मेरे
(शरीरको) चोसिरामि-बिलकुल अलग करता हूँ (मनको समस्त
प्रवृत्तियोंसे रोककर शरीरका त्याग करता हूँ ।)

सूत्रार्थ

अन्नस्य ऊससिएण नीससिएण--इन (आगारों) के सिवा
अन्यत्र (दूसरी कोई भी प्रवृत्ति क्रिया होनेसे काउस्सग
ध्यानका भग होता है ।) (१) उच्छ्वास लेनेसे (२) निश्वास
छोड़नेसे (काउस्सगके समय मेरा शरीर हिल जाय तो भी)
खासिएण छीएण जभाइएण--(३) खोंसी आनेसे (४) छींक
आनेसे (५) जँभाइ आनेसे
उट्ठुएण घायनिसग्गेण--(६) डकार आनेसे, हिचकी आनेसे
(७) अपानवायु छूट आनेसे
भमलीए पित्तमुच्छाए--(८) सिर घूमनेसे (९) पित्तविकारके
कारण बेहोशी आ जानेसे या कै (उलटी) हो जानेसे
सुहूमेहि अगसचालेहि सुहूमेहि रालसचालेहि सुहूमेहि
दिट्ठिसचालेहि--(१०) सूक्ष्ममानसे [जैसे कि आँखकी
पलक] शरीर हिलनेसे (११) सूक्ष्ममानसे धूँक या कफ
निगल जानेसे (१२) सूक्ष्ममानसे दृष्टि हिलनेसे

एवमाइएहि आगारेहि—ऊपर बतलाए हुए इन १२ आगार-
अपवाद आदिको रखकर म काउस्सग करता हूँ । (आदि
शब्दसे सर्व, अग्नि जैसे उपद्रव समझ लेना चाहिये ।) इस
कारण

अभगो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सगो—(इनमेंसे कुछ
भा हो जाय तो भी) मेरा काउस्सग अखण्डित और
विराधनारहित अर्थात् शुद्ध, परिपूर्ण और आराधना युक्त
होवे ।

जाव अरिहताण भगवताण नमुक्कारेण न पारेमि—
जबतक मैं अरिहत भगवन्तोंको 'नमो अरिहन्ताण' कहकर
नमस्कार करके (काउस्सगको) पूर्ण न करूँ

ताव काय ठाणेण मोणेण ज्ञाणेण अप्पाण धोसिरामि—
तबतक शरीरको एक ही स्थानमें स्थिर कर, मौन धारण कर
(मुँहसे एक भा शब्द बोले बिना) और शुभ ध्यानपूर्वक
(विचाररून्य बैठकर नहीं) मेरा आत्माको (अर्थात्
काउस्सगको छोड़ अन्य चंचल वृत्तियोंको) बिल्कुल अलग
करता हूँ, माने हरक प्रकारका बाह्य प्रवृत्तियोंसे मेरा आत्माको
रोकता हूँ । या मन, वचन और काया इन तानोंकी चंचल
वृत्तिको छोड़कर म स्थिर हो जाता हूँ ।

भावाथ

इस सूत्रमें काउस्सग करते समय होनेवाली कुदरता हाजतोंके
(जिन्हें रोकना असम्भव है, ऐसी गौरीरिक्त प्रवृत्तियाँ) अपवादरूप

वर्णन किया गया है। ऐसे अवधारकों 'आगार' कहा जाता है। सर्व, अग्नि आदि अथवा चार आगारों के घागने कुछ मोलह आगार हो जाते हैं। जग मासिक की अनुमति से दो दिन अनुपस्थित रहने पर भी पणर धाल रहता है एवं कोई बाधा नहीं आता बस ही गलते ही आगारों की छूट मीग लेने से काउस्सग अभ्यन्त्र अमड रह सकता है।

परिमल

- ★ एकाग्रता के साथ आभाषा अपने स्वरूप में स्थिर करने का समय—यह हुआ काउस्सग का सीधा-भादा और सन्निप्त अर्थ।
- ★ मन ध्वन और बाधा इन तीनों का किया है मनुष्यों में हर एक गतिमान हो रहता है निद्रावस्था में भी इनका बाध जारी रहता है। उनको गुप्त ध्यान में लगाने की प्राथमिक शिक्षा—एसा काउस्सग का विधान है।
- ★ योगी धनने की काउस्सग रहना सीढ़ी है।
- ★ 'गरीरपर की ममता कितनी कम हुई है इसका परिमाण जाना (निश्चित) की काउस्सग मानव है। मालिक का आत्मा प्रिय उसका घर में प्रवेश नहीं है। सक्ता उसी प्रकार अरिहन्त भगवत् तों की नमस्कार कि बिना काउस्सग नहीं पारा जाता।
- ★ भगवान भी महावीर स्वयं जैसे साधक भगवत् भी छद्मभावस्था बहुत बीचका तत्क काउस्सग-मुक्त में रहते थे उनका अनुकरण हमें बार बार काउस्सग करने की आवश्यकता है। काउस्सग एक अभ्यन्त्र तप है।
- ★ उसे सिगल न दिया जाय तब तक रेखाद्वारा आग नहीं चलता य मकर रहे बसे ही यही भी जब तक 'नमो अरिहन्ताय' कहते अरिहन्त भगवत् की नमस्कार का उच्चारण नहीं होता तब तक काउस्सग ध्यान में रहना चाहिये एसा निश्चय किया जाता है।
- ★ 'गरीरपर की ममता कम घटाने के लिये 'गरीर' को स्थिर करने के लिये एसा ध्यान मन को बाध करने के लिये और एकाग्रता साथ ध्यान में रहकर आत्मा की सुखान्तवस्था में रही हुई शक्तियों सन्निवृत्त बनाने के लिये काउस्सग यह एक सर्वोत्तम साधन है।

- ★ 'द्योतिरामि' शब्दसे यह भाव निकलता है—'हे ब्रह्म !
 अपने दोष देख, स्थिर हो जा, दूसरोंकी पचाइत दूसरोंकी निंदा
 और दूसरोंके दोष निकालनकी वृत्ति—इनका सबथा त्याग कर ।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—अत्रत्य सूत्र किस लिये बोला जाता है ?

उत्तर —काउस्सग करते समय छोक, जँभाई, खाँसी, डकार
 आदि अपरिहार्य दोष शरीरसे हो जानेकी संभावना
 रहता है । उन्हें रोकना अशक्य होनेसे आगारोंमें—
 अपवादोंमें उनका निवेश किया गया है । यह सूत्र
 अनेक क्रियाओंमें जरूरी है । यदि यह आगार सूत्र न
 बोला जाय या यह सूत्र बोलनेका विधान ही न होता
 तो शारीरिक पूर्ण शक्ति बिनाके आजके मानवियोंका
 काउस्सग तो कभी भी संवधा शुद्ध हो ही नहीं सकता ।

प्रश्न २—काउस्सग माने क्या ? एक नवकारमंत्रके काउस्सगसे
 लाभ क्या ?

उत्तर —एक निश्चित समयतक शरीरपरकी ममताका त्याग
 कर आत्मध्यानमें स्थिर होना ही काउस्सग है । ६८
 अक्षरके नवकार महामंत्रको आठ सपदाएँ और नौ पद
 हैं । एक पद एक स्वासोच्छ्वास प्रमाणात्मक है । ९
 स्वासोच्छ्वास प्रमाण नवकारमंत्रका काउस्सग विदुद्ध
 भाव और रातिसे करनेवाला पुण्यात्मा १९,६२,०१७
 पत्न्योपम देवगतिके आयुष्यको प्राप्त करनेके लिए
 भाग्यशाली बनता है—इस प्रकार नवकार

काउस्सगका भावफल स्पष्ट कहा गया है ।
प्रकार बड़े-बड़े काउस्सगोंका फल अधिका
जाना लेना चाहिये ।

प्रश्न ३—काउस्सगमें दृष्टि वैसा होना चाहिये ?

उत्तर —काउस्सगमें दृष्टि नासिकाके अग्रभागपर अ
स्थापनाजा या प्रभुप्रतिमाजाक सम्मुख होना चाहि
हपर-उपर देखते रहनेसे काउस्सगध्यान शुद्ध नह
सकता । नववारके काउस्सगमें परमेष्ठा भगवन्त
स्मरण, चिन्ता और उर्द्धाका धरण लेना श्रेष्ठ है ।

प्रश्न ४—अत्रत्य सूत्रमें बताये हुए १२ आगारोंके उपरके
चार आगार कौनसे ह ?

उत्तर —(१) दीपकका प्रकाश पटोपर ओढ़नेसे लिये
लेना या अग्निके भयसे हट जाना (२) घुहा, बि
आदिका भीषमें आ जानेसे चलित होना (३)
या राजाके भयसे अस्वस्थ होना (४) सौंपके भ
या दिगल गिरनेसे आगे पाछे हपर-उपर होना
इस प्रकार सब मिलकर (१२ + ४ =) १६ आ
शयमें बताये ह ।

प्रश्न ५—काउस्सगमें त्याग करनेके १९ दोष ह, उन्हें लिख

उत्तर —काउस्सगमें त्याग करके १९ दोष निम्न प्रकार
(१) एक पाँव ऊँचा या टेढ़ा रखना (२) श
हिलाते रहना (३) खभा आदिका सहारा ले

(४) दिवाल आदिपर सिर रखकर सहारा लना
 (५) पैरोंके अँगूठे और एदियाँ सटाकर रखना
 (६) पाँव बहुत फैलाना (७) गुप्त अगोंपर बार-
 बार हाथ फेरना (८) घोड़ेकी लगामके समान हाथमें
 धरवला रखना (९) अति लज्जितका भाँति सिर
 झुकाना (१०) विधि-भयादासे अधिक ऊँचा या
 नाचा बल पहनना (११) मच्छर आदिके उपद्रवसे
 या शमके मारे दिलपर बल ओढना (१२) शीत
 आदिके कारण सारे बदनको बन्धसे ढँकना (१३) गिनती
 करनेके लिये अँगुलियों या पलक हिलाना अथवा
 नक्कारवाला गिनना (१४) कौएकी भाँति आँखोंका
 पुतलियोंको हिलाना (१५) कपड़े मैले हो जायेंगे
 इस डरसे तहोंमें रखकर उनकी रक्षा करना
 (१६) पागलकी नाहँ सिर हिलाना (१७) गूँगेकी
 तरह 'हूँ हूँ' जैसा उच्चार करना (१८) आलापक
 करते समय मदोन्मत्तकी तरह बक बक करना
 (१९) बंदरकी भाँति चंचल होकर इधर उधर देखना
 या होंठ फटफटाना ।

८ श्री लोगस्स (नामस्तव) सूत्र

अवयाय

लोगस्स—लोकमें, तागों लोकमें रहे हुए जीतोंमें उज्जोअगरे-
 उद्योत प्रकाश करनेवाले धम्म—धमरूपा तित्थयरे (सारण—करने
 वाला—ताथ) ताथवा स्थापन करनेवाले जिणें—भीतरपे राग और
 द्वेषरूपा शत्रुओंको जातनेवाले अरिहत्ते—४ पाता कमाका नाश
 करनेवाले अरिहत भगवन्तोंकी वित्तइस्स—स्तुति (कातन—स्तवन)
 करूंगा चउयोस पि—इस अवसरपिणामें इस भरतक्षेत्रम हुए २४
 तीथपतियोंका तथा (अपि स—दसे) परवत्तक्षेत्र और महाविदेह-
 क्षेत्रके ताथपतियोंका केवली—केवलज्ञाना भगवन्तोंकी (स्तुति
 करूंगा) उसभ—(१) ऋषभनाथ भगवानको अजिअ—(२) अजित
 नाथको च—और (सबत्र यहा अध है।) वदे—वदन करता है।
 (इसका सबध सभा पदोंके साथ है।) सभय—(३) सभरनाथको
 अभिणदण—(४) अभिदनस्वामाको सुमह—(५) सुमतिनाथको
 पउमप्पह—(६) पद्मप्रभ जिाको सुपास—(७) सुपास्यनाथको
 जिण—राग द्वेषको जातनेवाले केवली भगवन्तको (सबत्र यहा अध
 है।) च—दप्पह—(८) चन्द्रप्रभन्वामीको सुविहि—(९) सुविधि
 नाथको पुष्पदत्त—जो पुष्पदत्त भगवान नामस भा प्रसिद्ध है।
 सोअल—(१०) शीतलनाथको सिज्जस—(११) श्रयासनाथको
 वासुपुज्ज—(१२) वासुपूज्यस्वामाको विमल—(१३) विमल
 नाथको अणत—(१४) अनतनाथका धम्म—(१५) धमनाथको
 सति—(१६) शान्तिनाथको वदामि—म वदन करता है।

कथु-(१७) कुपुनाथको अर(१८) अरनाथको मल्लि-(१९)
मल्लिनाथको मणिसुख्य-(२०) मुनिसुखस्वामीको नमि-
(२१) नेमिनाथको रिट्ठनेमि-(२२) अरिष्टनेमि नेमिनाथजीको-
पास-(२३) श्रीपाञ्चनाथ भगवानको तह-तथा बद्धमाण-
(२४) श्रीवर्द्धमानस्वामीजीको (श्रीमहावीरस्वामा भगवानको)-
[मि नमस्कार करता हूँ ।] एव-इस प्रकार मए-मने अभियुआ-
स्तुति किये हुए विहुय-दूर किया है रयमला-(कम) रज
और (कर्म) मैलोंको जिन्होंने, ऐसे पहीण-सय किया है
जर-जरा, बुद्धायस्था, बुढापा और मरणा-मौतका जिन्होंने,
ऐसे चउवीस पि-(भरतक्षेत्रके) चौबीस और (अपि शब्दसे)
पेरयतक्षेत्र और महाविदेहक्षेत्रके भा जिगवरा-सामान्य केवाठियोंमें
श्रेष्ठ तित्थयरा-तार्थकर भगवन्त मे-मुझपर पसीयतु-प्रसन्न
होयें कित्तिय-देवेन्द्रोंद्वारा भा स्तवन (कीर्तन) बढिय-
बदन और महिया-पूजन किये हुए जे ए-जे इस लोगस्स-
लोकमें उत्तमा-उत्तम, श्रेष्ठ सिद्धा-सिद्ध हुए हैं, वे मुझे
आहण-आरोग्यके साथ बोहिलाभ-(बोधि माने समर्पित)
सम्यग् दशनका लाभ समाहि-समाधि, मनका स्वस्थता वर-श्रेष्ठ
उत्तम-उत्तम दितु-देवें चदेसु-चन्द्रोंसे भा निम्मलयरा-
विशेष निर्मल आइच्चेसु-नूरोंसे भा अहिय-अधिक पयासयरा-
प्रकाश करनेवाले सागरवर-बडेसे बडा जो स्वयम्भूरमण महासमुद्र
है, उसके समान या उससे भी अनन्तगुण अधिक गभीरा-गभीर
सिद्धा-सिद्ध भगवत सिद्धि-मोक्ष मम-मुझे दिस-तु-देवें

सुग्रायं

लोगस्य उज्जोअगरे—लोकमें—तीनों भुवनोंमें ७५।
करनेवाले

धम्मतिस्सयरे जिणे—धम्मरूपी तीर्थके (साधु, साध्वा
और आधिकाररूपा चतुर्विध श्रीसचके) स्थापक तथा
और द्वेष इन दो महाशत्रुओंको जीतनेवाले

अरहते षिस्सइस्स—अरिहत भगवत्तोंका स्तुति (कीर्तन)
चउयीस पि वेचली—(भरतक्षेत्रके) चौदास भगवन्तोंका
वैसे दूसरे भा के अलशाना भगवन्तोंका (स्तुति कहेंगा)

उसभमजिअ च वदे—श्रीरूपभदेव और श्रीअजितनाथ भ
में वदन करता हूँ ।

सभयमभिणदण च सुमइ च—श्रीसभवनाथ, श्रीअ
स्वामाजी और श्रीसुमतिनाथ भगवानको

पउमप्पह सुपास—आपप्रभजिन और
स्वामाजीको

जिण च चउप्पह वदे—और राग द्वेषको जीतनेवाले
तीर्थवर श्रीचन्द्रप्रभ जिनेश्वरको मैं वदन करता हूँ ।

सविहि च पुप्फदत्त—श्रीसुविधिनाथ, जिनका दूसरा
श्रीपुष्पदत्त प्रभु भा है, उनको

सीअलसिज्जसवासुपुज्ज च—आशातलनाथ, आश्रेय
और श्रीवासुपूज्यस्वामाको

वमलमणत च जिण—श्रीविमलनाथ, राजनतनाथ तथा
राग द्वेष आदि अत शत्रुओंको जीतनेवाले

इम सति च वदामि—श्रीधर्मनाथजीको और श्रीशान्तिनाथ
भगवानको मैं वदन करता हूँ । [३]

ह्यु अर च मल्लि—श्रीकुपनाथ, श्रीअरनाथ आर श्रीमल्लिनाथ
जिनेश्वर भगवन्तोंको

इदे भुणिसुखय नमिजिण च—श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजीको,
राग और द्वेषका नाश करनेवाले शानमिनाथजी प्रभुको

वदामि रिद्धनेमि—और श्रीनेमिनाथ प्रभुको (श्रीअरिष्ट
नेमिजीको) मैं वदन करता हूँ ।

पास तह वद्धमाण च—भगवान श्रीपाश्वनाथस्वामीजीको
और श्रीमहावारस्वामा (वधमानस्वामा) को (मैं वदन
करता हूँ ।) [४]

एव मए अभियुआ—इस प्रकार मेरे द्वारा स्तुति किये हुए

विहृयरयमला पहोणजरमरणा—जिन्होंने कर्मरुपा रज और
मलको दूर किया है, ऐसे और तिनके वृद्धावस्था और मरणके
दुःख नष्ट हो गये हैं, ऐसे

चउवीस पि जिणवरा—चौबीस जिनेश्वर भगवत (अपि शब्दसे
ऐखतक्षेत्र और महाविदेहक्षेत्रके भा)

तित्ययरा मे पसीयतु—तार्थकरदेव भुक्षपर प्रसन्न हों । [५]

कित्तिवदियमहिया—(देव और देवेन्द्रोंने भा) जिनका वा
स्तुति की है, मायासे वदन किया है और देव तथा म
समाजने जिनका पूजा भक्ति का है, ऐसे
ज ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा—ज इस लोकमें उत्तम श्रेष्ठ
हुए ह, ऐसे

आरम्भोहिलाभ—मुखे आरोग्यपूर्वक (शुद्ध देव, गुरु और
परका श्रद्धा स्वरूप) समकितका प्राप्ति और

समाहिंवरमुत्तम दितु—प्रधान और सर्वादृष्ट पेसी वि
स्थिरतायुक्त समतारूपा समाधि देवे या उनके प्रतापसे
समाधि मिले । [५]

चदेसु निम्मलयर—चन्द्रोंसे भी अधिक निमल

आइच्चसु अहिय पयासयर—अनेक सूर्योंसे भी अधिक (प्र
प्रकाश देनेवाले)

सागरवरगभीरा—स्वयभूतमण महासमुद्र जैसे गभार

सिद्धा सिद्धि मम दितु—सिद्ध भगवत मुखे मोक्ष दे
उनका इस स्तुतिरूपी आराधनावा फल—मोक्ष मुक्त
हो । [७]

भाषार्थ

इस सूत्रका दूसरा नाम 'नामास्तव' है । इस सूत्रमें ७ स
क्षयमें अवतारिणीमें हुए २८ तीर्थकर अवतारका नामपूर्वक स्तुति
गई है । इन चौबीस तीर्थकरोंमें १६ वं १७ वं और १८ वं —इन
तीर्थकरोंमें चन्द्रार्ति और तीर्थकर ॥ दाजों श्रद्धियां प्राप्त की
प्रतिष्ठावादि क्रियाओंमें अग्रिमतर २५ वामोच्छ्वासका लोगस्सका
रक्षण होना है इस लिये चदेसु निम्मलयर तक ही किया जात

क्योंकि तबतक लोगसमे २५ पद ही जान ह। इस सूत्रमें त्रिनेत्र भगवान्ने गुणोंका स्मरण कर उनका प्राप्ताएँ की गई ह।

परिभल

- ★ यदि उनका नामगुरुक गुणस्मरण हमें पवित्र बनाता ह काठ समगमें पाँच परमेष्ठी धामिद्वय या २४ तीर्थरोंका गुण बितन-स्मरण करनेका विधान है। इसी लिये काठसागमें 'मय हार' या 'तीगस्त' करनेका विधान ह महीं कि 'करोम भते' या 'उवतामहरं वा।
- ★ तीर्थर प्रभुओंके पाता जाकर क्या क्या माँगना चाहिये इसकी बोधी बहुत निरा लोगसमें भी हो गई ह। जैसे कि—मुझपर प्रसन्न होजिय धर्माशयनक लिय मुन मारोग्य होजिये समर्पित और समाधि प्रदान होजिय और मनमें मोक्ष भी जरूर होजिय।
- ★ जबतक मोक्षका प्राप्ति नहीं हुनी तबतक अनरुचिय दुर्लक्षि पर पुन इस संसारक प्रयासमें हमें समाधिकी भी जरूरत रहती ह धर्माशयन करनेके लिये मारोग्य भी आवश्यक ह यतो ही इन २४ उत्तम पुद्गलोंकी—बीतराणी भगवत्सोंकी स्तुति करना भी जरूरी है— इन सब बातोंको हम इस सूत्रसे जान सकते ह।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—छोगस्त सूत्रका दूसरा नाम क्या है? उसमें क्या क्या आता है?

उत्तर —छोगस्तका दूसरा नाम 'नामस्तय' है। इसमें श्री ऋषभदेवभुसे श्रीमहार्जीस्त्वामातकके २४ तीर्थर भगवत्सोंकी वंदन किया गया है। इसमें २४ तीर्थर देवोंके नामोंसे इसे 'नामस्तय' कहा जाता है।

प्रश्न २—एक छोगस्तका काठसाग पिने श्वासोच्छ्वास प्रमाणका होता है?

उत्तर —लोगस्सके २८ पद होनेसे पूर्ण लोगस्सका काउस्सग्ग २८ श्वासोच्छ्वास प्रमाण होता है (एक पद = एक श्वासोच्छ्वास) । किन्तु विशेष प्रसङ्गोंको छोड़कर सामान्यतः अधिकतर लोगस्सके काउस्सग्गका प्रमाण २५ श्वासोच्छ्वासका होनेसे 'घदेसु निम्मठपरा' तक हा बिधा जाता है ।

प्रश्न ३—पुप्पदत्त, अरिष्टनेमि और वर्धमान—ये किन किन प्रभुओंके नाम हैं ?

उत्तर —पुप्पदत्त श्रीसुविधिनाथजीका, अरिष्टनमि श्रानेमिनाथ प्रभुका व वर्धमान । श्रामहावारस्वामाका दूसरा नाम है ।

प्रश्न ४—नयकार आदिके स्मरण बिना काउस्सग्ग संपन्न हो सकता है या नहीं ?

उत्तर —मन बहुत हा धधल होनेसे किसी आलस्य बिना मान मूक और शून्य बैठे रहनेसे वह शुभ योग या ध्यानमें रहेगा ऐसा कहना अशक्य है, वह अशुभ चित्तन भा करेगा । अतः वैसा काउस्सग्ग कमबधनोंको काटनेमें समर्थ नहीं हो सकता । इसा लिये शुद्ध स्थान और श्रेष्ठ-उत्तम ध्यानपूर्वकके माँतको ही काउस्सग्ग कहा गया है ।

९ श्री करेमि भंते (सामायिक) सूत्र

अवधाय

करेमि—म करता हूँ भंते !—हे भगवान् ! सामादय—सामायिक सावज्ज—सावध, पापयुक्त जोग—यापाराका, क्रियाओंका पच्चक्खामि—त्याग करता हूँ जाव—तबतक नियम—नियमका पज्जुवासामि—पर्युपासन-सम्यक् पालन करता हूँ, तबतक वुविह—दो प्रकारसे तिविहेण—तीन योगोंद्वारा मणेण—मनसे धायाए—ध्यानसे काएण—और शरीरसे न करेमि—नहीं कहूँगा न कारवेमि—और दूसरोंद्वारा कराऊँगा भा नहीं तस्स—उन (पहलेके पापोंसे) भंते !—हे भगवन् ! पडिक्कमामि—म प्रतिक्रमण करता हूँ निवृत्त होता हूँ निदामि—(उन पापयोगोंका) मैं आत्मसाक्षासे निदा करता हूँ गरिहामि—गुरुमहाराजका साक्षीमें विशेष निन्दा करता हूँ अप्पाण—और पापसे युक्त मेरी आत्माको धोसिरामि—(पापोंमें) बिलकुल अलग करता हूँ

सूत्रार्थ

करेमि भंते ! सामादय—हे भगवान् ! क्रोध मान आदिसे मुक्त और समतान्त्ररूप सामायिक व्रत मैं करता हूँ ।

सावज्ज जोग पच्चक्खामि—सावध—पापयुक्त यापारोंका मैं प्रत्याख्यान करता हूँ, माने इस सामायिकमें मैं पापयुक्त प्रवृत्तियोंका आचरण नहीं कहूँगा ।

जाव नियम पज्जुवासामि—जबतक मैं नियमका पालन करता हूँ तबतक (दो षड्वाके इस सामायिकमें)

दुविह तिविहेण—दो प्रकारसे और तान योगोंद्वारा (विवरण निम्न प्रकार)

मणेण द्यायाए काएण—मनसे, वचनमे और कायासे (३ योग) न करेमि न कारवेमि—(पाप—प्यापारोंको) नहीं कहूँगा और दूसरोंसे कराऊँगा भा नहीं । (२ प्रकार) [मनसे कहूँगा नहीं, कराऊँगा नहीं, वचनसे कहूँगा नहीं, कराऊँगा नहीं और कायासे भा कहूँगा नहीं, कराऊँगा नहीं ।]

तत्स भत्ते । पडिक्कमामि—हे भगवन्त । इन तान पापोंसे और दो करणोंसे पहल जो पाप किये ह, उनसे (तत्स) मैं प्रतिक्रमण करता हूँ, उन पापोंसे मैं पाछे हटता हूँ ।

निवामि गरिहामि—आत्मसाक्षीस मैं उनका निदा करता हूँ और गुह्यमहाराजका साक्षामें विशेष निदा करता हूँ । (गुह्य महाराजके समक्ष पापोंका स्वाकार कर उन्हें न करनेका प्रतिज्ञा लेनेसे विशेषतया पापकमाका क्षय होता है ।)

अप्पाण धोसिरामि—और मेरा आत्माका पापसे मिलजुल अलग करता हूँ । (पापकर्माका वासनाओंके दयागपूजक समतारुपा सभाधिका आस्वाद मेरा आत्माको कराता हूँ ।)

भाषा

इस सूत्रका दूसरा नाम सामायिक सूत्र ॥ । सब सूत्रोंका सार समता होनेसे यह सूत्र द्वाग्धागीका सारभूत सूत्र माना जाना है । यह सूत्र सामायिक ऐक्य समय सामायिक स्थिर हानक लिय बोला जाता है । इस सूत्रमें अरुण अलग दृष्टिसे दुर्भास रहा आशुपक्षोंका अन्तर्भाव है । अन्न धर्मक वरणीय आचारोंको प्रणिपाद करनेवाला यह मुख्य सूत्र है ।

परिमल

- ★ देव सामायिक नहीं कर सकते तिम्रोको भी वह दुलभ है, केवल मनुष्यके आश्रय ही प्रधानतः सामायिक है। इसी लिये मनुष्य भाग्यशाली माना जाता है। ऐसा उत्तम सामायिक न करनेसे मनुष्य भाग्यशाली नष्ट होता है।
- ★ सावध प्रवृत्तियोंपर अस्वस्थ पापका वञ्चासाप समता और सुखितके लिये प्रधान—ये सब इस सूत्रके महत्त्वपूर्ण रहस्य हैं।
- ★ 'अहिंसा परमो धर्म' इस उक्तिका मूल पालन सामायिकमें ही हो सकता है। हिंसा न करना सो अहिंसा—यह उसकी सरल व्याख्या है। इससे भी अधिक बिगड़तासे कहा जाय तो प्राणी मात्रकी हिंसा न करनेकी प्रतिज्ञा लेना यही सच्ची, गूढ़ और सारगर्भित अहिंसा है। ऐसी प्रतिज्ञा लेना और उसका पालन करनेका यह सूत्र हमें सिखाता है।
- ★ दूसरेसे हिंसा करानेवाला या दूसरेको गूढ़ बोलनकी सलाह देने वाला भी अपराधी है और पापका भागी भी—यह कारयेमि 'का गूढाय' है।
- ★ करेमि भते अहिंसाका मूलमूल सूत्र है।
- ★ गुप्त महाराजके सम्मुख पापका वञ्चासाप करना यही मोक्षमार्गका सच्चा प्रमाण है।
- ★ मन ध्यान और काया—इन तीन स्वेच्छाविहारी और अशक्त घोड़ोंको यग करनेके लिये 'करेमि भते सूत्र' एक वशीकरण सूत्र (१ सूत्र २ लक्षण) ही है।
- ★ विचारगुण बनकर एक स्थानपर बैठे रहना ही सामायिक नहीं कहा जा सकता। कोय द्वय गव आदिपर नियंत्रण कर पापयुक्त क्रियाओंको रोककर, समस्त चराचर जीवोंके साथ समभाव रख कर 'करेमि भते' की प्रतिज्ञा स्वर और आधिपत्यधियोंको भूलकर किया जानवाला सामायिक ही था—उत्तम फल देनेवाला है।
- ★ त्रिये हुए गुप्त पापकर्मोंको अथक समक्ष प्रगट करनेमें अधिकतर लोगोंकी गति आती है। इस हिंसावश गुप्तमहाराजके सम्मुख

दोषोंको प्रगट करना अत्यंत ही कठिन कार्य है जिसे यह सूत्र सरल बना देता है।

★ अपने पापका पाप है ऐसा कहकर स्वीकार करनेवाला ही सच्चा साहसी है। सज्जाको छोड़ मुहम्मदराजके सम्मुख अपने पापोंका पश्चात्ताप करनेमें सरलता और उदारताकी बहुत ही जरूरत है। इस आवश्यकताको यह सूत्र पूरा करता है।

★ मन, वचन और कर्माचारी स्थिर कर समस्तयोगकी प्राप्तिके मार्गमें प्रयाण करना ही सामायिक है। ३२ श्लोकों में सूचित होनेपर ही सामायिक यथावत् कहा जा सकता है। सायक गृहस्थीके लिये तो, सामायिक यह एक अच्छा साधना ही है। सामायिकके अभ्याससे मनकी चञ्चल विसर्पितियाँ काबूमें आती रहती हैं जिससे साधकका साधना मार्ग सरल बनता जाता है।

★ जितने समयतक सामायिक किया जाय, उतने समयतक तत्कारका त्याग किया माने उतने अर्थोंमें त्याग वसिष्ठ पर अनुराग हुआ ऐसा भग्न कह सकते हैं। जैसे अपना गाँव छोड़ बिना दूसरे गाँव नहीं जा सकते वैसे ही रागवृत्ति छोड़ बिना धीतराग कैसे बन सकते हैं। राग दगा छोड़नेसे समता प्रगट होती है। इस रागरहित सामायिकमें धीतराग भगवानकी जाननका रम्य अवसर प्राप्त होता है। इस सामायिकसे तो अमेरिका आफ्रिका आदि विदेशोंमें भी बार बार नाम उठा सकते हैं।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—तान योग और दो करण क्यों ?

उत्तर—मन, वचन और कर्मा—इन तान योगोंमें स्वयं न करना और दूसरेसे न कराना—ये दो करण हैं। पूज्य मुनिराजाके लिये सामायिकके पञ्चवस्त्राणम तीन योग और (स्वयं न करना और दूसरेसे न कराना—इन

दो करणोंके साथ पापका अनुमोदन भी न करना ऐसे) तीन करण होते हैं। श्रावकवर्ग महाजनरमें दी हुई रक्मका सूद या कॉन्ट्राक्टसे तैयार होनेवाला अपना मकान आदिकी अनुमति पौषध या उपधानमें नहीं छोड़ सकता अर्थात् श्रावक साधककी अनुमतिका त्याग नहीं कर सकते। अत एव साधु महाराजोंके लिये त्रिविध—त्रिविध और श्रावकोंके लिये द्विविध—त्रिविध पञ्चक्राण होता है।

प्रश्न २—सामायिक उत्तम क्यों माना जाता है ?

उत्तर —सामायिकमें किसी भी पाप प्रवृत्तिका प्रवेश नहीं हो सकता, इसा लिये सामायिक उत्तम माना जाता है। रुपये जैसे राध किये बिना धर्म करनेवालोंको भी यह सामायिक धर्ममें स्थिर करता है, हम लिये भा सामायिक सर्वोत्तम है। स्वयं भगवान श्रीमहावीरदेवने तो अत्यंत निर्धन ऐसे पुणिया श्रावकके सामायिककी प्रशंसा की थी।

प्रश्न ३—‘करेमि भंते’ सूत्रमें महत्वपूर्ण उल्लेखनीय कौन-कौनसी बातें हैं ?

उत्तर —इस सूत्रमे नाचे लिखा हुई बातें विशेषरूपसे उल्लेखनीय हैं। (१) पाप व्यापारोंका प्रत्याख्यान करनेका विधान (२) दो घडी माने ४८ मिनटतक एक हा स्थानपर समतापूर्वक बैठनेका विधान (३) अपने स्वयंके

मुताबिक अन्य व्यक्तियोंसे भी पाप न करानेके पुण्यका समादन (४) पूर्ववृत्त अतीत कालके पाप-कर्मोंका क्षय करानेका उपाय—उन सावध कर्मोंकी निन्दा कर उनके लिये पश्चात्ताप करना (निन्दा कर पश्चात्ताप करनेका शिक्षा) (५) सामायिकका देन—धमध्यान व शुक्लध्यानकी श्रुति, समताका आस्वाद और आत्म-रमणके अभ्यासकी शिक्षा ।

प्रश्न ४—‘दुर्विह तिविहेण’ माने क्या ?

उत्तर—मन, वचन और कायासे पाप करूँगा नहीं और करूँगा भी नहीं ; अर्थात् मनसे पाप करूँगा नहीं व करूँगा नहीं, वचनसे पाप करूँगा नहीं व करूँगा नहीं और कायासे भी पाप करूँगा नहीं व करूँगा नहीं । इस प्रकार $२ \times ३ = ६$ प्रकारसे सावध प्रवृत्तियोंका निषेध किया गया है ।

१० सामाद्वयव्यजुत्तो सूत्र

अवयाय

सामाद्वय—सामायिक वय—व्रतसे जुत्तो—युक्त जाव—यावत्, जबतक मरण—मन होइ—होगा, रहेगा नियम—नियमसे सजुत्तो—सयुक्त, प्रतिशावद्ध ; तबतक छिन्नइ—छेदता है, क्षय करता है अशुह—अशुभ कर्म—कर्मोंको सामाद्वय—सामायिक जत्तिआ—

जितनी बारा-बार [१] सामाद्वयम्भि-सामायिक उ-ही
कए-किया जाय तबतक (हो) समणो-श्रमण, साधुमहाराजके
इव-जैसा, समान सावओ-श्रावक हवइ-होता है जम्हा-
जिस कारणसे एएण-इस कारणसे-कारणसे बहुसो-अनेकवार
सामाद्वय-सामायिक पुज्जा-श्रावकोंको करना चाहिये [२]

सूत्राय

सामाद्वयवयजुत्तो—सामायिक ऋतको धारण करनेवाला श्रावक
जाब मणे होइ नियमसजुत्तो-जबतक मनसे नियममे युक्त
(माने 'करोमि नसे' सूत्रकी प्रतिज्ञामें प्रतिबद्ध) हो तबतक
छिन्नइ असुह कम्म—स्वयं पहले किये हुए अशुभ कर्मोंको
काटता है, (अथात् सामायिक कर्मनाश करनेकी महान्
क्रिया है ।)

सामाद्वय जत्तिआ बारा—जितनी बार सामायिक करे
उतना बार । [१]

सामाद्वयम्भि उ कए—और सामायिक किया जाता है उतनी
बार हा (माने श्रावक सामायिक करे या करता रहे तभी,
अन्यथा नहीं ।)

समणो इव सावओ हवइ जम्हा—जिस कारणसे श्रावक
साधु जैसा बनता है, होता है । [जिसने (१२ या कुछ
कम) व्रतोंको ग्रहण किया हो, वहा श्रावक है; जैनकुलमें
जन्ममात्रसे हा नहीं ।]

एएण कारणेण—इस कारणसे

बहुसो सामायिक कुज्जा—ध्रावकोंको अनेक बार सामायिक करना चाहिये । [२]

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अवधि हुई हो, वह सब मन-वचन-कायाकरके मिच्छा मि दुपकडम् ।

१० मनके, १० वचनके, १२ कायाके एय ३२ दोषमेंसे जो क ई दोष लगा हो, वह सब मन-वचन-कायापरके मिच्छा मि दुपकडम् ।

भावाथ

यह सूत्र सामायिक पारत (पूण करते) समय बोला जाता है । इसमें ३२ दोषोंके त्यागके साथ बार बार विगुद्ध सामायिक करनेका कहा गया है । सामायिक करते समय धावक क्रमसे साधु असा बनता है—एसा वचन होनेसे ध्रावकोंको धावक—अवस्थामें भी सामायिकद्वारा साधु जीवन जीवनका सौभाग्य प्राप्त होता है । इस सूत्रका उच्चारण करते समय बाहिना हाथ आसन या चरबलेपर रखा जाता है जो सामायिककी प्रतिज्ञाका पूणतासूचक है । इस सूत्रकी शैलों गणाय १४ पूर्वधर श्रीभद्रबाहुस्याम्भोजी महाराज विरचित श्रीजावन्मनियक्ति की है ।

परिमल

- ★ सामायिकमन पूण होनेके समय हृषित न होना चाहिये क्योंकि जो समता और शांति सामायिकमें प्राप्त हुई थी वह बिना प्रतके सधाराण द्वय स्वाय व चितासे परिपूण और केशमय इस सत्तारमें कहाँ ? अत एव सामायिक पारतके समय पुन पुन—बार बार सामायिक करनेकी उत्कट अभिलाषा रखनी चाहिये एसा इस सूत्रमें भी बतलाया गया है ।

- ★ स्थापनाचायत्रीकी स्थापना करत समय गुणोंका आरोपण अभि निवेग करनेका हानस ऊपर (दान देते समय रखा जाता ह वसा) उल्ला (वाहिना) हाय रखकर नववार और पवित्रिय पडकर गुणोंकी स्थापना की जाती ह । सामायिक पूण होनक बाद दाहिना हाय नीचे (किसीके पास मंगित समय या किसीसे कुछ वस्तु हायमें लेते समय रखा जाता ह वसा) सीधा रखकर नववार पडकर स्थापित गुणोंको वापस लेकर स्थापनाचायत्रीका विसर्जन किया जाता ह ।
- ★ सामायिकका रहस्य समझनक बाद, सामायिक लेते समय मानव और पारते समय कुछ होनका विगदरपसे ध्यय रहना चाहिय ।
- ★ सामायिकमें श्रावक साधु महाराजकी तरह छहों जीविकापकी हिसासे दूर रह सकता ह । साधु महाराजका तरह साथ और हित कारक ही धोल्ना, गील्प्रतके स्याओंका रक्षण करना घोरी न करना अपन पास उपये पसे न रहना—एसी अनेक तुलनाएँ सामायिकव्रतमें हो सकनेक कारण सामायिक यह साधुधमकी एक धानगी हो मानी जाती ह । धन्यवाद हो ! सामायिकव्रतकी प्ररूपणा करनेवाले महापुरुषोंको !
- ★ जते भस छूटकी यांधी जाता है वसे ही सामायिकसे मन समतामें स्थिर रहता ह । माने अय अनेकविध चिंताओंसे दूर होनके कारण सामायिकमें चंचल मन भी श्रम प्रवसियोंमें स्थिर किया जा सकता ह । इसी लिये सामायिक करनेवाले दुण्यात्माके अंगुभ कम चक्काचूर क्यों न होंगे ?
- ★ इस ससारमें जिन जीवात्माओंके पास सामायिक जसा भोक्षप्राप्तिका साधन नहीं होता और जो अविरतिमें या अवसा अवस्थामें ध्यय ह, उनको मुक्ति नहीं मिल सकती—यह भाव ‘समणो इव सावओ’ मेंसे निकलता ह । यहाँ धावकके सामायिककी पांच महाव्रतपारो धमण साधु महाराजके साथ तुलना अपेक्षित है ।

- ★ पाँचों परमेष्ठियोंमें कोई भी बिना सामायिकके नहीं है। माने पूज्य साधु साध्वीभी महाराज भी इस सामायिकसे ही मुक्तिही प्राप्तिके लिय प्रयास करते हैं। बार बार सामायिक करने ही-से यही भाव कोंको जन (अंतरात्मक) साधु महाराजोंके साथ तुलना की गई है। आदर्श सामायिकके ममज्ञ प्रेमी हैं तब मुनिराज भी सामायिकक यथाप नमी है और ममज्ञ प्रेमी भी। इतनी ही यही तुलना समझनी चाहिये।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—सामायिक पारते समय यह सूत्र क्यों बोला जाता है ?

उत्तर —‘सामाङ्ग्यजुसो’ यह सूत्र बोलते समय दाहिना हाथ आसन या चरबलेपर रखा जाता है। स्थापनाका उत्थापन करते समय जो साधा हाथ रखा जाता है। यह स्थापित गुणोंको वापस ले लेनेका सूचक है, अर्थात् स्थापनाचायजाका विसर्जन विधिकी मानों सूचना ही है। इसी लिये सामायिक पारते समय यह सूत्र बोला जाता है।

प्रश्न २—सामायिकमें कौन कौन से दोष त्यागनेके हैं ?

उत्तर —सामायिकमें मनके १०, वचनके १० और कायाके १२ कुल ३२ दोष त्यागनेके हैं। सामायिक इन दोषोंसे रहित-विशुद्ध होना चाहिये।

प्रश्न ३—मनके १०, वचनके १० और कायाके १२ दोष बताइये।

उत्तर —(अ) मनके दस दोष—(१) शत्रुको देखकर द्वेष करना (२) अविषेकका चिन्तन करना (३) सूत्रोंके अथका मनन न करना (४) जामें घबड़ाहट रखना

(५) यश कीर्तिका अभिलाषा करना (६) विनयका त्याग करना (७) भयका चिन्तन करना (८) व्यापारका चिन्ता करना (९) फलप्राप्तिमें सदेह रखना (१०) फलकों इच्छासे धर्म करना (आ) वचनके वस दोष—(१) बुरे वचन बोलना (२) हुँकार तुकार करना (३) सावध पापयुक्त आदेश करना (४) बक-बक करना (५) कलह करना (६) 'आहिये, जाहिये' कहना (७) गालिया देना (८) बालकोंको खिलाना (९) बिकथा-व्यथकी बातें करना (१०) हँसी-भजाक करना (इ) कायाके बारह दोष—(१) बैठनेमें चबल होना (२) चारों ओर देखना (३) सावध पापयुक्त काम करना (४) अगडाना (५) अविनयसे बात करना (६) आड ले, महारा लेकर बैठना (७) शरारका मेल निकालना (८) खजली खजलाना (९) पैरपर पैर चढ़ाना (१०) अग खुले करना (११) अग ढाँकना (१२) सोना

प्रश्न ४ —क्या सामायिकसे हा मानवभवकी सफलता होता है?

उत्तर —हाँ, और कहा भा है कि—

सामाज्य पोसह सठिय, जीवस्स जाइ जो कालो
सो सफलो बोधव्वो, सेस ससार फल हेउ ॥

‘मानवियोंका सामायिक और दीवधमें जो समय व्यतीत होता है, उतना हा समय सफल मानना चाहिये । शेष

समय भव भ्रमण कगनेवाला हा है ।' इस प्रकार श्री
तोंथंकर भावतोंने सामायिकी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण
बतलाया है ।

११ श्री जगचितामणि (चैत्यवदन) सूत्र

अवयाय

इच्छाकारेण-इच्छानुसार सदिसह-आशा दीजिये भगवान् ।
-हे भावान् ! चैत्यवदन-जिनवदना करूँ-कहूँ ? (गुरुमहाराज
या कोई बड़े बूढ़े आशा देते ह-करो ।) इच्छ-जैसा
आपका आशा

जगचितामणि-विरवके प्रभु जावोंको शांति देनेवा
चितामणि रत्नसमान जगन्तरह-त्रिभुवनके स्वामी जगगुरु
समन्त विरवके गुरु (दितकारक उपदेश देकर सत्यभाग बतला
वाले) जगद्वक्षण-विरवका रक्षा करनेवाले जगदध्व-विर
छहों जगनेवायके वधु समान जगसद्वधाह-तीनों लोक
प्राणियोंके लिये माधवाह समान जगभावविशेष-विर
रहे हुए चराचर जावात्माओंके भाव जाननेमें विघण-अ
फुरल अट्ठावपसठविअश्व-जिनके रूप (माने विम्ब, प्र
माँ, मूर्तिपाँ) अष्टाषट् पवतपर स्थापित हुए ह,
कम्मट्ठविनासण-जिन्होंने आठों कर्माका नाश किया है,
चन्द्रवीस पि-धीवास भा जिणवर ! -हे तीर्थकर भगवान्

जयतु—आपकी जय हो अप्पडिह्यसासन—अखण्डित शासनवाले,
 जिनका शासन विसासे भा प्रतिद्वत पराभूत नहीं है (माने शाश्वत
 है) ऐसे [१] कम्मभूमिहि—५ भरत, ५ ऐरवत और ५ महाविदेह-
 क्षेत्र, इस प्रकार कुल १५ कम्मभूमियोंमें पढम—वज्रप्रपन्ननाराच
 नामक प्रथम सघयणि—सघयण (शरारकी गठन) वाले उपकोसय—
 उत्कृष्टतया, अधिकसे अधिक सत्तरिसय—एक सौ सत्तर (१७०)
 जिणवरण—जिनेश्वर भगवत विहरत—विहार करते हुए
 स्वबभइ—पाये जाते हैं नवकोटिहि—नौ (९) करोड केवलीण—
 केवलशानीं मुनिराज कोडिसहस्सनव—और नौ (९) हजार
 करोड माने नवे (१०) अरब साधु—साधु महाराज गम्भइ—
 होते हैं, पाये जाते हैं सपइ—वर्तमान समयमें जिणवर बीस—
 (सीमधरस्यामा आदि) बास (२०) जिनेश्वर भगवत (पाँच
 महाविदेशक्षेत्रोंमें विहरमाण हैं ।) मुणि बिहु कोटिहि—दो करोड
 मुनिराज धरणाण—श्रेष्ठ केवल ज्ञानवाले समणह—और त्यागी
 श्रमण साधु महाराज कोडिसहस्सदुअ—दो हजार करोड माने
 बीस अरब इन सबका पुणिज्जइ—स्तुति की जाता है निच्च
 विहाणि—प्रतिदिन नित्य प्रातः कालमें उठकर [२] जयउ—जय
 हो सामिय !—हे स्वामाजी ! रिसह !—हे श्रीश्रद्धाभदेवस्वामीजी !
 सत्तुजि—(पालिताणामें) महाताथ श्रीशत्रुजय गिरिगजपर
 उज्जति—(जुनागढमें) महाताथ श्रीगिरिनाराजपर पहु—हे प्रभु
 नेमिजिण !—श्रीनेमिनाथ भगवान् ! वीर !—हे महावीरस्वामीजी !
 सच्चउरि—सत्यपुरा (साचोर) नगरीका मडण—शोभा बढ़ानेवाले

नमो अर्चुह-भटोचमें मुणिसु-वय ।-हे श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजो
 मुहरि पास ।-(टिटोइ गावमें रिधत) हे श्रीमुहरिपार्श्वनाथ
 भगवान ! बुह-भक्तोंके दुःख और दुरिय-दुर्गतिपापोंका
 छडण-नारा करनेवाले अचर-अन्य विदेहि-महाविदेहक्षेत्रोंमें
 तित्ययरा-तापेकर भगवत चिह्न विसि-पूव आदि चार
 दिशाओंमें विदिसि-और ऐशानी आदि चार विदिशाओंमें
 जिं के वि-जो कोई भा तीअ-अतात (भुत) काल अणागय-
 अनागत (भविष्य) काल मपइ अ-और यत्तमानकालके वदु-
 में वदन करता हूँ जिणसन्ने वि-सर्मा जिनेश्वर भगवतोंको [३]
 सत्ताणवइ-सत्तानब्बे (१७) सहस्मा-हजार लक्का छपन्न-
 छप्पन (५६) लाख अटठकोडीओ-आठ करोड वत्तीमय-वत्तीस
 (३२) सौ वासियाइ-वियासा (८२) तिअलोए-देव, मनुष्य
 और याताल-इन तानों लोकके चेइए-जिनेश्वर भगवतोंके
 धेत्योंको वने-में वंदन करता हूँ [४] पन्नरस-परइ (१५)
 कोडि-करोड सयाइ-सौ सौजी वायाल-बयालीस (४२)
 करोड नइय-लाख अडयता-अट्ठावन (५८) छत्तोस-छत्तीस
 (३६) सहस्स-हजार जसीड-जस्सा (८०) सासाय-शाश्वत
 विजइ-निन-प्रतिमाओंको पणमावि-म सिर झुकाकर प्रणाम
 करता हूँ [५]

सुत्राय

जगचिनामणि । जगनाह ।-तानों भुवनके प्राणियोंका (सुरी
 होनका) कामगए पूरा करनेमें चितामणि रत्न समान, ओ
 विभुवनके स्वामाजा ।

जगगुरु ! जगरक्षत्रण !—पंचेन्द्रिय जीवोंको उपदेश देकर उनका उद्धार करनेवाले हे गुरुदेव ! अभयदानके अत्यन्त आश्चर्यकारक चमत्कारपूर्ण सूत्रसे छहों कायके जीवोंका रक्षण करनेवाले

जगवधव ! जगसत्यवाह !—(वैर-वैमनस्यको दूर कर विश्व-वपुत्वका अमूल्य और आदर्शमय उपदेश देनेवाले) हे विश्व-बंधो ! मोक्षाभिलाषियोंको मोक्ष ले जानेवाले हे सार्धवाह ! (मुक्तिपुरीके सघके अगुआ सघर्वा !)

जगभावविअक्षयण !—छ द्रव्य, नौ तत्त्व आदि रहस्योंको समझानेमें विचक्षण माने चकोर एव महाज्ञानी !

अदृठावयसठविअरुख !—जिनका प्रतिमाएँ महाराजा भरतने अष्टापद पवतपर स्थापित की हैं, ऐसे

कम्मदूठविणासण !—और जिन्होंने शानावरणाय आदि आठों कर्मोंका नाश (क मोक्ष प्राप्त) किया है, ऐसे

चउवीस पि जिणवर !—ओ चौबीसों जिनेश्वर भगवतो !

जयतु अण्णडिहयसासण !—जिनका शासन कभी भी किसीसे भी प्रतिहत पराभूत या ओझल नहीं हो सका है, ऐसे (हे श्रीजिनेश्वर देव !) आपकी सर्वत्र विजय हो । [१]

कम्मभूमिहि कम्मभूमिहि पढमसघयणि—असि, मसि और वृषि इन तानका वृत्तियोंसे जहाँके लोगोंका आजीविका चलती है, ऐसा पद्वह कमभूमियोंमें पहला (वज्ररूपभनाराच नामक) सरारकी गठनवाले

उपकोसय सत्तरिसय—उत्तृष्टतया—अधिरसे अधिक एव भी सत्तर

जिणयराण विहरत लभद्ध—श्रीतीर्थंकर देव विहरमाण—विहार करते हुए पाये जाते हैं ।

नयकोटिहि वेचलोण—उन १५० तीर्थपत्तियोंके केवलशानियोंका परिवार भी करोडका

कोडिसहस्सनव साहु गम्भइ—और सामान्य साधु महाराजोंका भी हजार करोड (१० अरब) का होता है ।

सपइ जिणवर बीस—वर्तमान समयमें पाँच महाविदेशक्षेत्रोंमें विहार करनेवाले श्रीसामधरस्वामी भगवान आदि बीस सार्धर भगवत्

मुणि विहु कोटिहि वरनाण—दो करोड केवलज्ञाना महामुनिराज समणह कोडिसहस्सदुअ—दो हजार करोड (२० अरब) सामान्य साधुमहाराज—इन सबका

भुणिज्जइ निच्च विहाणि—नित्य प्रतिदिन मगल प्रात कालमें स्तुति का जाती है । [२]

जयउ सामिय ! जयउ सामिय ! रिसह ! सत्तुजि—हे स्वामाजा ! आपका जय हो ! तथाधिराज श्रीशुजय गिरिराजपरके भगवान श्राकषभदेव स्वामाजा ! आपकी जय हो !

उज्जिति पट्ट नेमिजिण !—श्रागिरनार महाताधपरके श्रानेमिनाथ प्रभुजा !

जयउ वीर ! सच्चउरिमडण !—और सत्यपुरी (साची
नगरी)के आभूषणसमान धरमतीथपति, ओ श्रीमहावीर
स्वामीजी ! आपका जय हो !

भरुअच्छहि मुणिसुव्वय !—भडोंच (मूगुवच्छ) के देवाधिदेव
श्रीमुनिसुव्वतस्वामीजी !

मुहरिपास ! दुहुदुरिअसडण !—भक्तवर्गके दु ख और दुरित
पापकर्मोंका नाश करनेवाले (टिटोइ गाँवके) ओ श्रापार्वनाथ
स्वामाजी ! (आपकी जय हो !)

अवर विदेहि तित्थयरा—(आपको तथा) दूसरे पाँचों महा
विदेहक्षेत्रोंमें विचरनेवाले तार्थकर भगवतोंको

चिहु विसि विदिसि जि के वि—और चारों दिशाओं और चारों
विदिशाओंके जो कोई भी (तार्थकरदेव) हो उनको

सौआणागयसपइ अ—और भूतकालमें हो गये हैं, भविष्यकालमें
होनेवाले ह तथा वर्तमानकालमें विद्यमान ह, ऐसे

बहु जिण सव्वे वि—सभा ताथकर देवोंको म वदन करता हूँ । [३]

सत्ताणअइ सहस्सा—सत्तानब्बे हजार +

लवसा छप्पन अठ्ठकोडीओ—आठ करोड छप्पन लाख +

बत्तीसय वासियाइ—तीन हजार दो सौ बियासा = आठ

करोड, सत्तावन लाख, दो सौ बियासा (८,५७,००,२८२)

तिअलोए चेइए वद—इतने (स्वर्ग, मृत्यु और पाताल इन)

तानों लोकके जिन प्रासादोंको म वदन करता हूँ । [४]

पन्नरसकोडिसयाइ—पंद्रह सौ करोड (१५ अरब),

कोही घायाल लक्ष अडबझा—बयालीस करोड अठ्ठावन लाख,
छत्तीस सहस्र असौइ—छत्तीस हजार, अस्सी (१५,४२,५८,
३९,०८०)

सासयबिबाइ पणमामि—बुल इतने शाश्वत जिनबिबोंकी मैं
प्रणाम करता हूँ । [५]

भावार्थ

ऐसा कहा जाता है कि जब गणधर भगवान श्रीगीतमस्वामीजी श्रीअष्टावदीयकी यात्रा करन गये थे तब उन्होंने इस सूत्रकी रचना की है । चर्यामें बतला इस प्रकार ही होनी चाहिये ऐसा यह सूत्र बताता है । इस सूत्रका दूसरा नाम चर्यबदन है । इस सूत्रमें बहुतसे चर्योंकी बतला जाती है । भगवान रामस यठवर बीया घुटना घोडा (आधा) ऊधा रखकर दोनों हाथकी कुट्टनियाको पैदके पास रखकर और दोनों हाथोंकी कमनाकृति भद्रामें जोड़कर यह चर्य बदन किया जाता है ।

परिमल

- ★ दिनके घण्ट १४ से आगे नहीं बढ़ते बस बसे ही ढाई द्वीप प्रमाणमध्यलोहमें तीयकर देय भी १७० से अधिक् कभी नहीं हाते ।
- ★ गणधर भगवान श्रीगीतमजीकी यह तीययात्रा हमें बार बार महतीयोंकी योग्या करनेको प्रेरित करती है ।
- ★ उपरान्त गुरुतम्य (असली ज्ञान) और अभयदानसे वास्तविक रक्षा—य दोनों इस सूत्रके अति महत्त्व है ।
- ★ यीतरागियोक् साथ किस प्रकार और जान कौन भी चालें करन चाहिये ? —इसका ज्ञान इस सूत्रसे होता है ।
- ★ 'सपई ज्ञान अभी सप्रति दत्तमान समयम अर्थात् श्रीमहावी भगवाण "गसनकार"म । यह सपई गव्ह हम यम-यगा तर प्राचीन इतिहासको देखनेके लिय प्रेरित करता है । भगवान ० अजितनाथ प्रभु समयमें १७० विजयामें १७० तीयकर भगवा

विहार करते थे उस अक्षयात वर्षोंके अतिप्राचीन अतीत (भूत)
कालका निरीक्षण करनेकी माना यह सूचना ही है।

- ★ राजाके घर पुत्रजन्म होता है उसे देख सब प्रजाजन हर्ष निभर होते हैं राजा सभीकी प्रीति भाज देता है, बादमें उसकी शिक्षा दीक्षा पूरी हो जानेपर उसका शायाभिषेक होता है, तब वह मुनीमत्त होता है। वस ही जिन प्रतिभाजाकी अजनगलाका होती है उस समय पहले मूर्तिमें प्राण प्रतिष्ठा होती है बादमें मूर्तिकी शाय-मन्दिरमें स्थान प्रतिष्ठा होती है सभी भगवान अपने प्रभापसे वहाँ दिसमित हाते हैं। उनके सम्मुख बदन स्तुति भजन आदि किया जाता है उसे चरमवन्दन कहते हैं।

- ★ इस सूत्रसे हम जान सकते हैं कि — १. जिनमन्दिर होने ही चाहिये। २. प्रभुजीकी मूर्ति सम्मुख प्रतिग्नि भक्ति करनी ही चाहिये। ३. यह बदन स्तवनारम्भ भक्ति भी मुक्तिकी साधनाका एक प्रकार ही है।

- ★ हरेक महाविदेहक्षत्रमें ३२ तथा भरतक्षेत्र और एरवतक्षत्रमें १-१ विजय होनी है। अतः पत्रह कमभूमियोंमें उनका सख्या [पाँच महाविदेहकी $(५ \times ३२ =) १६०$ + पाँच भरतकी $(५ \times १ =) ५$ + पाँच एरवतकी $(५ \times १ =) ५$ कुल] १७० होती है। बैदलक्षानी भगवत्ताने इतना विशाल विस्तार तो मानवियोंकी दुनियाका ही देखा और बताया है। और इसने अतिरिक्तकी दुनिया तो परार्थी योगियोंकी बतायी है।

- ★ गायत्रि विष्णु और गायत्रि धार्य है — यह बात इस सूत्रमें सूत्रकार स्वयं स्पष्टपर भगवान् हमें बताने है। बैदलक्षानियोंकी छोड़ विनियमके गायत्रि विष्णुकी इस प्रकार गायत्रि स्वीकृत कर सकते हैं? यहाँ बठ बठ उन सब गल्प आका बदन करनेवाला उदाहरण यह सूचन है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—जगचितामणि भूत्र क्या है? किसने बनाया है?
और क्यों?

उत्तर — जगदितामणि भूत चैत्यबदन है । गणधर भगवान्
 श्रागौतमस्वामीजी महाराज अष्टापदकी यात्रा करने गये
 थे । वहाँ प्रभुभक्तिक लिये उन्होंने यह सूत्र बनाया
 इसमें त्रिभुवनके शाश्वत और अशाश्वत जिनालयों
 और उनमें स्थित जिनेश्वर भगवत्तोंकी प्रतिमाओं
 नमस्कार किया है ।

प्रश्न २—अष्टापदके जिन बिंबोंके बारेमें आप क्या जानते हैं ?

उत्तर — चक्रवर्ती भरत महाराजाने चौबासों तीपकर देवोंकी मूर्तियाँ
 और रत्नमयी मूर्तियाँ बनाकर अष्टापद पर्वतपर स्थापित
 की हैं । मूर्तियाँ हरेक तार्थकरके आकार, प्रकार और
 प्रमाणका और चारों दिशाओंमें २, ४, ८ और
 (कुल २४) की संख्यामें हैं । हरेक भगवानका नासिक
 एक सरल श्रेणामें रखकर उच्च नाच आसनपर मूर्ति
 बिराममान का है ।

प्रश्न ३—तानों लोकके नाम बताइये ।

उत्तर — १ स्वर्गलोक, ऊर्ध्वलोक या देवलोक २ मृत्युलोक
 तिष्ठलोक या मनुष्यलोक ३ पाताल या अधोलोक

प्रश्न ४—‘कम्मभूमिहि’ माने क्या ?

उत्तर — असि तलवार (अनेक प्रकारके रथियार), मसि-स्य
 (लिखा पदके सब साधन) और दृषि रेता (खेत,
 बास, गोपालन, व्यापार आदि)—इन तान प्रवृत्तियों
 त्रिविध यापारसे जहा जावन निवाह किया जाता है
 उसे ‘कम्मभूमि’ कहते हैं ।

प्रश्न ५—कम्भूमिके क्षेत्र कहाँ आये हैं ? उनके नाम बताइये ।

उत्तर—भरत, ऐरवत और महाविदेह इन तान नामके पाँच-पाँच (कुल १५) क्षेत्र हैं । इनमेंसे जमुद्वीपमें हरेक नामका एक-एक (माने कुल ३) और धातका खड एव पुष्कराधडीप इन दोनोंमें हरेक नामके दो-दो (माने कुल $६ + ६ = १२$) इस प्रकार १५ कम्भूमिके क्षेत्र ह । (इनके अलावा इस ढाई द्वीपमें ३० अकम्भूमि क्षेत्र मा हैं, जहाँ केवल यमल जोड़े हा होते ह ।)

प्रश्न ६—‘जगचित्तामणि’ का पाँच गाथाओंका संक्षेपमें वर्णन काजिये ।

उत्तर—पहला गाथा सवेयामें और बादका गाथाएँ वस्तुछदमें हैं । पहली गाथामें अष्टापदपरके चौबीसों तीर्थंकरोंको वदन किया गया है । दूसरा गाथामें उत्कृष्ट कालमें विहरमाण १७० एव साप्रत जघन्यतया विहरमाण २० तीर्थंकरोंको वदन किया गया है । तिसरा गाथामें नाम और स्थान निर्देशपूर्वक पाँच भावतोंको और तानों कालके प्रसिद्ध या अप्रसिद्ध भगवतोंको वदन किया गया है । चौथी और पाँचवी गाथामें क्रमश तीन लोकके शान्धव जिनालयोंको और जिननिबोंको वदन किया गया है ।

प्रश्न ७—अष्टापद-तार्थ कहाँ है ? क्या वह बहुत ही ठेँचा है ?

उत्तर—अभीके हिमालयके कैलास शिखरपर अष्टापद तार्थ है, ऐसा प्राय माना जाता है । वह बहुत ही ठेँचा है ।

उसके आठ साठियों हैं । देवता वहाँ सेवा भक्ति करते हैं । वहाँ छविघर घरमशरीरी बिना कोई नहीं जा सकता ।

प्रश्न ८—अष्टापद तौरोंकी यात्राके छिये श्रीगौतमस्वामीजी भगवान गये थे, तो फिर हम क्यों नहीं जा सकते ?
उत्तर—श्रीगौतमस्वामीजी अनन्तछविनिधान थे । अष्टापद तीर्थका यात्राके समय उन्होंने अपने छवि बलसे गूफे फिरणोंको पकड़कर उनके सहारे यात्रा का थी । उस समय भी अन्य तपस्वी तो उस पर्वतपर न चढ़ सके । अपने पास वैसा सिद्धियाँ न होनेसे हम वहाँ नहीं जा सकते ।

प्रश्न ९—क्या मूर्तिका वदन करनेसे लाभ होता है ?

उत्तर—हाँ, बहुत हा लाभ होता है । ‘हम चेतन हैं, जब पापाणकी वदन क्यों करें?’ ऐसा कहनेवाले हरेक संप्रदायके लोग भी एक विशिष्ट आकार प्रकारका तस्वार अधव छन्देका या पत्थरकी मूर्तिकी वदन करते हैं, उनका सम्मान करते हैं और अपना लाभ देखकर भजन भी करते हैं । रुपया या सोका नोट भी क्या जब नहीं होता ? औषध भी तो जब हा है न ? वह पीनेसे शरीरका रोग दूर होता है, वैसे हा इस प्रभुका मूर्तिकी नमन, दर्शन, वदन भक्ति आदि करनेसे दुर्गतिका नाश होता है । गहने, मकान, सोना, चांदी, जवाहर आदि

जड़की भी फीमल (प्रभाव) होती ही है । वीतरागी प्रभुजीकी यह मूर्ति तो हमें वातराग होनेका सिखाती है, तो फिर उसका महत्त्व-मूल्यांकन कितना होना चाहिये ? जिनेश्वर भगवानकी प्रतिमा यदि आँसोंके सामने न हो तो मुक्तदशा या वीतरागी अवस्थाके प्रत्यक्ष दर्शन कौन करावे ? मिठाई देखते ही बालकोंके मुँहमें पानी भर आता है, वैसे ही वीतरागी जैसे विरक्तका मूर्ति दर्शनमात्रसे ही वैराग्य पिपासुओंमें विरक्ति उत्पन्न कराता है । क्या मूर्तिसे होनेवाला यह लाभ कम है ? इसा लिये कल्याणका प्राप्ति करानेवाली देवाधिदेव जिनेश्वर भगवानकी मूर्ति नैयाकी तरह भवसागरके पार तारनेवाली हा है । रागाकी मूर्ति मोक्ष नहीं हो दे सकता । जिनेश्वर देवका मूर्ति वीतरागापन बतानेवाली होनेसे वह तारक और पूज्य हा है । छा, त्रिशूल आदिके साथका मूर्ति राग द्वेष-दशक होनेसे उसमें मोक्ष देनेका शक्ति हो हा नहीं सकता ।

१२ श्री ज किचि सूत्र

अवयवाथ

ज किचि--जो कोह, जितने भी नामतित्य--नामतीथ
सगगे--स्वर्गलोकमें पायालि--इस मूष्याके नोंचे-पातालमें
माणुस्से लोए--मनुष्यलोकमें जाइ--जो जो या जितनी जितनी

जिण-जिनेश्वर भगवतोंका बिबाह-प्रतिमाएँ (हों) ताइ-उन
या उतना सद्वाह-सब (प्रतिमाओंको) वदामि-म वदन
करता हूँ ।

सूत्रार्थ

अ किंचि नामतिरथ-जो जो नामतीर्थ (जैसे कि श्रीशत्रुजयतीर्थ)।

ताम ४ प्रकारके होते हैं-१ नामस्ताथ २ स्थापनाताथ

३ द्रव्यतीर्थ ४ भावताथ । इनमें नामतीर्थ प्रथम है ।)

सगो पायालि माणुस्से लोए-स्वर्ग, पाताल और मनुष्य इन
तीन लोकमें हों (और उन तीर्थोंमें)

जाइ जिणबिबाह-जिनेश्वर भगवतोंकी जितनी भी छोटी
बड़ी प्रतिमाए हों ।

ताइ सद्वाह वदामि-उन सब (नामतीर्थों और शानदार जिन
प्रतिमाओं)को म भावपूर्वक वदन करता हूँ ।

भाषार्थ

स्वर्ग (ऊपर) पाताल (अधो) और मनुष्य (मध्य) —इन तीनों
लोकमें जो जो तीर्थस्थान हैं और उन तीर्थोंमें जिनेश्वर देवाकी जितनी
जितनी प्रतिमाएँ हैं —उन सबको इस सूत्रसे वदन किया जाता है ।
तीर्थयात्राएँ बार बार करनी चाहिये यह तत्त्व इस सूत्रसे स्पष्ट होता
है । स्थानिक भविरोंसे भी तीर्थभूमिमें विषय लाभ है यह ज्ञान भी
हमें इस सूत्रसे होता है ।

परिमत

★ स्वयं वसे ही पातालमें या तीर्थ और जिन प्रतिमाएँ हैं यह इस
सूत्रसे हम जान सकते हैं ।

- ★ समकितो आत्माका देव और युद्ध साम सबध होता ह । अतः यह निरंतर तारोका स्मरण और उनकी स्तुति करता ह ।
- ★ जबकि मनुष्योकाकी ही सभी तीथयात्राएँ—जिन प्रतिमाओं के दर्शन हम नहीं कर सकते तब पाताल या स्वर्गको यात्राएँ करना हमारे लिये कैसे सम्भव हो सकता ह ? पर उन्हें भी वदन कान्छा जान इन सूत्रसे हम उठा सकते ह ।
- ★ महान तीर्थोंका स्मरण कर वहाँकी गानदार दिन प्रतिदिनका वदन करनेकी और घर बैठ बठ ही तीथयात्राका पुण्य संपन्न करनेकी इस सूत्रमें शिक्षा हो गई ह ।

सरल प्रश्नोत्तर

प्रश्न १—‘ज किंचि’ का भावाध समझाइये ।

उत्तर—तानों भुवनके समस्त नामतार्थ और वहाँका निरदिन-ओंको इस सूत्रद्वारा वदन किया जाता है । ~~निरदिन~~ जैसा हा लाभ होनेके कारण इस सूत्रद्वारा ~~निरदिन~~ तीर्थोंको और वहाँकी प्रतिमाओंको वदन करने ~~निरदिन~~ किंसा दिन प्रमादीको भी हो सकती है, ~~निरदिन~~ सूत्र बहुत हा महत्त्वका है ।

प्रश्न २—क्या तार्थवदना जैसा ही ‘ज किंचि’ का ह ?

उत्तर—हाँ, इस सूत्रसे भा यहाँ घर बैठे-बैठ हा सूत्रके तीर्थोंका स्मरण कर उन्हें वदन किया जाता है, ~~निरदिन~~ यह भी एक तरहका तार्थवदना हा है । ~~निरदिन~~ य ~~निरदिन~~ सूत्रमें हाती है, इस लिये ओठेमें हा बहुत लाभ ~~निरदिन~~ होता है । पत्रमें विस्तारपूर्वक लिखा जाता है, किन्तु तारमें संक्षिप्त शब्दोंमें हा समयाका ज्ञान है, ~~निरदिन~~ विस हा यह सूत्र तार जैसा संक्षिप्त है ।

१३ श्री नमुत्थु ण (शक्रस्तव) सूत्र

अवयवार्थ

नमुत्थु ण-मं नमस्कार करता हूँ अरिहताण-अग्निह
 भगवताण-भगवत्तोंको [१] आइगराण-पुनरथ चतुर्विध आ
 सधका स्थापना कर शासनका प्रारम्भ (आदि) धरनेवालोंको
 तिरथयराण-तार्थकरोंको सय-स्वय, आपसे आप सबबुद्धाण-
 सर्वज्ञ ज्ञाना हो गये ह, उनको [२] पुरिस-पुरषोंमें उत्तमाण
 -उत्तमोंको, श्रेष्ठाको पुरिससीहाण-पुरुषोंमें सिंह समान है,
 उनको पुरिस वरपुडरीआण-पुरषोंमें श्रेष्ठ पुडराक श्वेत कमलके
 समान जो उत्तम है, उनका पुरिस वरगधहृत्थीण-(हाथियोंमें
 जैसे गधहस्ता श्रेष्ठ माना जाता है वैसे ही) जो पुरषोंमें श्रेष्ठ
 गधहस्ता समान उत्तम है, उनको [३] लोगुत्तमाण-लोकमें
 जो उत्तम है उनको लोगनाहाण-लोगके नाथाको-स्वामियोंका
 लोगहियाण-लोगका हित करनेवालाको (भविष्यीयोंका कल्याण
 करनेवालोंको) लोगपइवाण-विश्वमें जो प्रदाप-ज्ञानदीप जैसे
 है, उनको लोगपज्जोअगराण-सारे विश्वमें प्रद्योत ज्ञानप्रकाश
 फैलानेवालोंको [४] अभयदयाण-अभयदान देनेवालोंको
 (अभयदानद्वारा सहा जावन प्रदान करनेवालाको) चवखु
 दयाण-विवेकरूपी औरों देनेवालाका मग्गदयाण-मुक्तिमान
 बतलानेवालोंको सरणदयाण-शरण आश्रय देनेवालोंको बोहि
 दयाण-बोधि सम्यक्त्व देनेवालोंको [५] धम्मदयाण-धम्मको

प्राप्ति करानेवालोंको धम्मदेसयाण—धर्मोपदेश देनेवालोंको धम्मनायगाण—धर्मके स्थापक-नायकोंको धम्मसारहीण—धर्मरूपी रथके सारथियोंको (रथ चलानेवालोंको) धम्मवर—धर्मस्वरूप जो श्रेष्ठ चाउरत—और चारों गतिओंका नाश करनेवाला धर्मचक्र है, उसे धारण करनेवाले चक्षुचक्षुहीण—धर्मचक्रवर्तियोंको [६] अप्पडिहय—सबत्र अप्रतिहत अस्सलित ऐसे चरनाण—श्रेष्ठ ज्ञान वसण—और दर्शनको धराण—धारण करनेवाले विमट्ट—संपूर्णतया नष्ट हुए हैं छउम्माण—छपस्यावस्था जिनकी, उनको (केवलज्ञान पूर्वकी अवस्था छपस्यावस्था है।) [७] जिणाण—स्वयं राग और द्वेष इन अतः शत्रुओंको जितानेवालोंको जावयण—दूसरोंको राग द्वेषरूपा शत्रुओंको जितानेवालोंको तिम्माण—जो रवय ससारसमुद्र तैर गये हैं, ससारसमुद्रके पार गये हैं, उनको तारयाण—दूसरोंको ससारसमुद्रसे तारनेवालोंको बुद्धाण—ज्ञानियोंको बोहयाण—अन्य भव्य आत्माओंको ज्ञान देनेवालाको मुत्ताण—घाती और आघाता कमास जो रहित मुक्त हैं, उनको मोअगाण—अन्य छपुकर्मी आत्माओंको उन कमबधनोंसे छुड़ानेवालोंको [८] सव्वभूण—सबज्ञ-केवलज्ञानियोंको सव्वदरिसीण—(केवलदर्शन नामक गुण प्रगट होनेसे) सभी देखनेवालोंको सिव—निरुपद्रव अयल—अचल—स्थिर अरुअ—रोगरहित अणत्त—अनत, अतरहित अक्खय—अक्षय, जिसका नाश ही नहीं होता ऐसे अव्वाबाह—न्याबाधा-पीडारहित अपुणरावित्ति—जहाँसे फिर इस पृथ्वीपर आकर जन्म लेना नहीं

पढता ऐसे सिद्धिगद्ग-सिद्धिगति मोक्षमति नामधेय-नामक
 ठाण-स्थानको सपत्ताण-प्राप्तहुए हैं, ऐसे नमो जिणाण-
 जिनेश्वर भगवत्तोंको म नमस्कार करता हूँ जिअभयाण-अ
 भयोंपर जिहोंने जय प्राप्त की है, उनको [९] जे अ-और
 जो अर्द्धआ-भूतकालमें सिद्धा-सिद्ध भगवत हो गये हैं जे अ
 -और जो भविस्सति-होंगे अणागए बदले-आगत-भविष्य
 कालमें सपइ अ-और जो सापत्तकालमें, वतमानकालमें, अमा
 यट्टमाणा-(महाविदेहक्षेत्रमें) विहार कर रहे हैं सट्ठे-उन
 सबको तिविहेण-(मन, वचन और कायासे) त्रिविध घदामि
 -मैं घदन करता हूँ [१०]

सुत्राय

नमुत्थु ण अरिहताण भगवत्ताण-श्रीअरिहत्त भगवत्तोंको मैं
 नमस्कार करता हूँ । [१]

आइगराण तित्थयराण सय सद्दुद्धाण-शासनकी स्थापना का
 (उनकी) अपनी दृष्टिमें धर्मका प्रारम्भ करनेवालोंको,
 तीर्थंकर नाम धर्म धारण करनेवालोंको (और) जा आपसे
 आप ही शुद्ध बुद्ध ज्ञाना हो गये ह, उनको (मैं घदन
 करता हूँ) । [२]

पुरिसुत्तमाण पुरिसत्तीहाण-पुरुषोंमें श्रेष्ठोंको, पुरुषोंमें सिद्ध
 सद्गुण (प्रतापियोंको)

पुरिसवरपुडरीआण पुरिसवरगघहत्थीण-पुरुषोंमें उनमें
 पुंडरीक चेत कमलके समान उत्कृष्टाको (और जैसे हाथियोंमें)

गणहस्ता श्रेष्ठ माना जाता है वैसे ही) पुरुषोंमें उत्तम गणहस्ताके तरह श्रेष्ठोंको (मैं वदन करता हूँ।) [३]

लोगोत्तमाण लोगनाहाण लोगहियाण—लोगमें जो उत्तमके नाते सुप्रसिद्ध हुए हैं, उनको, जनाय और अशरण जनोंके शिरपर जो छत्ररूप माने नाय या स्वामी हैं, उनको, जीव मात्रका हित चाहनेवालों और करनेवालोंको,

लोगपद्ममाण लोगपज्जोअगराण—लोकमें जो प्रदाय ज्ञानदीप समान हैं, उनको (और) भविजायोंको उपदेश देकर उद्योत ज्ञानप्रकाश फैलानेवालोंको (मैं वदन करता हूँ।) [४]

अभयदयाण चवसुदयाण भग्नदयाण—छद्मों कायके सभी जायोंको अभयदान देनेवालोंको, विवेक और ज्ञानरूपी चक्षु प्रदान करनेवालोंको, मुक्तिमार्ग बतानेवालोंको,

सरणदयाण वं हिददाण—भयङ्गमणसे ऊँचे हुआँको शरण देने वालोंको (और शुद्ध देव, गुरु एवं धर्मकी श्रद्धास्वरूप) सम्पत्त्वका दान देनेवालोंको (मैं वदन करता हूँ।) [५]

धम्मदयाण धम्मदेसयाण धम्मनायगाण—सर्वविरति और देश विरति—इन दोनों प्रकारसे धर्म बतानेवालोंको, समवसरणमें धमका उपदेश देनेवालोंको, धर्मके नायकोंको,

धम्मसारहीण धम्मवरचाउरतचवक्खट्टीण—धर्मरूपी रथको चलानेवाले धम्मसारधियोंको (जिस प्रकार मेरुकुमारके शिथिल हुए भावरूपों रथको भगवान् श्रीमहावारदेवने सन्मागमें स्थिर किया था वैसे ही) और चारों गतिपोंके जन्म मरण आदि

समस्त दुःखोंका अंत-नाश करनेवाले धर्मचक्रको धारण करनेवाले धर्मचक्रप्रतिपत्तियोंको (मैं बंदन करता हूँ।) [५]

अप्यदिह्यवरनाणवसणधराण—सर्वत्र अप्रतिहत अस्त्रालित ऐसे केवलज्ञान और केवलदर्शनको धारण करनेवालोंको (केवलज्ञानी भगवत्तोंको प्रथम ज्ञान और बादमें दर्शन होता है, यह भी यहाँ सूचित किया गया है।)

विषट्छत्रमाण—जिनका अज्ञानमय छत्रस्थावस्था अब व्यावृत्त निवृत्त माने संपूर्णतया नाश हो गई है अर्थात् जिन्होंने चार घाती कमोंका शय किया है, उनको (मैं बंदन करता हूँ।) [७]

जिणाण जाययाग—राग और द्वेषरूपी शत्रुओंके जितनेवालोंको और दूसरोंको राग द्वेषरूपा शत्रुओंको जितानेवालोंको,

तिष्ठाण सारयाण—ससारसमुद्रको जो स्वयं तैर गये हैं मां ससारसमुद्रके जो पार पहुँचे हैं, उनको और लघुकर्म आत्माओंकी जागरूक बनाकर ससारसमुद्रके पार तैराने-जानेवालोंको,

बुद्धाण बोद्धाण—जो स्वयं ज्ञाना हैं, उनको और दूसरा असंख्य आत्माओंको ज्ञान प्रदान करनेवालोंको

मुक्ताण मोक्षणाण—एव जो स्वयं कमबधनोंसे मुक्त हैं, उनको और दूसरोंको उक्त बन्धनोंसे मुक्त कर मोक्ष पहुँचानेवालोंको (मैं बंदन करता हूँ।) [८]

सबल्लूण सब्बदरिसीण—केवलज्ञानके प्रभावसे सर्वभावोंको जाननेवालोंको, अनन्त दर्शन नामक गुण प्रगट होनेसे समूचे विश्वको यथार्थतया देखनेवालोंको,

सिवमयलमरुअमणतमक्खयमब्बाबाहमपुणरावित्ति—उपद्रव रहित, स्थिर, रोगरहित, अत बिनाके, क्षयरहित, सर्व प्रकारकी पीड़ाओंसे मुक्त और जहाँ पहुँचनेपर इस ससारमें फिरसे क्मा भा जन्म लेना ही नहीं पड़ता ऐसे (ये सब मोक्षके विशेषण हैं ।)

सिद्धिगइ नामधेय—सिद्धिगति मौख्यति नामक

ठाण सपत्ताण—श्रेष्ठ स्थानको पहुँचे हुए

नमो जिणाण जिअभयाण—और राग—द्वेष एवं समूचे भयको जातनेवाले श्रीजिनेश्वर भगवतोंको मैं भक्तिभावसे नमस्कार करता हूँ । [९]

जे अ अईआ सिद्धा—अतीत भूतकालमें जो (तीर्थंकर पदको प्राप्त कर) सिद्ध हो गये हैं,

जे अ भविस्सतिणाण काले—जो भविष्यकालमें सिद्ध होंगे सपइ ॥ वट्टमाणा—और वर्तमानकालमें जो २० विश्रमाणा तीर्थंकर भगवत हैं,

सब्बे तिविहेण वदामि—उन सबको मैं मन, वचन और क्रायासे वदन करता हूँ । [१०]

भावायं

प्रभुजीके कल्याणरुके समय इसमहाराज ईश्वरनाथ मह सूत्र पढ़कर श्रीतीर्थंकर भगवताजी स्तुति करते हैं । इति म्पि मह नावत ध

पहुँच ही प्रसिद्ध है। धार्मिक भगवत्तोके यथायथ भूषणों का अनुरोध करना अलंकारों से सजाकर रचित गद्यों में इस सूत्र में सच कह दिया गया है प्रभुजीन सम्मुख इस गद्यों से उद्धारण के साथ ही जब अथवा दिया करते हैं तब हमारा हृदय भवितमायक दिलीरों की बलवान्ति से मुक्त उठता है। जिनमन्दिर में (आकर) प्रभुजीन सम्मुख (दिये जानवाते) धर्मव्यवस्थाने सब भी साथ धर्मको उपाय रखकर हाथ जाड़कर सगुण विनय के साथ यह सूत्र धार्मिक विज्ञान है। प्रतिक्रमण केमन्दिर अथि कियाओं में भी यह सूत्र इसी प्रकार (महासे) ही बोलने का विधान है।

परिमल

- ★ यदि जानकारी एकत्रित की जाय तो सामान्य जादमी अपने बड़े बूढ़ों के नाम अधिक से अधिक सात पुस्तोत्तक आमतयास मित्र सवता है और जनता का यथाभव परमोच्च हित सम्पन्न करनेवाले महाराजा कुमारपाल या निवासी महाराज जैसे किन्हीं किन्हीं नेताओं के नाम इतिहासक पद्योपर अंकित हो जानने कारण 'जाताभिर्योतन' जनता के स्मरण में रहे हैं और रहेंगे भी। इसी प्रकार इस सूत्र में विविध जन तनुजसम्पन्न और उन्हीं जीवनिकाय के परमोपकारी ओतीषकर भगवत्तोके साथ नाम तीन बीबीसातव आगमों में रहते ही हैं। यह भी ओतरागियों की धरुता का सूचक ही है।
- ★ अमरवशत ज्ञानचक्र का ज्ञान और मोक्षमागका ज्ञान य सब उपाय गणनागतवत्सल प्रभु के भवित वक्ष के विरचित पद्य है—और यह इस सूत्र का परिमल है।
- ★ धर्म रख है और तीक्ष्ण भगवत्त सारथी है। हमें तो इन दोनों के जकरण है।
- ★ केवलज्ञानियों के ज्ञान गण मोक्ष के लिये होनवाला प्रदास, सुख या जानने के बाद होनवाला ज्ञान और अन्तर्धे व्यपका सय होना—ये सब बातें इस सूत्र के रहस्यस्वरूप बन जाती हैं।
- ★ चरमाग से जानवाले रखी सीधी राह पर जानने को कुपान होना है, यह सारथी कहलाता है। संसार के विषय कपार हमें उन्मागे की

और आरविन करते हैं। प्रमत्री हमारा धर्माति छटकारा कर सत्यके सागपर (धार्मिक क्रियाओंद्वारा मोक्षकी ओर) खींचते हैं। इसी लिये वे प्रयाय धर्मसारकी ह और निष्कारण बंधु भी।

★ जगत्त चक्रते चक्रतों छहों खण्डोंका आधिपत्य सिद्ध करता है, यत्ते हो तोयत्तर भगवान् धर्मचक्रसे अपनी चारों गतिमोक्षा जगत्त करते हैं और भव्यामात्रोंकी चारों गतिमोक्षा जगत्त भी कर देते हैं।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—‘नमुत्पु ण’ के रचयिता कौन हैं ? इसकी रचना कब हुई ?

उत्तर —जब इन्द्रका सिंहासन कपित हो जाता है तब इन्द्र महाराज यह सूत्र बोलते हैं। वैसे ही इन्द्र महाराज तीर्थकर भगवत्तोंका जन्म कल्याणक मनानेके लिये उन्हें मेरु शिखरपर ले जाते हैं, वहाँ कल्याणभिक्षेके बाद भावभाकेतसे जो प्रभुनाका स्तुति करते हैं, वह स्तुति इस सूत्रमें है। ताथका गणनासे ‘नमुत्पु ण’ रचयिता गणधर भगवान् हैं, लेकिन सूत्र तो शारवत ही है। इस सूत्रमें ३५ विशेषणोंसे भगवान्का स्तुति की गई है।

प्रश्न २—‘नमुत्पु ण’ का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर —शक्रस्तव या इन्द्रस्तुति।

प्रश्न ३—इस सूत्रमें भगवान्के इतने सब विशेषण क्यों हैं ?

उत्तर —इस जगत्तमें भा देखा जाता है कि जितना आदमी अधिक पदा लिखा होता है, उतना उसको अधिक उपाधियाँ (विशेष्य) दा जाता है। फिर भी जातके ये सभी

पढ़े-लिखे लोग अपुण ज्ञानवाले ही होते हैं, जो भगवान तो पूर्णज्ञाना-केवलज्ञानी हैं। जो अपुण उन्हें हा जय बहुतेरा उपाधिर्षा दी जाती हैं, तब पु शानियोंको कितना देना चाहिये ? इससे यह बा रपालमें आवेगा कि इस सूत्रमेंके तीर्थंकर देवोंके विशेषण अधिक नहीं है। उनमेंसे एक भी विशेषण भगवत्तोंका वास्तवसे अधिक महता बतानेके लिये न है। अनन्त गुणसंपन्न प्रभुजाके अनन्त गुणोंके सम्मुख विशेषण तो अत्यंत ही कम हैं (जैसेके ऊँटके मुँह में जारा) और जो भा विशेषण हैं, वे गुणनिष्पन्न ही प्रभुजाके घुने हुए रास-सास गुणोंका यह सप्रहस्यन है।

प्रश्न ४-२५ विशेषण क्या सूचित करते हैं ?

उत्तर -तीर्थंकर भगवत्तोंको छोड़ अन्यत्र कहीं भा उनके उतमता हो ही नहीं सकती। जैसे दूसरोंको अपदेशका जरूरत होता है, वैसे साधकदेवोंको अपदेशका आवश्यकता नहीं रहती। उनके जिते कौशल (ऐश्वर्य) उनके बिना बोझ भी नहीं पचा सका उनके मागदघन बिना कहीं भा किसका भा नहीं हुआ और होगा भा नहीं। ३ बिना लोकहित हो ही नहीं सकता घबड़ाये हुए और अशरण जाय प्र

बिना भव-सागरको पार ही नहीं कर सकते । ससार-सागरको तैरनेकी शिक्षा देनेके लिये उनके बिना दूसरा कोई भी समय नहीं है । ऐसा ऐसा अनेक बातें इन विशेषणोंसे हम जान सकते हैं ।

१४ श्री जावति चेद्वाइ सूत्र

अवधार्यं

जावति-जितने चेद्वाइ-चैत्य, जिनालय उड्डे-उर्ध्व-लोकमें, स्वर्गमें अ-और अहे-अधोलोकमें, पातालमें तिरिबलोए-तिर्छालोकमें, मनुष्यलोकमें सच्चाइ-सबको ताइ-उनको बदे-मैं वदन करता हूँ इह-यहाँ सतो-रहा हुआ (रहकर भी) तत्थ-वहाँ सताइ-रहे हुए (चैत्योंको)

सुनार्यं

जावति चेद्वाइ-जितने जितने (जितने भी) जिनमदिर उड्डे अ अहे अ तिरिबलोए अ-उर्ध्व, अधो और तिर्छा इन तीनों लोकमें हैं,

सच्चाइ ताइ बदे-उन सब (जिनालयों)को मैं वदन करता हूँ । इह सतो तत्थ सताइ-यहाँ रहकर (भा) वहाँ तीनों लोकमें स्थान स्थानपर रहे हुए (चैत्योंको मैं वदन करता हूँ । यद्यपि मैं यहाँ एक नियत स्थानपर हूँ, फिर भी तानों लोकके भग्न जिनालयोंका भावयात्राका लाभ प्राप्त हो इस लिये सभी चैत्योंका समष्टिरूपमें स्मरण कर मैं उन्हें वदन करता हूँ ।

भावाथ

तीनों भजनक विनायकों को इस सूत्रसे बड़ा किया जाता है। त्रिभुवनक त्रिमदिरोंके बानक लिये मायिको जाना समझा नहीं है। इसी लिये यहीं मंदिर आश्रित भक्तबदन कराने समझ उन सुबुराह सभी चर्योंका समरण करनेको शिक्षा यह सूत्र हम देता है।

परिमल

★ शुभ कार्योंमें जिनकी अनमोदना भी की जाना है उतना पुण्य प्राप्त होता है। यहाँ—इस सूत्रद्वारा तपसाश्रयी अनुमोदना करनेसे भी आत्माको बहुत बड़ा लाभकी प्राप्ति होती है। उतना कार्योंकी अनुमोदना न करनेसे—उनके प्रति उपेक्षाभाव रखनेसे भी पापका बंध होता है। उता ज्ञाँ याका बचन है। दात ही तो पानीको नावे आनम डरा नहीं लगती कि तु यदि पानीका रूपर बदलाना ही तो इलेक्ट्रिक मीनका उपयोग करना पड़ता है, उसी प्रकार धर्मोंका उत्तमन न मिलनेसे या उत्तक कायम अंतराद्वेष ही जानते या उसकी उपेक्षा करनेसे या उसे पूरा-ठीक-ठीक साहकार न मिलनेसे उसका पतन ज्ञानमें देखी नहीं लगती। इसी लिये अनुमोदन भी एक प्रोत्साहन ही है। अनुमोदन करनेवालेको स्वयंकी भी लाभ होता ही है। इस प्रकार श्रेष्ठ कार्योंकी अनुमोदना करनेसे लाभकाय करनेवाला मध्यमाव उच्च भावनासे युक्त बनता है। वही ही इन सब चर्योंकी बचना करनेसे और बदन करनेवालेका अनुमोदना करनेसे भी बहुत ही लाभ होता है।

★ स्वजन सबंधियोंकी याद मन सहजमें कर हो लेता है क्योंकि उनके लिये हमारे दिग्में प्रीति है। उसी प्रकार साम्यकृत्यका सबंध देव गुरु धर्मसे प्रीति करता है। इनसे धनकी याद करनेका मन सहजमें हो जाता है। अत एव मंदिरमें जाकर इन सब सुबुराह चर्योंकी या विनायक देवकी प्रतिमाओंकी (जैसे कि स्वजन-सबंधियोंके साथ टेलिफोनगारा बातचीत करते हैं उस प्रकार) नमन करनेका मन हो जाता है। इस सूत्रसे ऐसे अनक लाभ होते हैं।

★ **काय और अघो लोकमें भी जिनालय है, यह बात यदि जानियोंने हमें इस सूत्रद्वारा न बताई है तो तो हम यह बात कहाँसे जान सकते ?**
माने हमारे लिये यह जानकारी असंभव हो बनी रहती ।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—‘जायति चेदआह’का अर्थ विस्तारसे समझाइये ।

उत्तर—तीनों लोकके भूत, भविष्य और वर्तमानकालके जिनालयों और जिनप्रतिमाओंको इस सूत्रमें वंदन किया गया है । यहाँ रहते हुए भी उन सुदूरस्थ चैत्योंको और वहाँके अलौकिक जिनविंबोंको इस सूत्रमें स्मरणद्वारा वंदन किया गया है । प्रतिदिन यात्रा करना असंभव है, इस लिये घरपर रहकर हा इस प्रकार स्मरणद्वारा ही यात्रा कर सतोष मान लेना पड़ता है । पर शक्य यात्राएँ किये बिना मन ही नहीं मानता इस लिये वहाँ जाकर हा ताथयात्राका लाभ उठानेका मन निसंगत ही हो जाता है ।

प्रश्न २—ऊर्ध्वलोक और अधोलोक तो हमने देखे नहीं हैं, तो क्या वहाँके चैत्योंको श्रद्धासे हा मान लेनेके या कैसे ?

उत्तर—ये चैत्य सुदूर हैं और हमने देखे नहीं हैं, इससे क्या हुआ ? मानिये, कोई भील या गँवार कह दे कि “मैंने अमेरिका देश देखा नहीं है, इस लिये मैं उसका अस्तित्व हा नहीं मान सकता ।” इससे अमेरिका देश ही नहीं है, ऐसा कहा माना भी जाता है ? छत्रस्थोंके बनाये हुए मानचित्र आलेखम अमेरिका होनेसे हम

उसे मान लेते हैं, तब तो ऊर्ध्व और अधोलोकके दर्शक ज्ञानी देव ह, तो फिर उन्हें क्यों न माना जाय ? कोह अनुभवों जानकार कुछ कहे तो आज भी हम कहाँ नहीं मानते ? मौकरके किये हुए कामपर या पत्नीकी पकाई हुई रसोहपर जैसे विश्वास रखा जाता है, ऐसे यदि इन केवलज्ञानियोंके वचनपर विश्वास रखा जाय तो क्या बाधा है ? अज्ञानियोंके वचनमें तो (कहीं गलती हो, ऐसा) शकाको भर स्थान रहता है, किन्तु केवलज्ञाना देवोंके वचनमें शकाको स्थान ही कहाँ ? व्यवहारमें भी अध्यापकपर विश्वास रखनेसे हा विद्यार्थी विद्वान बन सकता है ।

१५ श्री जायत के वि साहू सूत्र

अवमाथ

जायत-जितने के वि-कोह भी साहू-(महाव्रतधारी) साधु महाराज भरह-५ भरतक्षेत्र एरवय-५ ऐरवतक्षेत्र महाविदेहे अ-और ५ महाविदेहक्षेत्रोंमें (ह) मन्वेसि-सब (साधु महाराजों) को तेसि-उनको पणओ-म प्रणाम करता हूँ तिविहेण-तीन प्रकारसे, तान करणोंसे, मन वचन कायासे तिवदह-(मनदह, वचनदह और कायदह-इन) तानों दहोंसे विरयाण-विरत, निवृत्त (उन पूज्योंको)

सुत्रार्थ

जावन के बि साहू—जितने कोह भी (पाँच महाव्रतोंसे युक्त)

साधु महाराज

भरहेरवयमहाबिदेहे अ-५ भरतक्षेत्र, ५ देवतक्षेत्र और ५ महाबिदेहक्षेत्र—इन १५ कमभूमियोंमें (और वहाँ भी आयें क्षेत्रोंमें हा बिहार करते हैं,)

सर्व्वेसि तेसि पणओ—उन सब साधु महाराजोंको मैं प्रणाम करता हूँ ।

तिथिहेण तिदडबिरयाण—(अशुभ कमबध करानेवाले) मन, बचन और काया इन तानोंके दडसे—अशुभ योगसे निवृत्त (परमपूज्य साधु महाराजोंको मैं त्रिकरणसे बदन करता हूँ ।)

भाषा

हाँ द्वीपप्रमाण अनुष्णलोककी केवल १५ कमभूमियोंमें और उनमें भी आयक्षत्रोंके छेड सिफ आयक्षत्रोंमें ही मुनिकी आराधना साधना हो सकती ह । अर्थात् उन आयक्षत्रोंमें ही मुनिराज बिहार करते ह । उन मुनिराजोंका स्मरण कर इस सूत्रसे उन्हें नमस्कार किया गया ह ।

परिमल

★ श्रीजिनेश्वर देव और उनकी प्रतिमाओंकी तरह मुनिराज भी आराम भावनाकी प्रदीप्त करनेमें असाधारण निमित्त साधन होनेसे यह सूत्र जिनचित्तोंमें भी बोलनमें किसी बाधाकी र्थाभा हो नहीं ह ।

★ यह सूत्र जिनान्तर्यामि भगवानके सम्मुख बोलनका विधान ह । इसका कारण यह भी ह कि इस सूत्रद्वारा जिन मुनिकोंकी बरना की जाती ह उनमें सामान्य केवली मुनिराज परमार्थवित्तम्पन्न सन्निधिधान १४ पूर्व्वपर अन्य महात्तानी मुनिराज और महान् धृतयोंका भी

समावेश होता है और जब कि सामान्य जगत् की भी वीर परमस्तिष्ठानों में हस्त निवासमान उन्हें ज्ञान प्राप्त होता है यह योग्य कहा जायगा।

★ मन्त्रोक्त यथावत् और कथितवत् यत्तीनों मन्त्रों की निष्ठा ही हस्तम पादा चतुर्विध है। तिस्रों मायगाधु मन्त्रात्मक है। इनका शास्त्र नहीं माने।

★ पञ्चहस्तों के मन्त्रियों का मन्त्रकार होता जाता है इसमें वेदमन्त्रों की मन्त्रानुसंधान १४ गुण २४ अर्थ सन्निहित मन्त्रात्मक और पुनः साधुओं की मन्त्रात्मकों की भी उक्त होता है। इनका सब मन्त्रमहिमातिथियों के साधन करनेवाला स्वयं ही सत्तु मन्त्रों के बन जाता है।

★ जगत् देवताय यत्ते सुखदय भी तारक माना जाता है। सुख मन्त्रात्मक ही हमें देवताय और धर्मतत्त्वका साक्षात् कराने है। इनका सब मन्त्रों में सुखदय मन्त्र माना जाय इस हेतु यह साधुवर्ग मन्त्र विद्या मन्त्रों में धर्मतत्त्वका विधान होता ही पाठ्य।

★ जित प्रसार देवताओं में इनका मन्त्र और स्वयं वे तीनों उत्ती प्रसार साधनमें (साधनकर्त्री योगसाधिका मन्त्रात्मक मन्त्र) देव सुख और धर्म यत्त तत्त्वतया परस्पर संबंधित (और धर्मतत्त्व माना निश्चितता ही पूरी करानेवाली) है।

★ पादा परमस्तिष्ठानों में साधुना यह समानभाव होनेसे देवों के साधु सुख महाराज भी स्मरण करना उचित समझकर विद्यामन्त्रों में यह सुख धर्मतत्त्वका विधान होता आवश्यक है।

सरल प्र नोत्तरी

प्रश्न १—'जायत के वि साधु' सूत्र किसे लिये है? तान दंड वीनसे और किनके?

उत्तर — १५ कर्मभूमियों के माने बाइ आपके आयुधों में विहार मान सब साधु महाराजों के प्रणाम करने के लिये यह सूत्र

है। मन, वचन और कायाके अशुभ व्यापारस्वरूप तीन दण्ड हैं। साधुमहाराज 'तिदण्डविरयाण'-त्रिदण्डविरत अर्थात् इन तीनों दण्डोंसे रहित (मुक्त) है।

प्रश्न २—'तिदण्डविरयाण' माने क्या ?

उत्तर—मनसे भी बहुत कुछ अशुभ चिंतन होता है और उससे पापबंध भी होता है—यह बात अधिकतर लोग समझते भा नहीं। वाणीसे भी बहुत बुरा विरोध और पापबंध होते हैं। शरीरसे होनेवाले पापोंको तो लोग रोक भी नहीं सकते। इसी लिये यहाँ बताया है कि मुनिराज इन तीनों पापदण्डोंसे अलिप्त रहकर पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं। अतः एव तानों दण्ड बिनाका जावन यथास्त करनेमें बहुत हा महत्त्व गौरव समाविष्ट है। तीन दण्डोंसे पांडित जीवोंको तीन दण्डोंसे मुक्त जावनके साथ अपने जीवनका तुलना करनेकी यहाँ परोक्ष (गर्भित, गूढ़) सूचना है। पवित्र कौन और अपवित्र कौन ?—यह सोचने-देखनेकी इच्छा भी हमें इसी सूत्रसे होता है।

१६ श्री पंचपरमेष्ठिनमस्कार सूत्र

अचयाय

नमो-मैं नमस्कार करता हूँ अहत्-अरिहत सिद्ध-सिद्ध
आचाय-आचाय उपाध्याय-उपाध्याय सर्वसाधुभ्य-(और)
सभी साधु महाराजोंको

सूत्राय

नमोऽहत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य -अरिहत भगवत्,
सिद्ध भगवत्, आचाय महाराज, उपाध्यायजा महाराज और
सभा साधु महाराज-इन पाँचों परमेष्ठियोंको मैं नमस्कार
करता हूँ ।

भावार्थ

यह सूत्र संस्कृत भाषामें नवचार महामन्त्रका सक्षप ॥ १४ पूर्वोक्त
सार नवचार ह और इस छोट से सूत्रमें नवचार भी छोटमें ही-सक्षप
आ जाता ह ।

परिमल

★ नवचार महामन्त्र सभी मांगलिकोंका मस्त ह श्री जन शासनका हाथ
ह ११ अंग और १४ पूर्वोक्त रहस्य ह त्रिकाल शाश्वत ऐसा महा
मन्त्र है सब मन्त्रोंमें श्रेष्ठ ह सभा मनोरथाको पूरा करनेवाला ह
और अत्यन्त श्रमत्कार पुण ह । इस मन्त्रका सक्षप कर पूर्वोक्त
उद्धृत कर भी सिद्धसेन दिवाकरसूरिजी महाराजने यह सूत्र संस्कृत
भाषामें बनाया ह ।

★ नवचारका सक्षप नमोऽहत् सूत्र ॥ उसका सक्षप अक्षिआउता
ह और उसका भी सक्षप ॐ कार ह इस लिये ॐ 'कार'
भय स्वरूप और मन्त्रबीज ह ।

★ दुनियामें ये पाँच परमेष्ठि ही सारभूत हैं, जिन शासनका मूलाधार है और विरतिका मूल स्थान भी ये ही हैं—ऐसा यह सूत्र साफ-साफ बतलाता है।

★ केवल मुश्किलें ही आराधक इन पाँच परमेष्ठियोंके बिना सारी दुनियामें दूसरा कोई भी हमारे लिये नमस्कार करने योग्य नहीं है, ऐसी जानकारी यह सक्षिप्त सूत्र हमें देता है। इनके अतिरिक्त दुनियामें सब अस्त हो है मान मुक्ति साधनके सिवा अन्य किसी भी प्रकारकी प्रवृत्ति भव भ्रमण करानेवाली (बढानेवाली) है—ऐसी गिना यह सूत्र हमें परोक्षतया देता है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—‘नमोऽर्हत्’ सूत्रके रचयिता कौन हैं? सूत्रके बारेमें आप क्या जानते हैं?

उत्तर—यह सूत्र माने नवकार महामन्त्रका संस्कृत भाषामें किया हुआ संक्षिप्त रूप। इसमें पाँचों परमेष्ठियोंको नमस्कार किया गया है। सम्राट श्रीविक्रमादित्य महाराजके प्रतिबोधक पूज्य श्री सिद्धसेन दिवाकरचूरास्वरजी महाराज इस सूत्रके रचयिता (माने दृष्टिवादमेंसे उद्धृत कर पेश करनेवाले) हैं।

प्रश्न २—स्त्रियोंको ‘नमोऽर्हत्’ बोलनेकी मनाही क्यों है?

उत्तर—यह सूत्र दृष्टिवादमेंसे उद्धृत किया हुआ होनेसे बोलनेकी मनाही है। ऐसा नियम है कि सा जातिको दृष्टिवादके सूत्र बोलनेका अधिकार नहीं होता, इसी लिये स्त्रियोंको ‘नमोऽर्हत्’ सूत्र बोलनेका मनाहा है।

१७ श्री उवसग्गहर स्तोत्र

अवधाय

उवसग्ग—(जिनके शासनमें भक्तोंके) उपमर्गोंका, संवर्गोंका
 उपद्रवोंका हर-नाश करनेवाला पास-पास नामक
 (जिनका भक्त सेवक है, ऐस) पास—श्रीपादनाथ भगवान्
 खदामि—मैं वदन करता हूँ कम्मघण—आठों कर्मोंके समूह
 मुपक—(जो प्रभुजी) मुक्त है विसहर—विषको धारण करने
 वाले सौंपके घिस-घिपका (उद्यानामें मिथ्याद्वयरूपा विषका म
 निन्नाम—जिनके प्रभावसे नाश होता है मगल—और म
 कल्लाण—एव सुगता वृद्धि करनेवाले कल्याणका आवास—
 आवास, मूलस्थान या घर है [१] विसहरफुल्लिगमत—‘विष
 स्फुल्लिग’ नामक भत्रको कठे—कठमें, गलेमें, हृदयमें धारो
 पारण करता है माने प्रतिक्षण स्मरण करता है जो—जो सया—स
 निरंतर मणुओ—मनुष्य तस्स—उसके गह—मंगल, शनै
 आदि पीटा देनेवाले यह रोग—रोग मारी—महापारी, प
 दुट्ठ—दुष्ट जरा—ज्वर, मुग्गार जति—होते हैं उवसाम—
 शात, नष्ट [२] चिट्ठउ—रहो दूरे—दूर मतों—यह मेत्र
 उस मेत्रका प्रभाव तो सुज्झ—आपको पणामो—(कैवल्य म
 पूर्वक) किया हुआ प्रणाम वि—भो बहुफलो—बहुत ही उ
 फल देनेवाला होइ—होता है नर—(भिर चाहे प्रणाम करनेवाले
 मनुष्य हो या तिरिएसु—तिर्यंच (मनुष्य या तिर्यंच गति
 प्राप्त हुए) जोवा—आव (भा) पावति—पाते न—न

दुःख-दुःख दोगुन्ना-दुःखति या दारिद्र्य (माने उत्तम सुखोंको प्राप्त करते हैं।) [३] तुह-आपके सम्मते-महार्ह सम्यक्त्व रत्नको लब्धे-पाकर चितामणि-(जो शुद्ध देव, गुरु और धर्ममें यद्वास्वरूप सम्यक्त्व-रत्न) चितामणि रत्न कम्पपायव -या कल्पवृक्षमे भा अद्भुत-अभ्यधिक, ज्यादा कामतवाला है (यह मिलनेके बाद) पावति-पाते हैं अविघ्ने-विना विघ्नोंके अर्थात् शांति हा (विघ्न बाधा आनेसे ही देरा होती है।) जीवा-भक्तिसम्पन्न जीव अयरामर-अजर-अमर माने जहाँ जरा और मरण नहीं है, ऐसे सर्वश्रेष्ठ मोक्ष नामक ठाण -स्थानको [४] इज-इस प्रकार सयुओ-मेरे द्वारा स्तुति किये हुए महायज्ञ-जिनका विपुल यश तीनों भुवनोंमें फैला है, ऐसे ओ यशस्वी प्रभुजी! भक्ति-भक्तिके द्भर-समूहसे निदभरेण-सपूर्ण भरे हुए हियण-हृदयसे, दिलसे ता-अतः इस लिये देव! -हे देव! विज्ज-मुझे दाजिये बौहि-बोधि, सम्यक्त्वरूपी रत्न भवे भवे-इस जन्ममें और आगेके जन्मोंमें, हरके जन्ममें पास! -हे पार्वनाथ भगवान! जिणचद! -सामान्य केवलीरूपी तारागणमें चद्रकी तरह शोभनेवाले [५].

सूत्राय

उयसगहर पास-जिनके शासनमें भक्तजनोंके अनेक सक्तोंका नाश करनेवाला पाम्वनामक यक्ष जिन प्रभुका सेवक है (माने यह यक्ष पाम्वनाथ भगवानका और भगवानके भक्तोंका भी भक्त है।)

पास वदामि कम्मघणमुक्क—उन समस्त कर्म-बधनोंसे मुक्त
श्रापार्चनाथ भगवानको भज नदन करता हूँ ।

विसहरविसनिद्रास—सोंपके विषका (और मिथ्यात्वरूपी विषका
भी) देशनामूतसे नारा करनेवाले

मंगलकल्लाणआवास—मंगल और कल्याणके धामस्वरूप
भगवान हैं, उनको [१]

विसहरफुल्लिगमत—‘विषधस्फुल्लिग’ नामक मंत्र जो श्रीपादनाथ
प्रभुजाके नामगर्भित चमत्कारोंसे परिपूर्ण है, उस मंत्रको
कठे घारेइ जो सया मणुओ—जो पुरुष या स्त्री अपने हृदय
निरंतर धारण करता है माने जो इस मंत्रको हरदम धारण
रहता है,

तस्स गहरोगमारो—(यदि) उसे राहु, मंगल या शनैश्चर जैसे
ग्रह पीडा पहुँचाते या हानि करते हों, कोई राग या महामा
प्लेग हो गया हो

डुटठजरा जति उवसाम—या दुष्ट ज्वर (जैसेकि अमधिका, वा
का) हो तो भा इस मंत्रके स्मरणसे शांत हो जाते हैं । [

चिट्ठडूरे मतो—मंत्रके प्रभावका बात तो दूर रहे, यह
अपुत्र है हा । (चूँकि मंत्र और औषधियोंका चमत्कार बहुत
गहरा होता है, अतः मंत्रका चमत्कार दूर ही रहे ।)

वुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ—(पर हे अशरणोंके शरण
अनाथोंके नाथ ! और हे अनंत प्रभावशाली प्रभो ! म
राधनका फल-प्रभाव प्रगट है हा किन्तु बिना कुछ क

उठाये, बिना आराधना किये, आपके मात्र नामस्मरणसे या) आपको भक्तिभावसे एक हा प्रणाम करनेसे भी बहुत ही लाभ होता है। बहुफल माने सौभाग्य, आरोग्य, धन, धान्य, श्री, पुत्र, वैभव, चक्रवर्ति इद्र आदिका ऋद्धि आदिकी प्राप्ति।

नरतिरिणसु वि जीवा-मनुष्य और तिर्यगगतिके जीव भी पावति न दुःखदोगच्छ-दुःख और दारिद्र्य-दुर्दशाको प्राप्त नहीं होते। (जीव जहाँ कहीं भी मानव या तिर्यग गतिमें भी गया हो, वहाँ भी इस भक्तिभावसे किये हुए प्रणामके प्रभावसे यथाशक्य सर्व सुखोंको प्राप्त करता है।) [१]

सुह सम्मत्ते लद्धे चित्तमणिकप्पपायवन्महिण-मनोवाणित पूर्ण करनेवाले चित्तमणिरत्न या कल्पवृक्षसे भी अभ्यधिक माने मोक्षतत्त्वा इच्छा पूर्ण करनेवाला (सुदेव, गुरु और धर्मपत्नी अथवा श्रद्धा स्वरूप) आपका सम्पद्दर्शन (सम्पत्त्य) रत्न पानेके बाद

पावति अविग्गेण-किसी भी अतराय, कठिनाई या विघ्न-बाधाका रकावट बिना पाते हैं।

जीवा अजरामर ठाण-भवी जीव (जरा और मरणसे रहित ऐसे) अजरामर मोक्षस्थानको (पहुँचते हैं।) [४]

इम सयुओ महायस !-हे महायशस्वा पाम्वनाथ भगवान् ! इस प्रकार मने आपकी स्तुति की।

भक्तिव्भरनिव्वभरेण हिणएण-भक्तिके उद्रेकसे परिपूर्ण हृदयसे (नितात भक्तिभावसे)

सा देय ! दिज्ज बोहि-अत हे देवाधिदेव ! मुझे योधिर्माज
गमवित् दीजियेगा । (सम्पत्त्वसे मोक्ष मिलता है, इस
लिये मैं सम्पत्त्व ही चाहता हूँ ।)

भये भये पास जिणच्च । -(श्रेय करनेवाले, पिप्पका नाश
करनेवाले, परणेन्द्र और पद्मावतीद्वारा पूजित, परम वाग्णिज
और) सामान्य केरलियोंमें चद्रमा समान है श्रीपार्श्वनाथ
भगवान् ! इस जन्ममें और आगेके जन्मोंमें (इस मन्त्रित्वे
प्रभावसे मुझे सम्पत्त्व दीजियेगा ।) [५]

भाषा

इस सूत्रमें श्रीपार्श्वनाथ प्रभुको महिमाका वर्णन किया गया है ।
सकटक समय यह स्तोत्र २१ बार पढ़नेसे बहुत ही फायदा होता है । यह
स्तोत्र महामन्त्रमय है । जहाँ जाता है कि इस सूत्रमें पहले सात गाथाएँ
थीं, पर इसका रचियता १४ पुनःपर श्रीभद्रबाहुरवाभोजी महाराजने स्वयं
ही कई कारणोंसे आठमें दो गाथाओंका तिरोभाव कर दिया था । इस
सूत्रमें सम्पत्त्वकी प्राप्तिपर बहुत ही महत्व दिया गया है ।

परिचल

★ किता भा जीवका दुःख बारिदण सकट जन्माई आदिकी इच्छा
नहीं होती फिर भी कुछ न कुछ उसका पीछे रुपा हुआ रहना
ही है । अब उनसे छटकारा पाकर लिये आपाधतापजीकी प्रणाम
करनेका बाद विघ्नपरस्फुल्लिभ मंत्र हरबम रटनेका परात विधान
इस सूत्रमें किया है ।

★ समर्पितकी प्राप्ति होना माने मन्त्रित्व प्रयाणकी दिना तय होना-
मानकः और ज्ञानवाला राजा मिल जाना । धीरे धीरे आत्माकी
सुयोगोंकी प्राप्ति होना, महार्थमहत्तम स्वयं प्राप्त किये हुए
सम्पत्त्व रत्नकी निचल रत्नके लिये योग्य अवसर और परि-

स्थितिके लिये आत्माका प्रयास करना, चाहिस्ते किन्तु स्थिर चित्तसे प्रयाण करते करते मोक्षके निकट निकट पहुँचते रहना और अन्तमें मुक्ति प्राप्त करना — यह भाव बतलानके लिये चौथी गायामें मुक्ति और सम्पत्त्वका 'कायकारण भाव' बताया गया है। समर्पण कारण है और मुक्ति काय है।

★ चूँकि पाप २३ तीव्रकर देवीकी अधिष्ठायिका देवियोंका ध्यान हो गया है पर श्रीपारवनाथ प्रभुजीकी नासन रक्षिका देवी (पद्मावती) अभी भी स्वस्थानमें विद्यमान है, जहाँ जहाँ श्रीपारवनाथ प्रभुजीकी प्रतिमाएँ होती हैं वहाँ वहाँ समस्तकार पूण घटनाएँ सुनी जाती हैं। स्वयं अभी अपने स्थानमें विद्यमान होनेसे पद्मावती देवी प्रभुजीका उपकार मानकर उनके भक्तोंकी मदद करती है। भगवानपर अर्पित धृष्टा और अमृत पूज्यभाव रखनेवाले उनका अनेक सेवकोंमेंसे (शिष्योंमेंसे) जो जो देव गतिकी प्राप्त हुए हैं वे सब देव भी पारव प्रभुके भक्तोंकी गुणरूपस बहुत ही सहायता करते हैं — उन्हें सन्तुष्ट करते हैं उनका मनोवाञ्छित पूण करत हैं और धर्मापना करनेकी अनुरूपता कर देते हैं। इसी लिये कई लोग नवकारकी तरह 'जवसागहर' की माला करते हैं।

★ समर्पितकी प्राप्ति और उसकी प्राप्तिके बाद उसे निमत रखनेका प्रयास — इनपर इस सूत्रमें बहुत ही महत्त्व दिया गया है। इसी लिये किसीकी सम्पत्त्वका लाभ करानेमें विपुल पुण्यकी प्राप्ति होती है, यह बात भी यहाँ स्पष्ट होती है।

★ मूर्तिके दानसे भी समर्पितकी प्राप्ति होती है इसी लिये अनेक भक्त दूर दूरकी सावधानाएँ करते हैं मूर्तिजीकी अजन्मालाका ओर मूर्तिजीकी प्रतिष्ठा भी करात हैं।

★ सम्पत्त्वकी प्राप्तिके बाद श्रीवोतराग प्रभुजीपर अस्मिभाव बृद्ध होता है और उस भक्तिसे मुक्ति प्राप्त होती है।

★ इतन सब आपावनाथ प्रभुजीका समस्तकारपूण तीव्र मोक्ष होनपर भी मूर्तिकी न माननवा बगैर इम दुनियामें अस्तित्व है, यह एक बात ही आश्चर्यकी बात है।

★ मंत्रबल ही आध्यात्मिकबलका एक पुरस्कृतत्व है, ऐसा इस मंत्रसे सिद्ध होता है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—‘उपसंग्रह’ शब्दका अर्थ बताइये।

उत्तर—उपसंग्रह माने उपसर्गोंको विघ्नोंकी और हर माने हरनेवाला, दूर करनेवाला। अर्थात् किसी भी विघ्नका नाश करनेवाला।

प्रश्न २—उपसंग्रह स्तोत्रका रचना कैसे समयमें हुई? उसके रचयिता कौन हैं?

उत्तर—श्रीभद्रबाहुस्वामाजाके भाई धराहमिहिर उज्जयिनी नगरमें एक विद्वान् ब्राह्मण थे। वे मरनेके बाद व्यतर (भूत, पिशाच, राक्षस आदिको यतर कहते हैं।) हुए और उन्होंने द्वेषभावसे श्री जैन सधमें महामारी प्लेग आदि उपद्रव फैलाये। उस समय श्रीसधकी विनतिसे १२ पूर्वधर श्रीभद्रबाहुस्वामा महाराजने उपद्रवोंके निवारणार्थ इस स्तोत्रका रचना की। स्तोत्रसे अभिमतित जल छिड़कनेसे रोगका नाश हुआ और सर्वत्र शांति हो गई।

१८ श्री जय वीरराय (प्रायगा) सूत्र

अवयाय

जय-जय हो वीरराय !—हे वात्तराय ! जगगुरु !—
हे त्रिभुवनको सच्चा मार्ग बतानेवाले विश्वके गुरुदेव ! हौउ-

प्राप्त हो मम-मुझे तुह-आपके पभावओ-प्रभावसे भयव^१-
 भगवान् । भवनिच्छेओ-इस असार ससारसे निर्वेद माने वैराग्य
 उदासीनता या अरुचि भग्गणुसारिया-भार्गानुसारित
 इदृक्फल-मोक्षरूपा वाञ्छित फलकी सिद्धि-प्राप्ति [१] लोभ
 विरुद्धच्चाओ-लोकमें भी जो जो मिथ काय कहे जाते हैं
 उनका त्याग गुरुजन्मपूजा-गुरु-महाराजोंकी एव माता पितृ
 आदि गुरुजनोंका पूजा (विनयादिसे बहुमान करना) परस्पर
 करण छ-और निरे स्वायको छोड़ परार्थ माने परीपकार भ
 करनेका महान् गुण सुहगुरुजोगो-उपकार करनेवाले, चारित्रिके दात
 और सदुपदेश करनेवाले पवित्र गुरु महाराजका सुयोग (प्राप्ति
 तत्त्ववर्ण-उनके वचनोंका (गुरु महाराज भी भगवानकी आज्ञाओं
 विरुद्ध नहीं कहते, अतः उनका वचन भी प्रमाण है ।) सेवणा-
 सपूर्णतया पालन करनेकी तैयारी आभव-जीऊंगा तबतक, सां
 जीवनभर अखड़ा-अखडित रीतिसे (एक भा आज्ञाका धोखा
 भी विरोध या भग किये बिना) [२] चारिज्जड़-निषेध किय
 गया है जड़ वि-यद्यपि नियामवधन-निदान करनेका (तप
 पूजा या अन्य किसी धार्मिक क्रियाओंके बदलेमें पेटिक फल
 मोंगनेका इच्छा करना हा निदान [नियाम] है ।) तुह-आप
 समये-सिद्धान्तोंमें, आगमग्रथोंमें तह वि-तथापि, तो म
 मम-मुझे हुज्ज-होवे, प्राप्त हो सेवरा-आज्ञाका पालन
 पूजा भक्ति भवे भवे-इस जन्ममें और आगेके जन्मोंमें, हरे
 जन्ममें तुम्ह-आपके चलणाण-चरण कमलोंकी (सेवना) १०

दुखखलओ—(मुझे दुःख अप्रिय है, इसलिये) दुःखोंका नाश,
 अतः या क्षय कम्मखलओ—जो कम चार गतियोंमें भ्रमण कराते
 हैं, उनका सर्वथा नाश समाहिमरण—मरणके समय समाधि
 (जिससे दुर्गतिके दुःखोंका अनुभव नहीं करना पड़ता)
 बोहिलाओ—सम्यक्त्वका प्राप्ति सपञ्जड—प्राप्त होवें मह—
 मुझे एअ—ये सब तुह—आपको नाह!—हे नाथ! प्रणामकरणेण—
 भक्तिभावसे किये हुए इस प्रणामस [४] समयमगल—सभी
 मंगलोंमें मागल्य—जो मंगल श्रेष्ठ है सबकल्याण—सभी
 कल्याणोंका कारण—मूल कारण है प्रधान—प्रधान श्रेष्ठ है
 सबधर्माणा—सभी धर्मोंमें जन—श्रीजिनेश्वर (तार्थकर) प्रभुर्जाका
 जयति—विजयी है शासन—श्रीचतुर्विध सघ(साधु, साध्वा, श्रावक
 और श्राविका)रूपी शासन, बुद्ध, सुगुप्त और सुधर्मकी सुदूर
 दूरसे सम्पन्न होनेवाली आराधना हा 'जैन शासन' है । [५]-

सूत्राय

जय धीयराय! जगगुरु!—हे धातराग भगवान! समूचे विश्वका
 कल्याण करनेकी भावनासं उपदेश देकर ससार समुद्रसे पार
 लगानेवाले ओ त्रिलोकके गुरुदेव! आपका जय हो ।

होउ भम तुह पभावओ नयव!—ह भगवान! (मैं आपकी
 शुद्ध भक्ति भावसे यह प्रार्थना करता हूँ, इसके फलस्वरूप)
 आपके अचिन्त्य प्रभावसे मुझे ये गुण शीघ्र ही प्राप्त होवें ।
 माने आप मुझे ये गुण दीजियेगा ।

भवनिव्वेओ—(१) जन्म मरण आदि दु खोंसे परिपूर्ण भयावने और असार ऐसे इस ससारसे वैराग्य (अरुचि)

मागणुसारिया इट्ठफलसिद्धि—(२) मागानुसारिता—मोक्षकी ओर जानेका योग्यताके साधनभूत ३५ लक्षण (गुण) स्वरूप मागानुसारीपन (३) मोक्षप्राप्तिका मेरा जो उत्कट अभिलाषा है, उसकी सिद्धि (प्राप्ति) [१]

लोगविरुद्धच्चाओ—(४) इस लोकमें और परलोकमें (परलोकके लिये) भी जो जो काय निध और निषिद्ध माने गये हों, उन सब लोकविरुद्ध कर्मोंका त्याग

गुरुजणपूआ परत्यकरण च—(५) माता, पिता, विधागुरु आदि बड़े, बूढ़े और आदरणीयोंका पूजा—सेवा भक्ति, आदर, विनय, बहुमान आदि (६) अपना स्वार्थ छोड़कर भा दूसरे किता योग्य व्यक्तिका काय करनेका परोपकारका गुण (स्वयं दु ख उठाकर भा दु खाका मदद करना)

सुहगुरुजोगो—(७) शुभगुरुयोग—महाव्रतधारा, नि स्पृही, नि स्वार्थी, परमोपकारा और अत्यंत पवित्र ऐसे गुरु महाराजोंका सुयोग

तव्वयणसेवणा आभवमखडा—(८) संपूर्ण जीवनपर्यंत अखंडित रातिसे (एकाध छोटा आज्ञाका भा उल्लंघन या भग किये बिना) उन सुगुरुदेवके (जो जिनाज्ञाके विरुद्ध कभी भी उपदेश नहीं करते ऐसे परम पवित्र और नि स्पृह गुरु महाराजके) वचनोंका सेवा—पालन करने... गुण मुझे दाजियेगा ।) [२]

चारिज्जइ जइ वि नियानप्रघण-(९) ययपि णिदान वाघनेका
(वरुका) णिपघ किया गया है,

वीथराय ! तुह समये-हे वीतराग भगवान ! आप हा के
आगमग्रथोंमें (मिच्छा-तोंमें)

तह वि मम हुज्ज सेवा-तो भी (मैं आज इतनी प्रायना-
वाचना जरूर करूँगा । उसे यदि णिदान कहा जाय तो
भी इतना मैं विवश होकर माँग हा लेता हूँ कि) मुझे सेवा-
भक्ति प्राप्त हो

भवे भवे तुम्ह चलणाण-हरेण ज-ममें आप जैस वीतराग
देवाधिदेवोंके ऋण-कमलोंका (मुझे सेवा-भक्ति प्राप्त
हो ।) [३]

दुक्खवखलओ कम्मवत्तओ-(१०) दु राँवा मपुण नाश हो
(११) कर्मोंका सबधा नाश हो

समाहिमरण च बोहिलाओ अ-(१२) मरणके समय समारकी
नम्वर वस्तुआँपर भमत्व मोह ७ रहकर मन समता-
समभावमें रहे, वैसा समाधि मरण (जिसे पंडित मरण भी
कहते हैं, यह) और (१३) सम्यक्त्व रत्नका लाभ (और
वह रत्न सदैव निमल रहे वैसी अनुकूल परिस्थिति भा)

सपज्जउ मह एअ-ये सब गुण मुझे प्राप्त हों

तुह नाह ! पणामकरणेण-हे नाथ !

प्रणाम कर रहा हूँ,
सब गुण दाजियेगा

सबमगलभागल्य—सभी मगलोंमें जो मगल-श्रेष्ठ है, (जो मगलोंका भी मगल है),

सबकल्याणकारण—दुनियामें कल्याणमयी और सुख पहुँचाने वाला जो जो वस्तुएँ ह, उन सब कल्याणकारा वस्तुओंका जो प्रधान और प्रथम कारण (मूल स्रोत) है,

प्रधान सर्वधर्माणा—और जो (अहिंसा, सयम और तपस्वरूप होनेसे) सभी धर्मा में प्रधान—श्रेष्ठ है, ऐसा

जन जयति शासन—श्री जिनेश्वर देवोंद्वारा स्थापित और आगम, चैत्य तथा (साधु—साध्वी—श्रावक—श्राविका—स्वरूप) श्रीचतुर्विध संघरूपी जैन शासन सर्वत्र विजयशाला है। [५]

भावाय

देवाधिदेव धीतराम भगवानक पास जो अनक प्रकारकी याचनाएँ करनी होती ह, उनकी निम्ना इस प्रायना सूत्रमें दी गई हैं। प्रभुजीकी प्रतिमाकी भाव भक्तिते जो नमस्कार किया जाता ह उसका क्या क्या फल मिल सकता ह (मित्रता चाहिये)—यह भी इस सूत्रमें बतलाया गया ह। श्राव्य वदन और स्तवनक बाद दोनों हाथ ललाटक पास जोड़ कर यह प्रायना सूत्र ओलनकी विधि ह। चैत्य वदनमें जिन स्तुति की जाती ह, स्तवनमें देवाधिदेव धीजिनेश्वर भगवताके आदेश मुर्णोंका गान होता ह और प्रायना (जय दीधराय सूत्र)में भक्तिक फलस्वरूप याचनाएँ की जानी ह। इस सूत्रका दूसरा नाम ‘प्रणिधान सूत्र’ भी ह।

परिमल

★ अन्न वस्त्र घर औषध व्यावहारिक अध्ययन धन आदि देकर किसीकी सहायता करना द्रव्य उपकार’ ह और भोजनका सत्प्रमाण बतलाकर उसका उपदेश देना यह ‘भाव उपकार’ ह। द्रव्यसे भाव अनन्तगुना अधिक लाभ देनेवाला ह।

- ★ सतारो आवमो सतारिपोंके पास क्या क्या माँगता ह यह तो इस दुनियामें निरन्तर प्रतिदिन देखन जानन (समझने) और सुन मिलता ही ह पर बीतरागियारे पास क्या क्या माँगना चाहिये यह इस जय धोयराय सूत्रसे हम जान सकते ह ।
- ★ गायन माने आत्माकी उन्नतिके लिये स्थापित एक महान तरका या साधना ही सत्यमार्ग । अथ गायन साधनाय थोड़े ही दिनों तक रहते ह, जब कि आत्मगायन अनादि अनन्त ह । अरेले भगवान् श्रीमद्वासीर देव ही का गायन २१ ००० वर्षोंतक रहनेवाला ह ।
- ★ बीतराय मान क्यों ? व क्या देत ह ? उनसे पास क्या क्या माँगना चाहिये ? मोक्ष मान क्या ? बीतराय अवस्था यह क्या ह ? — इन सब बातोंको समझना मीका हमें इस सूत्रमें प्राप्त होता ह ।
- ★ देव-गतको सेवा माता पिता आदि गुरुजनोका बहुमान परोपकार करनेकी वृत्ति तारक और धृष्ट गुरु महाराजोंका सुयोग भिन वचन और गुरुवचन पालन करनेकी भावना आदि सबगण जो भव जीवामें देख जाते ह वे सब चीनीस अतिशय सत्पन्न श्री तापका भगवत्प्राप्तोकी भवितके प्रभावसे ही होते ह — ऐसा इस सूत्रसे साफ साफ मालूम हाता ह ।
- ★ पापका स्वीकार करना सच्चे दिलसे पापका वचासाप करना सभी जीवोंको समापना देना, अपन और दूसरोंके पामिष गुभ कर्मोंकी अनमोदना करना अरिहत सिद्ध साधु और भ्रम — इन चारोंका शरण स्वीकारना प्रत्याख्यान करना आदि गुभ भावनाओंको समाधि कहा जाता ह । समाधि सत्यमार्गकी और ले जानवाली हीनसे उसकी याचना करना उचित — योग्य ही ह ।
- ★ सद् आत्मा भुद्र याचना ही करता ह और वह भी सामान्य (छोट) व्यक्तिके पास, पर बड़े (गुप्त साध) महान और मानि भगवदास पास बड़ी याचनाएँ ही करने ह । ये बड़ी-बड़ी याचनाएँ इच्छाएँ कमोहोती ह — इस मानकी हमें इस सूत्रसे शिक्षा मिलती है ।
- ★ लोकोत्तर और पारमार्थिक परोपकार करना एवं गृह सत्यमार्गदर्शक उपदेश करना ही उन्नति करानेवाले गुरुका वास्तविक लक्षण होनेसे श्रीतीर्थकरदेवोंका हृष परमगुरु कह सकते ह और वह योग्य भी है ।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—‘जय वायराय सूत्र’ क्या बोला जाता है ? उसका संक्षेपमें अर्थ बताइये ।

उत्तर —चैत्यवदनमें स्तवन बोलनेके बाद यह सूत्र बोला जाता है । इस सूत्रमें जन्म जन्मान्तरमें श्रार्तापंथकर प्रभुजीकी सेवा भक्ति और अनेकानेक याचनाएँ की गई हैं ।

प्रश्न २—‘जय वायराय सूत्र’ बोलते समय किस प्रकार बैठना चाहिये ?

उत्तर —चैत्यवदन करते समय बाँपों घुटना ऊँचा रक्खा जाता है । जय वायराय बोलते समय मुक्ताशुक्ति मुद्रामें (दोनों हाथ कमलके ढोंडेके समान जोड़कर ललाटेके पास रखना और दोनों कुहनियोंको कमलनालके सदृश सटाकर सरल रखना—यह हुई मुक्ताशुक्ति मुद्रा) दोनों हाथ रखने चाहिये । आषा सूत्र बोलनेके बाद ‘आभवमखड़ा’ बोलते समय हाथ नासिकातक नाचे लिये जाते हैं ।

प्रश्न ३—निदान माने क्या ? निदान करनेकी मनाहा क्यों की गई है ?

उत्तर —कई हुई धार्मिक क्रियाओंके बदलेमें भगवानके पास कुछ ऐहिक सुखप्राप्तिका इच्छा करना ही निदान या निषाण है । शास्त्रोंमें निदान करनेकी मनाहा इस लिये

की गड़ है कि उसका मतलब होता है—ऐसी मोक्षप्रदान करनेवाली और उच्च धार्मिक क्रियाओंको बहुत दुर्लभ ऐसे ऐहिक सुखोंके लिये बेचना । ‘जय वीर’ सूत्रमें याजिनेरवर भगवत्की जन्म-जन्मान्तरमें भक्ति आदि जो याचनाएँ की गई हैं, उनमें धार्मिक क्रियाओंको बेचनेवा भावना नहीं है, अपितु क्रियाओंको विकसित करनेका हा शुभ आशय है।

प्रश्न ४—भवर्ती उद सांनता और मागानुसारीपन माने क्या

उत्तर —(१) भवर्ती उदामानता (भवर्निर्देश) —संसारकी मनुष्यपस्तुओंपरने माह आसक्ति कम होना (२) मागानुसारीपन—(अ) सामान्य मागानुसारीपन—धर्मके मागानुसार जातेका योग्यता प्राप्त करनेके आचारके ३५ नियमोंका पालन करना (आ) विशिष्ट मागानुसारीपन—सम्पदशापूरक विरतिके आचाराका पालन करना।

प्रश्न ५—समाधि मरणका याचना करनेका क्या जहरत है

उत्तर —यहाँ मरणका नहीं, किन्तु मरण समय समाधि अवस्थाका याचना का गड़ है । जो पैदा होता है मरता है, परंतु मरण समयके जीवके विषय अगुमार आगामा (भविष्य) के जन्मकी यानिका निश्चित होनेके कारण यदि मरणासन्न जाव हुए चिन्तनमें तो वह किसी पुनर्जन्मके आयुष्यका बंध करता है । मरण-समय समाधि समताका अवस्था रहे तो नि

सुगतिका प्राप्ति होती है और उत्तरोत्तर उत्तम गतिकी प्राप्तिसे मुक्ति निकट आता है—यही कारण है, यही आत्मोन्नतिका उत्कट अभिलाषा है कि जिससे समाधि-मरणकी याचना का गई है ।



१९ श्री अरिहंतचेडयाण (चत्थस्तव) सूत्र

अर्थ

अरिहंतचेडयाण—(सबसे जिनेश्वर देवोंका प्रतिमाए जहाँ स्थापित हुई हैं, ऐसे जिनालय भा पूज्य होनेसे उनके लिये तथा) श्रीअरिहंत भगवत्तोंकी प्रतिमाओंके सम्मुख करेमि— मैं करता हूँ काउत्सग—पायोत्सग (शरास्पर्शकी ममताका त्याग कर समतापूर्वक धम ध्यानमें रहूँगा ।) [१] वदणवत्तियाए— वदनका भावनासे पूअणवत्तियाए—पूजा, सेवा-भक्तिकी भावनासे सक्कारवत्तियाए—सत्कार करनेकी भावनासे सम्माणवत्तियाए—स्तवन कीर्तन आदिसे इदयद्वारा (सच्चे दिलसे, हार्दिक) सम्मान करनेका भावनासे बोहिलाभवत्तियाए— शुद्ध देव, गुरु और धमपरकी श्रद्धास्वरूप बोधिबीज (सम्पक्त्व) की प्राप्तिकी भावनासे निरुवसगगवत्तियाए—संकटों और विघ्नोंका नाश कर किसाँ उपसगके बिना आराधना (सेवा भक्ति) करनेकी भावनासे या जहाँ उपसगोंका उपद्रवोंका नाम निशान नहीं है, ऐसा मुक्ति प्राप्त करनेकी भावनासे (भगवानकी मूर्तिके सम्मुख

मैं काउत्सग करता हूँ ।) [२] सद्भाए—(प्रतिक्षण वृद्धिगत होनेवाली) श्रद्धासे मेहाए—(अधिकाधिक विकसित होनेवाली मेधा—निमल बुद्धिसे विईए—(अधिकाधिक बढ़नेवाला) पूति (धैर्य)—स्थिर चिन्तनयुक्त या कुशलता एव सहनशीलता—पूर्ण धैर्यसे धारणाए—(प्रतिक्षण बढ़नेवाला) धारणा—निमल स्मृतिसे अनुप्पेहाए—(अरिहत भगवतोंके स्मरणसे बढ़नेवाले) तात्त्विक चिन्तनसे बढ्ढमाणोए—बढ़नेवाला, वृद्धिगत होनेवाला (ऊपर कहा हुआ पाँचों भावनाओंसे युक्त होकर) ठामि—मैं करता हूँ काउत्सग—काउत्सग कायोत्सग ('निर्व्वसग्वत्तियाए' तब 'करोमि काउत्सग' का और 'सद्भाए' से आगे 'ठामि काउत्सग' का संबंध है ।) [३]

सूत्रार्थ

अरिहतचेइयाण करेमि काउत्सग—श्री अरिहत भगवतोंके चैत्य प्रतिमाओंके सम्मुख (वदन, पूजन, सत्कार आदि क्रियाओंके फलमें काउत्सगक्रियाके समय भी पूर्ण आदग्भाव होनेसे उन क्रियाओंसे प्राप्त होनेवाले लाभ-फल प्राप्त करनेके लिये) मैं शुभ ध्यानमें रहकर काउत्सग-कायोत्सग करता हूँ । [१] षवणवत्तियाए पूअणवत्तियाए—शुद्ध (निमल) अन्तःकरणसे श्रावार्थकर भगवतोंके चैत्योंको और उनका प्रतिमाओंको वंदन करनेसे जो फल प्राप्त होता है, वह फल प्राप्त होनेकी भावनासे, (इसी प्रकार पूजा, सत्कार आदिमें स्पष्टार्थ समझना चाहिये ।) प्रभुजाका पूजाकी भावनासे,

सत्कारवत्तियाए सम्मानवत्तियाए—आभूषण, वस्त्र आदिसे सत्कार और स्तवन, कार्तन आदिसे सन्मान—(करनेसे जो फल प्राप्त होता है, वह फल इस काउस्सगसे मिलने) — का भावनासे,

योहिलाभवत्तियाए निरुवसग्गवत्तियाए—सम्पत्त्वका प्राप्ति सम्पत्त्वमें स्थिर होनेकी भावनासे एव बिना किसी कष्ट या दुःखके जिनधर्मकी प्राप्ति होनेका भावनासे या बिना किसी उपसा-उपद्रवके धमाराधन हो, इस लिये अथवा उपद्रवरहित एव संपूर्ण सुखोंसे परिपूर्ण मोक्ष स्थानकी प्राप्तिकी भावनासे (म काउस्सग करता हूँ।) [२]

सद्धाए मेहाए धिईए—(जिन प्रकारोंसे काउस्सग सफल—पदार्थ फल देनेवाला होता है, उन प्रकारोंको—करणोंको बताया जाता है।) प्रतिक्षण वृद्धिगत होनेवाली श्रद्धासे, निर्मल बुद्धिसे, धृति धैर्यसे (माने चित्तको ठाँवाझोल चषल किये बिना, स्थिरचित्तसे),

धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए—अधिकाधिक बढ़नेवाली अरिहत भगवत्तोंके गुणोंकी धारणा निमल स्मृतिसे और बारबार उनके गुणोंके गूढ तत्त्वधितनसे ('वड्ढमाणीए' माने प्रतिक्षण वृद्धिगत होनेवाली या बढ़नेवाला भावनासे। इसका सबध 'सद्धाए' आदि पाँचों पदोंके साथ है। अर्थात् 'वड्ढमाणीए' यह 'सद्धाए' आदि पाँचोंका विरोध है।) ठामि काउस्सग—मं कायोत्सग करता हूँ, काउस्सग ध्यानमें स्थिर होता हूँ। [३]

भावाय

इस सूत्रमें जरि त भगवतांकी प्रतिमाओंकी ध्वज पूजन, सत्कार और मभान करनका मोका मिलता है। ध्वज आदि करनेसे बोधिदीप्त और मोक्षकी प्राप्ति होती है, इसी लिये म प्रतिगण अधिकाधिक धर्म्मग्न होनवाले भद्धा निमज्ज बुद्धि धृति धारणा और विचारणा (तर्कचिन्तन) — इन पांचा भावनाओंसे युक्त होकर वादस्तग्न करता हैं। (५) इन पांचा भावनाओंकी धर्म्मिके लिये म अपने गरीबों एक ही स्थानपर स्थिर कर मौन और ध्यानपूर्वक इस 'सैत्थ्यस्तय' सूत्रद्वारा वादस्तग्न ध्यातव्य स्थिर होना है। यह गहरा भाव इस सूत्रमें रहा हुआ है।

परिमल

- ★ मुकुट अलङ्कार आदिके जिनमूर्तिका सत्कार करना यह बात भी ग्राह्यमिद ही है। इसके प्रमाणमें इस सूत्रका निर्देश दिया जा सकता है।
- ★ समयसरणमें देशना दनवाले भगवान 'भाष तीपकर' हैं। एक वसरणसे समय देना दनक लिय भगवान धूमकी ओर सम्मुख बैठत हैं पर गण तीनों दिशाओंमें तो स्वतागण प्रभुजीकी (प्रभजी जाती है) तीन मूर्तिमां स्थापित करत हैं। मूर्तिको म माननपाठ भी इन मूर्तिपाका तो पूज्य ही मानते हैं। तब तो मूर्तिमें स्थापित अरिहत्त भगवनाकी प्रतिमाओंकी म माननेवाले (उनमें पूज्यमाय न रखनेवाले) सत्यता को या अतदाग्रही ही करते हैं ऐसा कहा जायगा।
- ★ मूर्तिमें जो प्रभुजीकी प्रतिमाएं होती हैं वे स्थापना जिन हैं। इन स्थापित जिनप्रतिमाओंकी पूजा सत्कार आदि सेवा भक्ति इन सूत्रसे सम्पन्न होती है, अत इससे मूर्ति और मूर्तिपूजा निन्द्य होती है।

- ★ प्रभुमूर्तिको बदन, पूजन, सत्कार आदि करनेसे जो लाभ प्राप्त होता है वह लाभ प्राप्त करनेके लिये थढ़ा, बुद्धि धर्म आदिसे युक्त होकर इस सूत्रद्वारा काठसंग किया जाता ॥ और यह काठ संग सफल होनेसे प्रभुजीके बदन पूजन आदिपरका आदर भाव बढ़ हो जाता है ।
- ★ हरेक वस्तु १ नाम २ स्थापना ३ द्रव्य और ४ भाव — इन चार निरुपायोंसे सिद्ध होती (पूणतया सम्पत्ती जाती) है । बेहरा-वासी और स्वानकवासी, इन दोनोंको श्री अनुयोगद्वारा आदि गार्त्र भाव सम्पत्त हो है और स्थापना निरुपायसे सिद्ध होनेवासी जिनमूर्ति इन गार्त्रोंके अनुसार ही है अत एव जिनपूजा अविच्छिन्नरूपसे प्रचलित ही है ।
- ★ इस सूत्रसे हमें उपवेगक नीचे लिखे हुए अमृत-वत् लाभ प्राप्त होते हैं — (१) श्रीजिनवर देवोंकी मूर्तिके बगनसे (प्राप्त हुआ) सम्पत्तवस्त्रादि निमल होता है यह सक्ता है । (२) मूर्तिक सम्मुख काठसंग किया जा सकता है । (३) हरेक आत्मार्थी — (आत्माकी उत्पत्ति चाहनेवाले) — को मूर्तिपूजा करनी ही चाहिये । (४) स्थापित मूर्तिको बदन आदि करनेसे बर्माका क्षय होता है । (५) पापानकी मनाई हुई मूर्तिमें प्राणप्रतिष्ठा की जाती है । (जैसे कि अपने गरीबमें प्राण होता है) सभी यह पूज्य और प्राणवान (= प्रभावशाली) बनती है और इसी लिये ' जिनप्रतिमा जिनसारिणी ' कहा जाता है ।
- ★ थढ़ा आदि भक्ति नाव द्वाक गदासे यह बात स्पष्ट होती है कि यह काठसंग बलात्कारसे लाभ होनेका सोच विचार नित्य बिना, चलनासे या लाभकी मित्रा आगाओंमें नहीं करता, पर थढ़ा-बुद्धि आदिपुवक श्रीवीनराय भगवताक गुणोंका समझकर (उनके दिव्य गुणोंको देखकर मेरे मनकी बड़ा विश्वास मिलता है, इस लिये) उनका स्मरण चिन्तन पुवक ॥ यह काठसंग कर रहा हूँ ।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—‘अरिहतचेहयाण’ सूत्रका दूसरा नाम क्या है ? यह क्या बोला जाता है ?

उत्तर — इस सूत्रका दूसरा नाम ‘चैतस्तव’ है । चैत्यवदनमें ‘जय धायराय’ सूत्र बोलनेके बाद और काउस्सगके पहले यह सूत्र बोला जाता है ।

प्रश्न २—चैत्यवदनमें काउस्सगका प्रमाण कितना होता है ।

उत्तर — चैत्यवदनका काउस्सग एक नवकारका ही होता है ।

प्रश्न ३—काउस्सग पूरा करते समय क्या बोला जाता है ?

उत्तर — काउस्सगके अन्तमें अरिहत भगवत्सोंको नमस्कार करनेके लिये ‘नमो अरिहताण’ कहकर ‘नमोऽर्हत्’ और धोय (स्तुति) वालना चाहिये । चैत्यवदनके समय यह ‘अरिहतचेहयाण’ सूत्र सहे होकर बोला जाता है ।

२० श्री कल्लाणकद (स्तुति) सूत्र

अवमाय

कल्लाणकद—समस्त कल्याणोंके कद समान (अर्थात् मनुष्योंको, जायोंको जो कल्याण इष्ट है, उस कल्याणरूपा वृक्षके भगवान् ही कद मूल हैं ।) पट्टम—प्रथम, पहले जिणिंद—(जिन माने केवली, उनमें इद्रके समान शोभायमान) श्राम्भवभदेव जिनेन्द्रको सति—सोलहवें आशातिनाथ भगवानको तओ—तत, उनके बाद नेमिजिण—

राइसवें श्रानेमिनाथ जिनेश्वरको, मुण्डिद-प्रतिज्ञाधारी मुनियोंमें
 इन्द्रसमान शोभनेवाले पास-प्रगट प्रभावी श्रीपादवनाथ भगवान
 ओ पयास-तीनों भुवनोंमें ज्ञान प्रकाश फैलानेवाले सुगुणिक
 दाण-उत्तमोत्तम गुणोंके ही स्थानरूप (आश्रयस्थानस्वरूप) या
 अनंत गुणोंके भांडारमें प्रगट प्रभावा ऐसे (तेईसवें भावान श्री
 पार्श्वनाथ स्वामीजीको) भक्तोइ-भक्तितसे बदे-मैं बदन करता
 हूँ सिरिबद्धमाण-चौपासवें श्रीबद्धमानस्वामीको [१] अपार-
 जिसका पार (दूसरा किनारा या अंत) ही नहीं है या जिसके
 गार होना अत्यंत हा कठिण है या अनंत कठिनाइयोंका सामना
 हर कोई एकाध व्यक्ति हा जिसके पार हो सकता है, ऐसे
 ससारसमुद्र-पहान ससारसमुद्रके पार-किनारेको, दूसरे तटको
 पत्ता-प्राप्त, गये हुए, पहुँचे हुए (सब जिनेश्वर भगवत्) सिद्ध-
 मोक्ष विदु-देवें सुदृढकसार-(श्रुति = शास्त्र अथवा शक्ति = पवित्र)
 सर पवित्र वस्तुओंमें या समग्र शास्त्रोंमें अद्वितीय एवमान
 सारभूत (मोक्ष) सव्ये-ओ सब जिणिदा!-जिनेश्वर भगवान!
 सुर-देवोंके द्विद-बृद्ध समूहोंसे भी बदा-जिनका पूजन बदा
 हुआ है, ऐसे, जो देवोंके भी पूज्य वध ह, ऐसे बल्लण-कल्याण
 रूपा बल्लण-लताके विसालकदा-विशाल मूलसमान [२]
 निव्याणमगो-निर्वाण मोक्षके (मोक्षका मार्ग तीर्थकर भगवत्तोंके
 बिना कोई बता ही नहीं सकता । जिनेश्वर देवोंके बताये हुए
 मोक्षके) भागमें, रास्तेमें बर-(जो) श्रेष्ठ जाणकप्प-यान
 (नौका, रथ या अन्य किसी सवारीके) समान है पणासिय-

जिसने सपूर्णतया नाश किया है असेस-समस्त, समग्र कुवा-
 -कुवादियोंके-एकान्तवादी, हठाग्रही, दुराग्रहा, मिथ्यावादी
 कदाग्रहा-इन सबके दम्प-दप गवका मय-मत सिद्धान्तको
 जिणाण-घोतरागी श्रीजिनेश्वर भगवतोंके सरण-आश्रय लेने
 योग्य, आधारभूत, शरणरूप बुहाण-तत्त्व जाननेवालोंके
 पक्षितोंके नमामि-म नमस्कार करता हूँ निच्च-निरप, सदैव
 तिजगम्पहाण-तीनों लोकमें प्रधान श्रेष्ठ, ऐसे [१] कुव-
 मोगरेका फूल, बेला पुष्प इदु-चद्रमा गोखलीर-गायका दू-
 सुसार-तुपार, हिम, बर्फ (इन सबके समान श्वेत) वस्त्रा-
 (शरीरके) वणवाली सरोज-सरोवरमें पैदा हुआ कमल हृत्पा-
 जिसके हाथमें है, ऐसी कमले-कमलपर निसर्गा-बैठी
 (कमलासनवाली) बाएसिरी-वागीश्वरी, सरस्वती देवी
 वाग्वादिनी (वाग् माने वाणाका और ईश्वरी माने मालिक
 स्वामिना शारदा) पुथय-पुस्तकोंका यग-वर्ग, समूह हृत्पा-
 जिसके (दूसरे) हाथमें है, ऐसी सुहाय-सुख (देने)के लिये, (सु-
 देनेवाली होवे) सा-पद (सरस्वती देवी) अम्ह-हमें, हमको
 सया-सदा, नित्य, निरंतर पसत्या-प्रशस्त, श्रेष्ठ, उत्तम [५]

सुत्राय

पल्लवकद पद्म जिणिद-सब कल्याणोंके कद मूलस्वर
 (जहाँसे भक्त वाके कल्याणरूपी वृक्षका पोषण सिंचन हो
 है, ऐसे) प्रथम जिनेन्द्र आश्रमभदेव भगवानको

सति तओ नेमिजिण मुणिद-वादमें श्रीशान्तिनाथ प्रभुजीको,
(जिस प्रकार देवसभामें देवेन्द्र सोहते हैं, उसा प्रकार) मुनियोंमें
शेमनेवाले श्रानमिनाथस्वामीको,

जस पयास मुगुणिक ठाण-तीनों भुवनोंमें ज्ञान प्रकाश फैलाने
वाले अपात् ज्ञानप्रकाशयुक्त सर्व सद्गुणोंका एकमात्र (मुख्य)
आश्रयम्भौरूप प्रगटप्रभावी पुरिसादानीय श्रीपाश्वनाथ
भगवानको

ताइ बदे सिरिबद्धमाण-और चरमतीर्थपति श्रीवद्धमानस्वामी
(महावीरस्वामी) को मैं भक्ति भावसे वदन करता हूँ । [१]

पारससारसमुद्दपार-जिस भव भ्रमणरूप ससारका सामान्य
युग्य पार या अंत नहीं पा सकते, ऐसे अपवा जिस
ससारसागरको पार करना (मुक्तिरूपा दूसरा किारा प्राप्त
करना) अत्यंत ही कठिन है, ऐसे भी महासमुद्रके पारको

ता सिव बितु मुद्दपवसार-प्राप्त हुए (अनंत शक्तिसम्पन्न
ओ जिनप्रभुजा!) सब पवित्र वस्तुओंमें या शास्त्रोंमें एकमात्र
(सपूर्णतया) सारभूत ऐसा मोक्ष (हमें) दीजियेगा !

देवे जिणिदा ! सुरादयददा-देवगणसे भी वदित हो, ॐ
जिनेन्द्रदेव ! (हम मोक्ष दीजियेगा ।)

ताणयल्लीणविसारवदा-जो भक्त-देवता
पसग्नेवाली लताके विशाल मूल या ॐ देवता-
समान (जैसेकि लता वृक्ष या ॐ देवता-
हैं, वैसे) हैं, ऐसे (ओ भगवान् ! हमें मोक्ष दीजिए) । [२]

निष्प्राणमग्नो वरजाणकप्प—(इस गाधामें श्रीवीतरागकथित सम्पग्ज्ञानकं प्रनावका वणन किया गया है ।) सम्पग् दशन, ज्ञान और चारित्रमय मुक्तिके पथमें चलनेके लिये जो उत्तम सवारा (रथ) समान है, ऐसे (जहाँ कि रास्ता ही नहीं है, ऐसे जगलम न चल सकनेवाली बाइसिकिल, इक्का, छकड़ा, तौंगा, रेलगाड़ी, मोटर, रथ आदि सवारियों पत्थर, अलकतरा, कौब्रीट आदिसे बनाये हुए मागपर तो बहुत ही आसानीसे चल सकती हैं, उसी प्रकार जिनसिद्धान्तरूपी रथमें बैठनेवाला [श्रास्तीर्थकर भगवत्तोंद्वारा प्ररूपित] मोक्ष मागम तेजासे जा सकता है । अथवा जैसे समुद्रको पार करनेके लिये नौका या स्टेमर होती है, वैसे ही मोक्ष प्राप्तिके लिये प्रभुजाका यह ज्ञान श्रेष्ठ साधनभूत है । 'वरजाण कप्प' यह मय'का विशेषण है ।)

पणासियासेसकुवाइदप्प—जिस (स्याद्वादमत)ने समग्र कुवाडियोंके धमडवा चक्काचूर या पूरा नाश किया है, ऐसे मय जिणाण सरण वुहाण—'अध्यस्ववृत्ति तदस्वदृष्टि रखनेवाले विद्वान पंडितोंके लिये भा जो शरण आश्रयस्थान है, ऐसे जिनेश्वर भगवत्तोंके सिद्धान्तको (मतको) या आगमग्रंथोंको (अथात् अनेकान्तवादको)

नमामि निच्च तिजगप्पहाण—सारा दुनियामें श्रेष्ठ ऐसे (इस आगमज्ञानको) म सदैव भक्तिभावसे नमस्कार करता हूँ । [३]

कुबिंदुगोकलीरतुसारवत्ता—बेला (मोगरा), चन्द्रमा, गायका
दूध और वर्ष—इन सबके जैसे उज्ज्वल—चेत वर्णवाली
सरोजहृत्था कमले निसन्ना—जिसने एक हाथमें कमल धारण
किया है और जो कमलपर बैठा हुआ है (या कमल हा जिसका
आसन है), ऐसा

वाएसिरो पुत्थयवगहृत्था—और जिसने (अपने दूसरे) हाथमें
पुस्तकोंका समूह रक्खा है, ऐसी वागाम्बरा देवा (जिसें शारदा
और सरस्वती भी कहते हैं। वाग् माने वाणाका और ईश्वरा
माने स्वामिना—अधिष्ठात्री देवी—सरस्वतीजा।)

सुहाय सा अन्ह सया पसत्था—यह उत्तम और श्रेष्ठ वावादिनी
महादेवी हमें नदैव सुख देनेवाली होवे। माने हमारी यमानु
सारिणा वाणाका विलासपूर्वक और कुशलतापूर्ण विस्तार कर,
हमारे दुःख विघ्नोंको दूर कर हमें सुख समझि दे। [४]

भावाय

इन चार गाथाओंकी स्तुति (धोय) करते हैं। यह स्तुति—
छत्में है। इसमें ऐसा क्रम होता है कि पहली गाथा में
भगवानकी स्तुति (स्तवन) दूसरी गाथामें सब विघ्नों
स्तुति, तीसरी गाथामें जानकी स्तुति (यान जानने की स्तुति)
गाथामें शासनदवाकी (अर्थात् शासन करके देवोंकी)
रहती है। इन चार गाथाओंसे (स्तुतिमें सब विघ्नों/दुःखों) दूर
जाना है। पक्की धरमासी या सात्विकी स्तुति करने से
बिन जो भागलिक प्रतिक्रमण विघ्न होते हैं वे सब दूर
(धोय) बोलनेकी परंपरागत परिणाम।

१।
२। के
३। तर
४। गी
५। और
६। न-
७। र
८। में

परिभल

- ★ अनेरात्राची युक्ति प्रयक्तिर्मा इतनी तो मयचाही हे रि जने सम्मुख अय मनवादिमाही प्रबल यक्तिर्मा (तरकीबें) रि हो नही सको।
- ★ जिस प्रकार धाम्ये आगरा रोड आज सारे भारतमें प्रतिष्ठ ह, उसी प्रकार आजसंस्कृतिमय इस भरतभूमिमें मोक्षमाग प्रत्यान हो ह। रोड ध्यान रास्ता पथ या माग निष्कटक होना ही चाहिये। इस माक्षमागम सात्त्विक मोक्ष लाभसाए बटवसमान (विरोधीतत्व) ह। यह सब हम इस सूत्रकी तीसरी गायान जान सकते ह।
- ★ जो भारतमें यह मोक्षमाग न होता तो इस हिसाब बुनियादे ममा रिवाज धर्मा (भारतमें) भी एबाके मोक्षकी तरह गीत ही अपना मद्दा जमा दत। इस भारतभूमिमें जो अहिंसाके सुरीले सुर सुने जाते ह व आज सत्कारों ही प्रतापते। यह अहिंसाका माय सभी भा अनुष्ठ नहीं ही हो सक्ता इसी त्रिये पंडिताकी और विद्वानोंकी आश्रितनवर भगवताका यथा माय हा करना पडता ह और उन्हें यह प्रिय नी लगता ह —यह सुवाय इस सूत्रकी तीसरी गायामें निरल सक्ता ह।
- ★ चौथी गायामें गाननतराजक देव आ देवीकी लभनवार मही, किंतु प्रापका ही की जाती ह। यमोराधनके समय कोई विघ्न या बाध तो जत वह देव या देवी दूर कर हमें सहायता पहुँचावे मही इस प्रायनाका मुख्य हेतु ह।
- ★ समय गानोंका सत्व (सार) बला जाय तो सभी गानोंमेंसे मोक्ष ही सार प्राप्त होगा। मोक्षके त्रिय ही सब ज्ञान और सभी क्रियाए ह। जिस प्रकार गुलाबका सत्व (या सत्व या सार) गुलाबक अंतरमें होता ह यज्ञका या गन्धकका सत्व सँकरीतमें होता ह और गुच्छ(गुडूचा)का सत्व गिलोयसत्वमें होता ह उसी प्रकार गानोंका सत्व सार मोक्ष ही है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—‘कल्लाणकद’ सूत्रमें किन किन तीर्थंकरोंकी स्तुति का गइ है ?

उत्तर—इस सूत्रकी पहली गाथामें (१) श्रीऋषभदेवस्वामी (२) श्राश्रातिनाथजी (३) श्रीनेमिनाथजी (४) श्री पार्श्वनाथ प्रभुजी और (५) श्रीमहावीरस्वामी—इन पाँच तापंकर भगवतोंकी स्तुति का गई है ।

प्रश्न २—धोय माने क्या ? इसमें कितना गाथाएँ होती हैं ?

उत्तर—धोय माने स्तुति, प्रार्थना । चार गाथाआसे एक धोय मनता है अर्थात् उक्तक्रमानुसार चार गाथाएँ एकत्रित होनेपर उन्हें धोय कहा जाता है । देवददनमें भगवानके सम्मुख धोय बोली जाती है ।

प्रश्न ३—धोयका चारों गाथाओंका समर्थ बताइये ।

उत्तर—निम्नके दशनमात्रसे ही भावनाका स्रोत बहने लगता है, ऐसे (अपने इष्ट) प्रभुजाका स्तुति पहली गाथामें, बादमें सब तीर्थंकर गुणोंसे समान हा ह, ऐसा बतानेके लिये सब तापंकरोंका स्तुति दूसरा गाथामें, अनन्तर उन वातरागा भगवतोंने बताये हुए सिद्धान्त हा मार्ग दर्शक होनेसे ज्ञानका स्तुतिका क्रम तीसरा गाथामें और अन्तमें उस श्रुतज्ञानकी दात्री और अधिष्ठात्री श्रुत-देवाका प्रार्थना अन्तिम चौथा गाथामें—इस प्रकार चारों गाथाओंका सुखलाके समान सर्वथ इस स्तुतिमें साफ साफ मालूम होता है ।

२१ श्री संसारदावानल स्तुति

(भगवान श्रीमहावीरस्वामीकी स्तुति)

अवयवार्थ

संसार—जहाँ जन्म मरणका चक्र है, ऐसे इस संसारका
 दावानल—दावागिरी (अग्नि का जाज्वल्यमान और परम-परम
 काष्ठापन रूप माने दावाग्नि या दावानल) दाह—ज्वालासे
 जलनेपर होनेवाला जलनको (शान्त करनेमें) नीर—जो पानाकै
 समान है, ऐसे (श्रावारप्रभुजाकी) समोह—महामोहका
 धूली—धूलको हरणे—दूर हटानेमें, उठानेमें समीर—जो तेज
 वायुके समान है, ऐसे माया—और माया माने कपट या छल
 प्रपंचरूपा रसा—पृथ्वाको धारण—खोदनेमें (या जोतकर सरल
 निष्प्रपंच बनानेमें) सार—जो ताक्ष्ण अर्थात् तेज धारवाले
 सीर—इलके समान है, ऐसे नमामि—मैं नमस्कार करता हूँ
 धीर—भगवान श्रीमहावीरस्वामीकी गिरिसार—सब पर्वतोंमें श्रेष्ठ
 ऐसे मेरुपर्वत समान धीर—अघल या धैर्यसम्पन्न ऐसे (श्रीपाद
 भगवानकी) [१] भाव—भक्ति भावसे अयनाम—नमस्कार
 करनेवाले सुर—वीरमानिक देव दानव—भवनपति आदि दानव
 मानव—और मनुष्योंके इन—स्वामियोंके चूला—मुकुटोंमें रहे हुए
 विलोल—चंचल, चपल (या हिलनेसे शोभायमान) ऐसे
 कमल—कमलोंका आवलि—श्रेणासे, पक्तिसे मालितानि—
 सुशोभित ऐसे (यह संपूर्ण पद 'जिनराजपदानि' का विशेषण है)।

संपूरित—भला भाँति पूर्ण किये हैं अभिनत—भक्तिभावसे नमस्कार करनेवाले लोक—भक्तवर्गके समीहितानि—मनो-
 वाछतोंको, जिन्होंने ऐसे काम—सच्चे दिलसे, अत्यंत भक्ति
 भावसे नमामि—मैं नमस्कार करता हूँ जिनराज—सर्व जिनेश्वर
 भावतोंके पदानि—धरण कमलोंको तानि—उ० [२] बोधागाध
 —अपार ज्ञानसे जो गभीर है (अर्थात् अपार ज्ञान ही आगमरूपी
 समुद्रका गहराई, नमारता या अथाहपन है ।) सुपद—अनेकान्त
 वादके सुरम्य-मनोहर ऐसे पदोंकी पदवी—रचनारूपी नीरपूर—
 विपुल जलप्रवाहसे परिपूर्ण होनेके कारण अभिराम—जो अत्यंत
 मनोहर है जीर्वाहिसा—उहाँ जीवनिकायकी अहिसारूपी
 (अहिसाके अनेक प्रकारके वर्णनरूपा) अविरल—(विगल माने
 अलग अलग, भिन्न भिन्न, अर्थात् अविरल माने) विना किसी
 अंतरके या अविच्छिन्नरूपसे बहनेवाली लहरी—(अहिसा परमो
 पम 'की) लहरोंके संगम—संगमसे, एक दूसरेसे मिलनेसे
 अगाह—जिसका विशाल, अगाध अर्थात् बृहत्काय (सामान्य
 बुद्धिवाले मनुष्य जिसे समझ भा नहीं सकते, ऐसा) वेह—शरीर-
 स्वरूप है चूल—सिद्धान्तोंकी चूलिकाएँ ही खेल—जिसके तटके
 समान हैं या जिसका ज्वार भाटा हा है गुरु—बड़े बड़े गहन
 अधपुण गम—पाठरूपी, आलापकरूपी मणि—बहुमूल्य रत्नोंसे
 सकुल—जो पूरा-पूरा भरा हुआ है दूरपार—और जिसका दूसरा
 किनारा बहुत हा दूर है अर्थात् जिसके दूसरे किनारेको पहुँचना
 हि या पा ८

अत्यंत ही कठिन है, ऐसे सार-प्रधान, मुख्य योगागम-शा-
 वार विभुद्रात प्र-पित ४५ आगम सिद्धान्तस्वी जलनिधि
 (ज्ञानके) महासमुद्रवा सादर-आदरपूर्वक, हार्दिक भावनामें,
 बहुमानसे माघु-भला भांति सेवे-में सेवा भरित करता हूँ
 [२] आमूल-मूल-जटमे ही आलोल-टिठोला और धुली-
 मकरद या केसरका बहुल-बहुत (बढिया जमी) परिमल-
 सुगंधिके कारण आनीठ-जासक्त हुई है, उसका आस्वाद करनेमें
 मस्त हुई है लोन-घबल (या गुदर) ऐसी बलि-भारोंका
 माला-पकितपोंके, श्रेणियोंका झकार-गुजारकी आराध-मपूर
 आवागने के कारण सार-श्रेष्ठ या उत्तम (सुधाभित) ऐसे
 अमल-और निमल या स्वच्छ बल-पैदाइियोंवाले कमल-
 कमलरूपी आगार-परकी नूनि-भूमि हा नियासे-
 जिसका निवास स्थान है, ऐसी (यह संपूर्ण पद 'देवि।' पदका
 विशेषण है।) छाया-रूप और कातिके सभार-समूहसे
 सारे-जो शुशोभित है, ऐसी घर-प्रधान, उत्तम प्रकारका
 कमलफरे-कमल, जिसके हाथमें है, ऐसी तार-देदीप्यमान,
 चमकते हुए हार-(कठमें पहने १४ पुररूपी) हारोंके (माला-
 ओंके) कारण अभिरामे-जिसके अंग मनोहर मालूम होते हैं,
 ऐसा वाणीसदोह-श्रीवीतरागी भगवतोंका द्वादशांगी वाणीका
 समूह हा (आगम ये आवातरागी भगवतोंकी साक्षात् वाङ्मयी
 मूर्ति हा है।) वहे-जिसका स्वरूप ही है अथात् जिसका सात
 शरीर हा श्रीवीरवाणीसे बना हुआ है, ऐसी (हे श्रुतदेवी!)

भवविरहवर—भवविरह अर्थात् मोक्षरूपा वरदान (इस स्तुतिके कृता महाज्ञाना श्रीहरिभद्रसूराश्वरर्जा महाराज हैं। आपने यह स्तुति १४४४वें श्रवणके स्थानपर बनाई, जिसकी यह अन्तिम चौथी गाथा है। जिसमें 'भवविरह' शब्द आपका कृतिका सूचक है।) देहि—दीजिये मे—मुझे देवि!—हे श्रुतदेवी! हे श्रुतज्ञानकी अधिष्ठायिका देवा! सार—प्रधान पेमा (मोक्षरूपा वरदान) [१]

सूत्राय

ससारदावानलवाहनोर—अनंत दुःखोंसे परिपूण और जन्म-मरणके भ्रमणमें भयायने ऐसे इस ससाररूपी दावानलकी जलनको शांत करनेमें (जिस प्रकार बबेका या दमकलेका पानी आगको शांत करता है उसी प्रकार) जो (समताके बोध स्वरूप मेघजलका सिंचन कर शांति देनेवाले) पानी समान हैं, समोहधूलोहरणे समीर—कषायोंद्वारा जो जीवोंको विषयासक्त बनाती है, ऐसा मोहरूपी धूलको उड़ाकर दूर हटा देनेमें जो तेज वायुके समान हैं,

मायारसादारणसारसीर—इस ससारका भ्रमण बढ़ानेवाली मायारूपी पृथ्वीको खोदनेमें जो तीक्ष्ण माने तेज धारवाले हलके समान हैं

नमामि वीर गिरिसारधीर—और जिनका धैर्य (पर्वतोंमें श्रेष्ठ ऐसे) मेरुपर्वतके समान अचल और (दृढ़) अप्रतिहत है, ऐसे चरम तीक्ष्णपति श्रीमहावाक्स्वामी भगवानको मैं नमस्कार करता हूँ। [१]

भावावनामसुरदानवमानवेनचूलाविलोलकमलावलिमालि
 तानि—भक्ति भावसे नमस्कार करनेवाले देव, दानव (अपात
 जिनके चरण-कमलोंको देवेन्द्र आदि भी प्रणाम करते हैं ।)
 और मनुष्योंके स्वामियोंके मुटुमें रहे हुए चंचल (या हिलनेसे
 शोभायमान) कमलोंका श्रेणी (जो भगवत्तोंके चरण कमलोंमें
 एक हा साथ होनेवाले नमस्कारोंसे प्रतिभात होती है, उस) से
 जो सुशोभित हैं, ऐसे (यह समूचा पद 'जिनराजपदानि'का
 विशेषण है ।)

सपूरिताभिनतलोकममोहितानि—और भक्ति भावसे सिर
 झुकाकर वदन करनेवाले भक्त (नर नारी) वगैरे मनोरथोंको
 जिन्होंने (निरंतर) परिपूर्ण किया है, ऐसे (श्रीजिनेश्वरोंकी
 भक्ति हा शारवत सुखोंकी मन कामनाओंको पूरा कर
 सकती है ।)

काम नमामि जिनराजपदानि तानि—उन (असिष्ठ विरवमें
 प्रसिद्ध ऐसे) श्रीजिनेश्वर भगवत्तोंके चरण कमलोंको मैं अत्यंत
 भक्ति भावसे नमस्कार करता हूँ । [२]

बोधागाध सुपदपदघोनीरपूराभिराम—(जिस प्रकार ज्वारके
 समय पूरे प्रवाहसे पानी बहता है—छरें छहरें
 पानाका भरमार मालूम होता है—
 प्रेक्षकोंका आँखें आनंदसे दृष्टि
 [आदरागावा स्वाध्याय करते
 अलङ्कृत, ज्ञानवधक

वास्तविक सत्यका अन्वेषण करानेवाला, गूढ़ रहस्योंमें अव
गहन करानेवाला और सर्वोत्तम पदलालित्यसे युक्त ऐसी
आगमोंकी मनोहर रचनाओंको देखकर मुनिराजोंके हृदयमें
आनन्दकी ऊर्मियाँ उठती हैं, जो उन्हें तत्त्वमयन करनेको
प्रेरित करता है ।) जिस प्रकार समुद्रका तल (पेंदी)का भाग
नहीं दिखाई देता, उसा प्रकार आगम-समुद्र गहन ज्ञानसे
अगाध (औंढा) है । जैसे समुद्र पानासे परिपूर्ण होनेके कारण
मनोहर, नयनरम्य मालूम होता है, वैसे ही महायुक्तिपूर्ण
(या लालित्यपूर्ण) पदोंकी रचनारूपी पानीसे आगम समुद्र
परिपूर्ण होनेसे ज्ञानियोंको परमानन्द देनेवाला होता है । ऐसे
ज्ञान-सागरको (ये दोनों पद 'आगमजलनिधि' के विशेषण हैं ।)
जीवाहिंसाविरललहरीसगमागाहवेह-जीवमात्रपरकी दयारूपी
छहरनेवाली असंख्य-अनन्त तरंगोंसे सदैव परिपूर्ण होनेके
कारण आगम महासागर अहिंसाका विशाल (अगाध) स्वरूप
हो हुआ है और इसमें अहिंसाके स्याद्वाद सिद्धान्तोंका अत्यन्त
सूक्ष्म रूपसे निरूपण होनेसे सामान्य अभ्यासियोंके लिये
जो समझनेके लिये कठिनातिवठिन है, ऐसे ज्ञानसमुद्रको
लावेल गुरुगममणिसबुल दूरपार-यह ज्ञान सागर गहन
ज्ञान और विद्याओंसे परिपूर्ण भरा हुआ है और जो चूल्किाई
वे ज्ञान महासागरके तट (किनारे) या ज्वारके समान
बड़े-बड़े आलापक हैं, वे इस गहरे समुद्रके तल
महामूल्यवान रत्नोंके समान हैं । इन

सब वस्तुओंसे व्याप्त या परिपूर्ण है, ऐसे और महान् (गूँ)
रहस्योंसे परिपूर्ण या अनन्त (विविध-भिन्न भिन्न) अर्थोंसे
युक्त होनेके कारण जिसका पार (दूसरा किनारा) पाना
अत्यन्त ही कठिन है, ऐस

सार चोरागमजलनिधि सादर साधु सेवे-श्रामहावीर प्रभुके
शासनके प्रधान अगस्वरूप आगमरूपी महासमुद्रकी मैं आदर-
पूजक (भातसे) भली भाँति सेवा पूजा भक्ति करता हूँ । [१]

आमूलालोलधूलोद्यहुलपरिमलालीढलोलालिमालाक्षकारा
राघसारामलदलकमनागारभूमिनिधासे । --मूलपयत
(अर्थात् मूलसे हा) हिलनेवाले (य चयल ऐसे कमलके पुष्पोंमेंसे
निकलनेवाले) परागका बहुत ही (कविया, मधुर) परिमलसे
सुगंधसे आकाशित होकर उसमें आसक्त (मग्न) हुए हैं, ऐसे
भारोंकी पकितपोंके (श्रेष्ठियाके) मुजाराफा मधुर आवाजसे
श्रेष्ठ और शोभायमान और निमल (स्वच्छ) पैखडियोंवाले
कमलके भवनमें रहनेवाला माने कमलरूपा भूमिमें ही निवास
करनेवाली (हे श्रुतिदेवी !)

छायासभारसारे ! धरकमलकरे ! तारहाराभिरामे । --
रूप और कातिका भांडार होनेके कारण (मनोहर देहसे)
शोभनेवाली, हाथमें सुंदर कमलको धारण करनेवाला, उज्ज्वल
और देदीप्यमान मालाओं (और हारों)के कारण जिसके सभी
अंग रमणीय मालूम होते हैं, ऐसी

वाणीसदोहदेहे ! भवविरहवर देहि मे देवि ! सार—द्वाद-
शाना वाणीका समूह ही जिसका विशाल स्वरूप है, ऐसी
ओ श्रुतदेवा ! जन्म मरणरूपी भवघ्रमणका विरह (अर्थात्
नारा) होवे उसे सर्वोत्तम मोक्षसुखकी प्राप्तिका वरदान मुझे
दाजिये । अथवा (इस स्तुतिके कता महान् उपकारी आचार्य
भगवान श्रीहरिभद्रसूरारवरजा महाराजने 'भवविरह' शब्दसे
अपने नामका सूचन किया है, इसलिये) रचयिता काविको
उत्तम ऐसा मोक्ष दीजिये । [४]

भाषा

यह स्तुतिमें चार गायणें होती हैं, वैसे ही इस स्तुतिमें भी हैं ।
यह स्तुति प्रायः (अधिकतर) आठों (अष्टमी) के 'गामय' प्रतिष्ठापनक समय
बौद्ध (चतुर्वशी) के पक्षी (पाक्षिक) प्रतिष्ठापनक समय और स्त्रियोंमें
गामके दशम प्रतिष्ठापनमें छहों आवश्यक पूजा हो जानेपर सामुदायिक
बोली जाती है । इस स्तुतिके रचयिता परमापकारी आचार्य भगवत
श्रीहरिभद्रसूरारवरजी महाराज हैं जो याज्ञिकीमहत्तराधमसूनुके
नामसे भी प्रसिद्ध हैं । श्रीवर्धनगण और श्रीजिनमहत्तराधमसूनुके
प्रायः समकालीन — उनके बाद करीब २५ साल होनेपर लगभग १५००
वर्षोंके पहले जब कि पूर्वोक्त ज्ञान प्रायः नष्ट हुआ था य महापुरुष —
आचार्य भगवत हुए ऐसा प्रसिद्ध हैं । आप पहले ज्ञातिसे ब्राह्मण होनेके
कारण वेदविद्याके बड़े निष्णात पंडित थे और बादमें बड़ी (डल्हो)
उम्रमें आपने बीछा ली थी । आपके दो निष्ठाओंके बौद्धोंने बहातगिदा
(बहर्द) का थी इसके प्रतिपादमें आपन १४४४ बौद्धोंका विनाश
करना सोचा था पर इस दुष्टानिको तुरत ही समझकर उन बौद्धोंकी
दया कर, इसके प्रायश्चित्तस्वरूप १४४४ ग्रंथ बनानका तय किया ।
इसमें १४४० ग्रंथ तो बनाये, पर गरीर निमित्त ही जानस ४ ग्रंथ बाकी

हो रहे। ऐसा अवस्थामें आपन इस स्तुतिकी चार गाथाएँ चार प्रथमि स्वयं बनायीं। (ऐसा भी कहा जाता है कि अंतिम गाथाका पठन करन बनाने के बाद आपकी बोलाकी 'गति बँव हो जानस श्रीसयने' अकारा राव से गाथा पूरा की।) इस प्रकार १४४४ प्रथमिका शरदा पूरा हुई और आप तैयारकर स्वयं गय। इस स्तुतिकी भाषा सम-सामृत-प्राकृत है। १४४४ प्रथमि आपने मनक आममोंका टीकाएँ और महान् पथ भी बनाये हैं। हुयेक गोवर्ध-गहरमें बड़े प्रतिकर्मणोंके समय उपद्रवनिवारणार्थ श्रीसय (समस्त) मह् अंतिम गाथा 'अकाराराव'से समाप्तिक साम शायिकरूपसे और उच्च स्वरमें बोल्ता है।

परिमल

- ★ जगद्गुरुकी मनक गणगणित माण्यताओका इस स्तुतिमें दिग्गज दिया गया है। यथा — (१) जगद्गुरुकी संसार मह् एक महान् द्वाप्यमान बावागिनी जलन या गरमीकी उपमाका है और भगवान् श्रीमहागुरु प्रभु उसे शांत करनेवाले मेतके समान है। यह उपमा सपूज समुक्ति और समदित है। (२) दूसरी गाथामें एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि श्रीजिनश्वर देव सत्तारियमि सपूजतया भिन्न ज्ञानपद भी भक्तवगकी मनकामनाएँ पूरा करते हैं। सर्वान् यदि दुःखा जीव वातरागियोंका आधम (गरण) करेंगे तो अथवा ही उनका विघ्न, बाधाएँ और दुःख दूर हो सकते हैं। इसा लिये जो आपनको दुःखी समझता हो उस चाहिये कि वह कथलज्ञानी भगवतकि गरणमें प्रभुजीको दादगाथा धागो यह एक अगाध सभा यतामी है। लहरें की नीनता हमें इस

समस्त ही जिसका विनाश स्वरूप है ऐसी देवी मान धृतदेवी, सरस्वती देवी या गारुडा देवी। इस प्रकार ध्यान करनेसे सम्यग्ज्ञानके महान पुण्यको हम भली भाँति जान सकते हैं।

★ बुनियादमें आचार्य लोग सागर पूजा दिन (आवण शु १५) को समुद्रकी पूजा अर्चा करते हैं पर जिन-आसनमें तो सायस्वरूप ज्ञान महासागरकी सवा पूजा और भक्ति करतवा विधान है—
"मैं आत्म जननिधिकी सवा भक्ति करता हूँ। —यह गूढ़ तत्त्व हम इस स्तुतिकी तीसरी वाक्यांशसे जान सकते हैं।

★ सत्तारक जीवोंका जिसो न किसी प्रकारको आधि, ध्याधि और उपाधि (मानो छिपकाई गई ही न हो बसी) रहती ही है। इस त्रिविध सत्तापकी ही ज्ञानी दायागि कहते हैं। श्रीवीतराणी प्रभकी सेवासे यह सत्ताप (जलन, दाह) गस्त हाता है इसी लिये भगवानकी सेवा भक्ति करनी है। बाह्ये ऐसा इस स्तुतिमें ठीक शुरूमें ही (पहले ही पदमें) बताया गया है।

सरल प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १— 'ससारदावानल' स्तुतिके रचयिता कौन हैं ?

उत्तर — १५४४ ग्रंथोंके रचयिता महान उपकारी आचार्य भगवत् श्रीमद् हरिभद्रसूरान्वरजा महाराजने इस स्तुतिकी रचना की है। यह स्तुति संस्कृत और प्राकृत इन दोनों भाषाओंके समान रूपोंसे (शब्दोंसे) बनायी गई है। इस स्तुतिमें एक महत्त्वका बात यह है कि इसमें एक भी संयुक्ताक्षर नहीं है। ऐसा कृति कविता शायद ही देखी जाता है।

२— 'ससारदावानल' स्तुतिको संक्षेपमें समझाइये।

उत्तर - इसकी पहली गाथामें भगवान श्रीमहावारदेवका स्तुति है। अन्य तान गाथाओंमें क्रमशः 'सवजिन, जिना' और शासनदेवीका स्तुति है।

प्रश्न ३- ससारदानवानल' सूत्र कब बोला जाता है ?

उत्तर - प्रायः आठों (अष्टमी) के प्रतिक्रमणमें धोप (स्तुति) के स्थान यह सूत्र (स्तुति) बोला जाता है। पाँच आदि बड़े प्रतिक्रमणामें सज्ज्वाय (स्वाध्याय) के स्थान यह सूत्र बोला जाता है। स्त्रियाँ इसे प्रतिक्रमणमें रोज नमोऽस्तु के स्थान बोलती हैं।

प्रश्न ४- यहाँ भुतदेवाको नमस्कार क्यों किया गया है ?

उत्तर - इस स्तुतिमें भुतदेवाको नमस्कार नहीं किया गया। कारण यह है कि प्रतिक्रमणमें भी विरतिवान स महाराज अविरतिवाली (जो अवतार अवस्थामें ऐसा) देवाके नमनकी स्तुति नहीं बोल सकते। देवा वरदान दे सकता है, इसा लिये उसके पास केवल मोक्षप्राप्तिके लिये प्रार्थना ही का गई है। ऐसा होनसे चौथी गाथा पूज्य साधु-साध्वी महारा भी बोल सकते हैं, ऐसा शास्त्रोंमें विधान है।

श्री नवकार मन्त्रसे श्री ससारदावानल स्तुतितक

ॐ मूल सूत्र ॐ

★ १ श्री नवकार मन्त्र ★

नमो अरिहताण । नमो सिद्धाण । नमो
आयरियाण । नमो उवज्झायाण । नमो
लोए सव्वसाहूण । एसो पचनमुक्कारो,
सव्वपावप्पणासणो । मगलाण च सव्वोसि,
पढम हवइ मगल ॥

★ २ श्री पंचदिय सूत्र ★

पचिदियसवरणो, तह नवविहवभचेर-
गुत्तिधरो । चउविहकसायमुक्को, इय अट्ठा-
रसगुणेहि सजुत्तो ॥ १ ॥ पचमहव्वयजुत्तो,
पचविहायारपालणसमत्थो । पचसमिओ
तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥ २ ॥

★ ३ श्री स्वमासमण सूत्र ★

नि स्वमासमणो ! वदिउ जावणि-

જ્જાણ નિસીહિઆણ । મત્થણ વદામિ ।

★ ૪ શ્રી ઇચ્છકાર સુત્ર ★

ઇચ્છકાર સુહરાઈ (સુહદેવાસિ), સુખતપ, શરીર નિરાવાધ, સુખસજમજાત્રા નિર્વહો છોજી ? સ્વાર્મા ! જ્ઞાતા છેજી ? માત-પાળીનો લાભ દેજોજી ।

★ ૫ શ્રી ઇરિયાવહિય સુત્ર ★

ઇચ્છાકારેણ સદિસહ ભગવન્ ! ઇરિયા-વહિય પઢિક્કમામિ ? ઇચ્છ । ઇચ્છામિ પઢિક્કમિઉ ઇરિયાવહિયાણ વિરાહણાણ । ગમણાગમણે । પાણક્કમણે વીઅક્કમણે હરિયક્કમણે ઓસા-ઉત્તિગ-પણગ-ડગ-મટ્ટી-મક્કકડાસતાણાસકમણે । જે મે જીવા વિરાહિયા । ઇગિદિયા, વેહિદિયા, તેહિદિયા, ચહિરિદિયા, પચિદિયા । અભિહયા, વત્તિયા, લેસિયા, સઘાહયા, સઘટ્ટિયા, પરિયાવિયા,

किलामिया, उद्विया, ठाणाओ ठाण
सकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स
मिच्छा मि दुक्कड ।

★ ६ श्री तत्स उत्तरी सूत्र ★

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण
विसोहीकरणेण, विसल्लीकरणेण, पावाण
कम्माण निग्घायणद्वाए ठामि काउस्सग्ग ।

★ ७ श्री अन्नत्थ सूत्र ★

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासि-
एण, छीएण जभाडएण, उड्डुएण, वाय-
निसग्गेण, भमलीए, पित्तमुच्छाए । सुहूमेहि
अगसचालेहि, सुहूमेहि खेलसचालेहि,
सुहूमेहि दिद्विसचालेहि । एवमाडएहि
आगारेहि अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे
काउस्सग्गो । जाव अरिहताण भगवताण
नक्ककारेण न पारेमि, ताव काय ठाणेण

मोणेण ज्ञाणेण अप्पाण वोसिरामि ।

★ ८ श्री लोगस्स सूत्र ★

लोगरस उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
 अरिहते कित्तइस्स, चउवीस पि केवली
 ॥१॥ उसभमजिअ च वदे, सभवमभिणदण
 च सुमइ च । पउमप्पह सुपास, जिण
 च चदप्पह वदे ॥ २ ॥ सुविहि च पुप्फुदत्त,
 सीअल-सिज्जस-वासुपुज्ज च । विमल-
 मणत्त च जिण, धम्म माति च वदामि ॥३॥
 कुयु अर च मल्लि, वदे मुणिसुव्वय नमि-
 जिण च । वदामि रिद्धनेमि, पास तह वद्धमाण
 च ॥४॥ एव मए अभियुआ, विहुयरयमला
 पहीणजरमरणा । चउवीस पि जिणवरा,
 तित्थयरा मे पसीयतु ॥ ५ ॥ कित्ति-
 वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
 आरुग्ग-बोहिलाभ, समाहिवरमुत्तमं दितु

॥ ६ ॥ चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु
अहिय पयासयरा । सागरवरगभीरा, सिद्धा
सिद्धि मम दिसत्तु ॥ ७ ॥

★ ९ थो करेमि भते सूत्र ★

करेमि भते । सामाइय, सावज्ज जोग
पच्चक्खामि । जाव नियम पज्जुवासामि,
दुविह तिविहेण, मणेण वायाए कायेण, न
करेमि, न कारवेमि । तस्स भते । पडिक्क-
मामि निदामि गरिहामि अप्पाण
वोसिरामि ।

★ १० थो सामाइयवजुत्तो सूत्र ★

सामाइयवजुत्तो, जाव मणे होइ नियम-
सजुत्तो । छिन्नइ असुह कम्म, सामाइय
जत्तिआ वारा ॥ १ ॥ सामाइयम्मि उ कए,
समणो इव सावज्जो हवइ जम्हा । एएण
कम्मणेण कम्मणे कम्मणे कम्मणे ॥ २ ॥

सामायिक विधिसे लिया, विधिसे पारा, विधि करते जो कोई अविधि हुई हो, वह सब मन-वचन-कायाकरके मिच्छा मि दुक्कड । १० मनके, १० वचनके, १२ कायाके एव ३२ दोषमेसे जो कोई दोष लगा हो, वह सब मन-वचन-कायाकरके मिच्छा मि दुक्कड ।

★ ११ श्री जगचित्तामणि सूत्र ★

(इच्छाकारेण सदिसह भगवन् । चैत्य-वदन कर्त्तुं ? इच्छ ।) जगचित्तामणि ! जगनाह ! जगगुरु ! जगरक्मण ! जगवधव ! जगसत्त्ववाह ! जगभावविअक्खण ! अद्वावय-सठविअरूअ ! कम्मद्वविणासण ! चउवीस पि जिणवर ! जयतु अप्पडिहयसासण ! ॥ १ ॥ कम्मभूमिहि कम्मभूमिहि पढम-सधयाणि, उक्कोसंय सत्तरिसय, जिणवराण

विहरत लब्धइ, नवकोडिहि केवलीण,
 कोडिसहस्सनव साहु गम्भइ, सपइ जिणवर
 बीस मुणि विहु कोडिहि वरनाण, समणह
 कोडिसहस्सदुअ, धुणिज्जइ निच्च विहाणि
 ॥ २ ॥ जयउ सामिय ! जयउ सामिय !
 रिसह ! सत्ताजि, उज्जिजति पहु नेमिजिण ।
 जयउ वीर ! सच्चउरिमडण !, भरुअच्छहि
 मुणिसुव्वय ! मुहरिपास ! दुहदुरिअखडण ॥
 अबरु विदेहि तित्थयरा, चिहु दिसि विदिसि
 जि के वि, तीआणागयसपइ अ, वदु जिण
 सव्वे वि ॥ ३ ॥ सत्तावणइ सहस्सा, लक्खा
 छप्पन्न अट्ठकोडीओ । वत्तीसय बासियाइ,
 तिअलोए चेडए वदे ॥ ४ ॥ पन्नरसकोडि-
 सयाइ, कोडी वायाल लक्ख अडवन्ना ।
 छत्तीस सहस्स असीइ, सासयविवाइ पण-
 मामि ॥ ५ ॥

★ १२ श्री ज किंचि सूत्र ★

ज किंचि नामतित्थ, सग्गे पायाति
माणुरसे लोप । जाइ जिणविवाइ, ता
सब्बाइ वदामि ॥ १ ॥

★ १३ श्री नमुत्थु ण सूत्र ★

नमुत्थु ण अरिहताण भगवताण ॥ १ ॥
आइगराण, तित्थयराण, सय सबुद्धा
॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिसमीहाणं, पुरिसव
पुडरीआण, पुरिसवरगधहत्थीण ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाण, लोगनाहाण, लोगहिया
लोगपइवाण, लोगपज्जोअगराण ॥ ४ ॥
अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदया
सरणदयाण, बोहिदयाण ॥ ५ ॥ धम्मदया
धम्मदेसयाण, धम्मनायगाण, धम्मसारही
धम्मवरचाउरतचक्कवट्ठीण ॥ ६ ॥ अ
डिहयवरनाणदसणधराण, वियइछउमा

॥७॥ जिणाण जावयाण, तिन्नाण तारयाण
बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताण मोजगाण ॥८॥
सव्वनूण सव्वदरिसीण सिवमयलमरुअमण-
तमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-
नामधेय ठाण सपत्ताण नमो जिणाण
जिअभयाण ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा,
जे अ भविस्सतिणागए काले । सपइ अ
वइमाणा, सव्वे तिविहेण वदामि ॥ १० ॥

★ १४ श्री जावति चेइआइ सूत्र ★

जावति चेइआइ, उइडे अ अहे अ
तिरिअलोए अ । सव्वाइ ताइ वदे, इह
सतो तत्थ सताइ ॥ १ ॥

★ १५ श्री जावत के य साहू सूत्र ★

जावत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे
अ । सव्वेसि तेसि पणओ, तिविहेण
तिदडविरयाण ॥ १ ॥

★ १६ श्री पंचपरमेष्ठिनमस्त्यार सूत्र ★

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-

साधुभ्य ।

★ १७ श्री उवसग्गहर स्तोत्र ★

उवसग्गहर पास, पास वदामि कम्म-
घणमुक्क । विसहरविसनित्रास, मगल-
कल्लाणआवाम ॥ १ ॥ विसहरफुलिगमत,
कठे धारेइ जो सया मणुओ । तम्स गह-
रोग-मारी, दुइजरा जाति उवसाम ॥ २ ॥
चिइउ दूरे मतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो
होइ । नरतिरिणसु वि जीवा, पावति न
दुक्ख-दोगच्च ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे,
चितामणि-कप्पपायवब्भहिण । पावति
अविग्घेण, जीवा अयरामर ठाण ॥ ४ ॥
इअ सधुओ महायस । भत्तिव्भरनिव्भरेण
हियण्ण । ता देव ! दिज्ज बोहि, भवे भवे

पास-जिणचद ! ॥ ५ ॥

★ १८ श्री जय वीयराय सूत्र ★

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ मम
तुह पभावओ भयव । भवनिव्वेओ मग्गा-
णुसारिया इट्ठफलासिद्धि ॥ १ ॥ लोग-
विरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ पत्थकरण च ।
सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमस्वडा
॥ २ ॥ वारिज्जइ जइ वि नियाणवधण
वीयराय ! तुह समये । तह वि मम हुज्ज
सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाण ॥ ३ ॥
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरण च
बोहिलाभो अ । सपज्जउ मह एअ, तुह
नाह । पणामकरणेण ॥ ४ ॥ सर्वमगल-
मागत्य, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधान सर्व-
धर्माणा, जैन जयति शासनम् ॥ ५ ॥

★ १९ श्री अरिहतचेइयाण सूत्र ★

अरिहतचेइयाण करेमि काउस्सग्ग ॥ १ ॥

वदणवत्तियाए, पूअणवत्तियाए, सक्कार
वत्तियाए, सम्माणवत्तियाए, बोहिलाम
वत्तियाए, निरुवसग्गवत्तियाए ॥ २ ॥
सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहा
वड्ढमाणिए ठामि काउस्सग्ग ॥ ३ ॥

★ २० श्री कल्लाणकद (स्तुति) सूत्र ★

कल्लाणकद पढम जिणिद, मत्ति तज्ज
नेमिजिण मुणिद । पास पयास सुगुणिकक
ठाण, भत्तीइ वदे सिरिवद्धमाण ॥ १ ॥
अपारससारसमुद्दपार, पत्ता सिव दि
सुइक्कसार । सव्वे जिणिदा । सुरविदवदा
कल्लाणवल्लीण-विसालकदा ॥ २ ॥
निव्वाणमग्गे वरजाणकप्प, पणासियासेस-

कुवाइदप्य । मय जिणाण सरण बुहाण,
नमामि निच्च तिजगप्पहाण ॥ ३ ॥
कुदिदुगोक्खीरित्तुसारवन्ना, सरोजहत्था
कमले निसन्ना । वाएसिरी पुत्थयवग्ग-
हत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥४॥

★ २१ धी ससारदावानल स्तुति ★

ससारदावानलदाहनीर, समोहधूली-
हरणेसमीरम् । मायारसादारणसारसीर,
नमामि वीर गिरिसारधीरम् ॥१॥ भावाव-
नामसुरदानवमानवेन,-चूलाविलोलकमला-
वलिमालितानि । सपूरिताभिनतलोकेसमी-
हितानि, काम नमामि जिनराजपदानि
तानि ॥ २ ॥ बोधागाध सुपदपदवीनिरि-
पूराभिराम, जीवाहिसाविरललहरीसगमा-
गाहदेहम् । चूलावेल गुरुगममाणिसकुल

दूरपार, सार वीरागमजलनिधि सादर
 साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूलालोलधूलीबहुल-
 परिमलालीढलोलालिमाळा, झकाराराव-
 सारामलदलकमलागारभूमिनिवासे । ।
 छायासभारसारे ! वरकमलकरे ! तार-
 हाराभिरामे ! वाणीसदोहदेहे ! भवविरह-
 वर देहि मे देवि ! सारम् ॥४॥



★ पहला विभाग समाप्त ★





चरम तोषपति श्रमण भगवत श्रीमहावीर देवर्चिया

चिन्तमय जीवनचरित्राच्या नऊ दृश्यांचा

परिचय

- १ वयवम करायनकाची खोद्या स्वजे
- २ मर पवताच्या गिलतरावर देवांनी साजरा केलेला प्रभूचा जन्मसन्त महोत्सव
- ३ धोभनिगडुंडात होला कल्याण
- ४ अखिल मिष्ट उपसर्गाची इंगळे
- ५ ज्ञानवर्जित नरोच्या काठी कल्याण कल्याणक
- ६ शोभनिक महाराज मोठ्या काठारातले प्रभूचो दगना लक्ष्म्यासाठी समवसरतात जात होते
- ७ यावावापुरीत सोड्या ग्रहाची (४८ तासांची) देवग्या दिल्यामवर निर्वाण कल्याणक
- ८ अग्नि (अग्नि) सत्कारपूर्वमि थो पावापुरी जलपरित
- ९ मरमेत धनानेले मुघनिष्ठ समवसरत

विभाग दूसरा

- (१) भ्रमण भगवान श्रीमहावीरदेवका आदर्श जीवचरित्र
(२) भ्रमण तीर्थोंका सक्षिप्त परिचय (३) १६ सति
वाक नाम (४) २४ तीर्थचरित्र नाम और
लक्षण (५) वैष्णव चरित्र (६) प्रारम्भ
परीक्षाके पुराने प्रश्नपत्र

(१) भ्रमण भगवान श्रीमहावीरदेवका आदर्श जीवनचरित्र

[नीचेके परिच्छेदोंमें संपूर्ण । (१) पहलके २७ भवोंका सक्षिप्त
वर्णन (२) आदर्श जीवनी (३) तपश्चर्याकी तालिका (४) पंच
कल्याणक तालिका (५) श्री चतुर्विध भक्त्या परिचय (६) तीर्थस्थान
(७) उपसर्गोंकी सक्षिप्त जानकारी (८) आत्मसिद्धी तालिका (९)
निवृत्ति विस्तार (१०) तीर्थचर नामानुक्रम न्यायन करनेवालाके
नाम (११) गूढ़ रहस्य (१२) प्रस्तावना]

(१) पहलके २७ भवोंका सक्षिप्त वर्णन

पहले भवमें भगवान श्रीमहावीरदेव पश्चिम महाविदेह
क्षेत्रमें नयसार नाम एक ग्रामचित्तक (चौधरी) थे । एक बार

काष्ठ-इधन आदिवा (लकड़ीवा) संग्रह करनेके लिये आपको जगल जाना पडा। ऐन दोपहरीवा समय होनेसे श्रीनयसार किसी अतिथिकी वाट ही जोह रहे थे कि अपन सधातिपास अलग पड जानके कारण माग भूले हुए कोइ साधु महाराज सामनेसे ही आते हुए दिखाई दिये। श्रीनयसारने निवट जाकर विनती की— 'महाराजजी! आप यहाँ-एस भयावन जगलमें (बीहड़में) कहाँसे? मेरे साथ पधारिय और मुझ लाभ देकर छुताय कीजिये।' सधातिपास अलग पड जानका बात जाकर आपने (ढाढस देते हुए) साधु महागजमे कहा— आप आहार पानी (गोचरी) ग्रहण कर पा कीजिये। बादमें मैं आपका सही रास्ता बतला दूंग जिससे (जाग बढ़ते बढ़ते) आपथीका अपन सधातिपास मेल जायगा। समय देखकर मुनिराजन नयमारका गाचरीका लाभ दिसा। आहार-पानी (गाचरी) पा लेनक बाद मुनिराज विहार करन निमते तब श्रीनयसार उहे पिदा करने जोर सही रास्ता बतलानके लिय उनक साथ टा लिये। मागमें प्रसंगोचित उपदेश देते हुए मुनिराज बोले— 'हू भाग्यशालिन! यह द्रव्यमार्ग बतलानमें आपको बहुत हा बडा लाभ हुआ ह। पर मुक्तिका भावमाग ही प्राप्त करन भाग्य ह। गुड बब-गुद धमका यथाय ज्ञान होनेपर ही मोक्षमागकी ओर प्रयाण हो सकता ह।" यह हृदयद्रावक उपदेश सुनते सुनते श्रीनयसारका सम्यक्त्वकी प्राप्ति हुई। जब किसी भी तीर्थकरनी जा मा सम्यक्त्व प्राप्ता करती ह तबसे वह मुक्तजिह्वाकी पहुँचे तबतक उमके उड जमाकी गिनती की जाती ह। सम्यक्त्वप्राप्तिसे पूर्वके अनन्य जन्म परण तो श्री जैन शासनमें व्ययके—बिना किमी कीमत या उपयोगके बर्ताय गय ह। इस हिसाबसे अनन्तकालक भवभ्रमणके बाद नयमारके भवमें

श्रीमहावीर देवकी आत्माकी सम्यक्त्वकी प्राप्ति होनेसे उनका यह पहला भव बहा गया । श्रीनयसारने पंचपरमेष्ठियाके शुभ ध्यानमें अपना शरीरत्याग किया ।

दूसरे भवमें आप सौघम नामक प्रथम देवलोकमें एक पत्यो-पम आयुष्यवाले देव हुए ।

तीसरे भवमें आप चक्रवर्ती श्रीभरत महाराजाके पुत्र मरीचि थे । भगवान श्रीऋषभदेवस्वामीजीके पास आपन दीक्षाका अंगीकार किया था, पर भली भाँति चारित्र्यवा पालन न कर सकनेके कारण कुछ ही समयके बाद आपने त्रिदंडी (सयासी) का भेष धारण कर लिया । एक बार समवसरणके समय महाराजा भरतने श्रीऋषभदेव भगवानमें पूछा—'ओ प्रभुजी ! क्या भविष्यमें तीयकर होनेवाली कोई श्रेष्ठ आत्मा यहाँ है ?' भगवानने कहा—'आपके पुत्र मरीचि ही इसी जन्मपिणीमें अन्तिम २४व तीर्थकर होंगे ।' यह सुनकर महाराजा भरतने भावी तीर्थकर समझकर मरीचिको वदन किया । यह बात देखते-सुनते ही मरीचिको कुलमद हुआ—'मेरा कुल कितना श्रेष्ठ ! मेरे दादा प्रथम तीय-पति, मेरे पिताजी प्रथम चक्रवर्ती और मैं प्रथम वासुदेव ! और और मैं अन्तिम तीर्थकर भी हूँगा ! इस प्रकार गव करनेसे नीच गोश्रवा कमवध किया जिसे भोगते भोगते जनमें जो थोड़ा बचा वह आपना तीर्थकरके भवमें श्रीदेवानदा ब्राह्मणीके गर्भमें ८२ दिनतर रहकर भोगना पड़ा ।

चौथे भवमें आप पाचवे देवलोकमें १० सागरोपम आयुष्य-वाले देव हुए ।

पाचवें भवमें आप कोल्लाव गावमें कौशिक नामक त्रिदंडी (सयासी) हुए ।

छठे भवमें आप स्पृणा नगरीमें ७२ लाख पूव आयुष्यवाले पुष्प नामक ब्राह्मण हुए ।

सातवें भवमें आप सौधम देवलाकमें देव हुए ।

आठवें भवमें आप ६० लाख पूव आयुष्यवाले अग्निशोत नामक त्रिदंडी हुए ।

नौवें भवमें आप ईशाग देवलोचनमें देव हुए ।

दसवें भवमें आप मदर गाँवमें ५६ लाख पूव आयुष्यवाले अग्निभूति नामक त्रिदंडी हुए ।

ग्यारहवें भवमें आप सनपुमार नामक देवगोत्रमें देव हुए ।

बारहवें भवमें आप द्येतावी नगरीमें ४४ लाख पूव आयुष्यवाले भारद्वाज नामक त्रिदंडी हुए ।

तेरहवें भवमें आप माहेन्द्र नामक देवगोत्रमें देव हुए ।

चौदहवें भवमें आप राजगही नगरीमें ३४ लाख पूव आयुष्यवाले त्रिदंडी हुए ।

पंद्रहवें भवमें आप पाँचवें ब्रह्म देवगोत्रमें देव हुए ।

इस भवके याव थापका बहुत भव भ्रमण हुआ—आपने अनेक छोटे छोटे (क्षुल्लक) जन्म लिये ।

सोलहवें भवमें आप विश्वभूति नामक राजकुँवर थे । समूति नामक गुप्त महाराजके पास आपने दीक्षा ली थी । तपस्या करते करते आपने एक बार तपस्याके बदलेमें बलही याचना की । अनशप्ततरी (जिसमें आमरणात अक्ष-जलवा त्याग किया जाता है ।) तपस्या कर निदान बाँधकर उस तपका विनय किया । इससे फलस्वरूप आप १८वें भवमें त्रिपृष्ठ वासुदेव हुए ।

सत्रहवें भवमें आप महाशुभ नामक देवलोचनमें देव हुए ।

अठारहवें भवमें आप पोतनपुरीमें ८४ लाख पूव आयुष्यवाले त्रिपष्ठ वासुदेव थे । इस जन्ममें आपने अपने संगीतके रसिक नौकरानी किसी एक सामान्य भूलके कारण उमके कानामें गरम गरम सीसा दूमरे नौकरद्वारा उड़ेलवाया । इस कमका उदय अतिकठोररूपमें हुआ—तीर्थंकरके भवमें ग्वालने आपके कानोंमें कीले ठोकी ।

उन्नीसवें भवमें ३३ सागरोपमके आयुष्यमें आपका सातवीं नारकीके दुःख भोगने पड़े ।

गोसवें भवमें आप सिंह हुए ।

इक्कीसवें भवमें आप चौथी नारकीमें गये ।

इसके बाद आप अनेक छोटे-छोटे तियथ आविर्भूत भवोंमें भटकते रहे ।

बाईसवें भवमें आप मनुष्य हुए ।

तेईसवें भवमें आप मका नामक नगरीमें ८४ लाख पूव आयुष्यवाले प्रियमित्र नामक चक्रवर्ती थे । आपने श्रीपोट्टिलाचाय जीके पास दीक्षा ग्रहण कर एक बरौड वर्षांतक चारित्रिका पालन किया ।

चौबीसवें भवमें आप महाशुत्र नामक देवलावमें देव हुए ।

पचोसवें भवमें आप जंबुद्वीपके भरतक्षेत्रकी छत्रिका नगरीमें २५ लाख वर्ष आयुष्यवाले नदन नामक राजपुत्र थे । आपने दीक्षा लेकर आमरणात्त माससमण कर बीस स्थानकी तपस्या की । एक लाख सालतक चारित्रिका पालन करतीथकर नाम-व्रम उपाजन किया । इस तपस्यामें आपने ११ ८० ६४५ माससमण किये थे ।

छब्बीसवें भवमें आप दसवें प्राणत देवलोवके पुष्पोत्तर विमानमें २० सागरोपम आयुष्यवाले देव हुए ।

सत्ताईसवें भवमें तो आप साक्षात् २४ वें तीर्थपति श्री महावीर देव हुए। श्री चतुर्विध मध्वी स्थापना कर अनंत असह्यात जन्म मरणवें भ्रमणवा नाग कर आप मोक्ष गिधारे।

(२) आदर्श जीवनी

पुरिमादानीय श्रीपाद्वनाथ भगवान्‌के बाद २५० वर्ष हो जानेपर इ. स. ५०८ पूव. घत्र शु. १३ और मंगलवारके मंगल प्रातः कालमें सर्वोत्तम मुहूर्तपर क्षत्रियकुडनगरके महाराजाधिगज श्रीसिद्धायजीकी जादश गृहिणी महाराणी त्रिगल्लदेवीके पुनीत गर्भसे १४ गर्भीर अथचाही स्वप्नासे मूर्चिन अनुपम तालिसपत्र पुत्ररत्नका जन्म हुआ। प्रभुजीका जन्म होकर गाय ही नारकियामें भी (ज्ञान) प्रकाश ही (ज्ञान) प्रकाश हो गया। ५६ त्रिभुमारि काएँ प्रभुसेवाका अमृत्य गर्भ उठा आ पहुची। देवराज श्री सौधमेंद्रका आसन कपित होत ही इन्द्र मन्त्राराज भी अपन परिवारके साथ अपूर्व सना भक्तिवा गर्भ उठान समयमें उपस्थित हो गये। माता और प्रभुजीका सविनय वन्दना कर माताजीके पास प्रभुजीका प्रतिबिम्ब रखकर, माताजीकी आज्ञा लेकर स्नात्र महा रत्नव मनानके लिये प्रभुजीका लेकर सभी देवगण मेरु पर्वतपर गये। वहाँ अनेक साथ जलासे प्रभुजीका स्नान कराकर दयदेवियाने जहाँ माताजीके पास रखा और स्वयं नदीश्वरद्वारापय आनन्दोत्सव मनावर अपने अपने स्थान चल गये। सिद्धाय राजान भी पुत्र जन्म-महोत्सव इतनी ता धूम धामस और साज-बाजसे मनाया कि सभीका ऐसा ही प्रतीत हुआ कि माना पृथ्वीपर एक छोटा-सा स्वर्ग ही अवतीर्ण हुआ हो। जन्मात्मव इतनी ता सुंदर ढंगसे मनाया

गया कि सारे-के-सारे नगरमें आनंद प्रमोदकी लहर उमड़ने लगी। राजा सिद्धाथने याचकोंको इतना तो दान दिया कि दारिद्र्यका नाम निशानतक न रहने पाया।

भगवानका नाम श्रीवद्धमानकुमार रखा गया। आत्मगुणोंके स्वयंप्रतापी तेज और सामर्थ्यमें अन्वयक ऐसा इन्द्रद्वारा संबोधित 'महावीर' उपनाम भी लोगोंके मुहमें सहसा निकल पड़ा।

- श्रीवद्धमानकुमार अथ राजकुंवरोंके साथ अनेकों बार गाँवकी सीमाके मदानमें खेलने जाते। एक दिनकी बात है किमी देवने प्रभुजीके बलकी परीक्षा लेनेके लिये एक भीषण साँपका रूप धारण कर लिया और वह प्रभुजीको डरानेकी चेष्टा करने लगा। उस समय श्रीवद्धमानकुमारने जरा भी घबड़ाये बिना उस साँपको उठाकर फेंक दिया। इसीसे आप 'महावीर' कहलाय। फिरसे खेल गुरु होनेपर (वाह्यवाह्य लक्षणवाली आमलकी नामक) बालश्रीडामें उमी दहन प्रभुजीका अपने कंधेपर बठाया और महिमा सिद्धिके प्रभावसे वह अपना स्वरूप बढ़ाने लगा। यह देखकर श्रीवद्धमानकुमारने उमकी गरदनपर ऐसा तो कसकर धूसा जमाया कि उस दहन तुरत ही अपना मूल स्वरूप प्रगट कर सभी राज-कुमारोंके समक्ष भी उहुत ही नम्रतामें प्रभुजीके पास स्वयं की हुई भूलकी क्षमायाचना की।

विद्याभ्यासक योग्य आयु होते ही महाराजा सिद्धाथने बड़े समाराहके साथ मंगल दिन शुभ मुहूर्तपर वद्धमानकुमारका विद्याभ्यास पाठशालामें दाखिल किये। शिक्षकोंको सुदर-सुदर भेंट और उपहार दिये गये और पाठशालाके विद्यार्थियोंको बढ़िया बढ़िया पारितोषिक और भेवा भिठाई देकर प्रसन्न किये गये। शिक्षकोंके हृदयमें प्रभुजीका पढ़ानेकी अनेकानेक भावनाएँ थी, पर

जागीरों तो मिथानना ही क्या हो सकता है? शिक्षक प्रभुजीको पठावे यह प्रभुजीका विद्यार्थन टालनेके लिये द्रुमहाराज वहाँ ब्राह्मण बनकर आये और प्रभुजीके साथकी चर्चा प्रश्नोत्तरीमें शिक्षकके मनमें पहलकी जा सकाई थी, उसे दूर किया। इसी समय श्रीवद्वत्मानकुमारने 'जैनेन्द्र व्याख्यान' की रचना की।

कर्मकी अटल और अगम्य सत्तासे बौन बचा है? भोगवलि कर्मके उदयक कारण एक दिन माता पितृका बहुत ही आग्रह होनेसे यशोदा नामक मुलम्पणसपन्न राजकुँदरीके माथ आपका पाणिग्रहण हुआ। 'सयविरतिना जगोकार किये बिना मोक्ष मिलनेवाला ही नहीं'—यह बात आप विरागी भन्नी भाँति जानते थे, इस लिये विवाह होनेपर भी आप सत्तारके विषय-व्यापयवधक रग-रागमें न डूबकर निरूपप्राप्त हो रहे। आपके प्रियवक्षता नामकी एक लड़की थी।

२८ वर्षकी आयुमें आपका माता पितृका वियोग हुआ। सारी-की-मारी नगरी शोकसागरमें डूब गई। आपने अपने बड़े भाई महाराजा नरसिंहजीको 'गरीरकी क्षणभंगुरता-नश्वरता और आत्माकी अमरता नित्यता बताकर उनका माता पितृके वियोगका दुःख हलना किया। माता पितृका आपने प्रतिबन्ध अपरपार प्रेमभाव देखकर 'माता पितृ जन्तु जीवित होय तबतक मैं दीक्षा नहीं लूँगा।' ऐसा अभिग्रह आपन गममें ही लिया था। यह अभिग्रह पूरा होनेसे बड़े भाईका दुःख क्षान्त होनेके बाद आपन उनके पास चारित्र्य ग्रहण करनेकी आज्ञा माँगी। बड़े भाई नरसिंहजीने आपको बहुत समझाया तब आपन और दो साल सत्तारमें रहना स्वीकृत कर अंतिम वयमें मुक्त हाथाने 'वरसीदान' दिया माने पानके क्षरण-मोते ही बहाये।

श्रीवद्विमानकुमार ससारको छाड दीक्षा लेने जा रहे थे इसी लिये महाराजा नदिवधनने यह दीक्षा-महोत्सव बहुत ही धूम धाम और साज वाजसे तथा आनन्द और उत्साहके साथ मनाया । इसमें महाराजा इन्द्रकी भी संपूर्ण सहायता थी ।

दीक्षाका उदा भारी व मनाहर जुलूम राजमहलस निकलकर सारे नगरमें घूमा । उसमें देव-देवद्र विद्याधर नर-नारिया आदि सभी हृपनिभर होकर जा रहे थे । हाथी घाडे रथ पालकियाँ आदि अनेक प्रकारकी अपरंपार सवारिया उसमें थी । तरह-तरहके वाद्य-वाजाकी मुरम्य ध्वनिकी गुजारमे प्रेम्भकोके हृदयमें आनन्द उमडने लगा । जुलूसके गुरुमें ही इन्द्रध्वज था । जुलूसके ठीक मध्यमें एक विभूषित पालकीमें श्रीवद्विमानकुमार सोहत थे । क्या उनकी अलौकिक कानि ! और क्या उनकी अनुपम शोभा ! आपने गुत्तर-सुन्दर वस्त्र-आभूषण धारण किये थे । आपने किये हुए चदन आदि सुगन्धित द्रव्याक विलेपनसे आपकी चारो ओर परिमल फली थी । आपको देखनेके लिये लाखों और करोड़ों मानवियोंने समूह चारा ओर लगे थे । यह जुलूस सारे नगरमें घूमकर नगरक बाहर एक विशाल बगिचे नीचे ठहरा ।

वह दिन कार्तिक कृ १० का था । चौथा प्रहर ही गया था । गाव बाहरके उस बगीचेमें महाराजा नदिवधन विराजमान थे । देव देवद्र और नर-नारियाकी उपस्थिति पूरी-पूरी थी । तीस वषकी ऐन युवावस्थामें भी श्रीवद्विमान कुमारने जपूव उत्साह और अप्रतिम समारोहके साथ पंचमुष्टि स्तोत्र कर आत्मकल्याण कराने वाली, भव भ्रमणमें छुडानेवाली और सिद्धिगति मोक्ष नामक अनुपम शाश्वत धाम प्राप्त करानेवाली भागवती दोष्वादा अगीवार किया ।

क्षत्रियनुह नगरीकी जनता भाग्यशाली कि उस श्रीवद्धमान कुमारकी दीशानी रम्य विधि देखकर उह धनवान् दोषा और वदन करनेवा मु-अवसर प्राप्त हुआ। महावीर प्रभुजीने तो सबग त्रिदा मांगकर निभयतासे बनव दुगम और भयात्रने मागकी ओर अपने ही प्रयाण किया।

बिना दन तो द दी पर महावीर प्रभुजीने वधुजनोकी नाजुब आँखामेंसे प्रियवियागकी अश्रुधाराए बह्न गयी। सभी तारजनकी आँखें भी अश्रुपूण हा गयी और हृदय गहगहन लगा। पर समस्त जीवाना कल्याण करनेवाले बेयल एकमात्र परमोच्च शासनके लिये यह सब सहन कर महाराजा नदिवदन और सब प्रजाजन पित्त मुष्म नगर भेटे।

धारिद्रवा अतीवार करनेवा बाग भगना श्रीमहानीर देवन अपन सरीरको पगया ही मान किया और दव देवियाबे, मनुष्याए और पशुआबे विवरालसे विवरान व रोमाचपारी उपसर्गाकी विरकु समभावस सहन किया। इस प्रकार ग्राम-अनुग्राम विहार करत हुए आपन अनन उपवार कर भव्यजीवाको समागम स्थिर किया।

एन बार महावीर प्रभुजी भोराक गाँवस विहार कर श्वेतात्री नगरीकी ओर जा रहे थे कि मागमें ही खाल लाग मिले। खालाने विनयपूर्वक विनती करते हुए आपसे कहा—“आ स्वामीजी! आप जिस मागस जा रहे ह, वह माग ठीक सीधा सीधा श्वेतावाकी ओर ही जाना है किन्तु रास्तम ही बनवल नामक तपस्विनोका एक आश्रमस्थान आता ह जहाँ चड्डीशिव नामक एक भयान दष्टिविष सध रहता ह। इस साँपन अनेक जावोका काम तमाम किया ह, इस लिये आपका उस ओर नही जाना

चाहिये। पर आपको पूरा विश्वास था कि यह साँप जरूर सुधरेगा। जन एव आपने स्वान्त्रिकी इस बातको जनसुनी कर उस साँपका सुधारनेकी उपकारकी भावनास निभयतावे साथ उस भयावने बनके भागकी जोर प्रयाण किया।

जात जाते करुणानिधि प्रभुजी उस अमंगल व डरावने जगत्के ठीक मध्यमें आ पहुँचे। अत्यन्त ही घनी खाड़ी अनगिनत लताओंसे लपेटो हुई थी। और उसमें भी एक बड़े पेड़के खोडरमें एक बड़ा बिल था। उस बिलमें फूँ ऊँ ऊँ, फूँ ऊँ ऊँ ऐसे डरावने फुफकारकी आवाज आ रही थी। चूँकि वह भयंकर दृष्टिविषय था, उसकी विष दृष्टि पड़ते ही सब नष्ट हो जाता था। फुफकारने निकटकी परिस्थिति अर्थात् सारा-का सारा वामुमडल ही विषमय हो गया था। हरे-हरे व छोटे-छोटे पड़ और उनकी कोमल पत्तियाँ भी उसके विषम नष्ट हो गई थी। निकट रहनेवाले कई एक छोटे बड़े निरपराधी जीव-जंतु-ओंको मरणका आश्रय लेना पड़ा था।

कोई आदमी यहाँ निकट आया हूँ ऐसा जानते ही वह दुष्ट साँप क्रोधावेशमें ही बाहर आया और तुरन्त ही जोर गोरस फुफकारता हुआ करुणानिधि-दयासागर उस महात्माजीकी ओर सन्नाहम आया।

योगनिष्ठ प्रभुजी तो बबके ही उस बिलके पास काउत्सर्ग ध्यानमें स्थिर हो गये थे। अपने अनेक बारके जहरीले फुफकारोंमें प्रभुजीको कुछ भी (उपद्रव-नष्ट) नहीं हुआ, यह देखकर साँपके क्रोधवा याह ठिकाना न रहा। उसने सहमा सन्नाहमें आकर समभावी प्रभुजीके पाँवमें दस किया। योगेश्वर प्रभुजी तो क्षमा और शांतिके अदत्तार ही थे! आप जरासे भी चलायमान न हुए।

‘हुआ आपपर दावा कुछ भी अमर ! और न चढा आपका जहर !’ अब तो चटवौगिक चढ़न ही पाघवे आवागमें आ गया और उमने भगवावाका और कई दश किये पर सब निष्फल ! पाँचप रंग धाराभसे लाल गूनन स्थानपर अमृतनुत्य गुग्गुलूय निरलत देववर चढवागिकका महानदचय हुआ । ‘यह आदमी अभी गिर जायगा अभी गिर जायगा’ ऐसा समझकर अपनेपर हमका गगेर न गिर नम हिसारसे यह प्रभुजीके निकट आता और दूद जाता । ऐसा बार बार करते करते यह चटवौगिक थक गया और अतम उम भटान जगत्तरपूण यागीराजको एवटकम देता गया ।

साँपको आश्चर्यचकित जोर स्तब्ध हुआ तैत उचित समय समझकर योगीश्वरजी चढ़ किनु वाज्यायर गल बोले — ‘ब्रूहा ! चढवौगिक, ब्रूहा !’

इत वणमधुर अमृतमय और कमकारपूण गब्दाकी सुनकर चढवौगिक आँधर ही त्रिस्मित हुआ । उसे गवा हुई — ‘क्या यह आवाजवाणी तो नहीं हुई ?’ साँपने तो पहले समझ लिया था कि यह कोई मामूली आदमी नोका पर यह तो अतनय किन्नीति निरली । अतनेमें उठी घात व मुमधुर आवाज सुनाई दी । अब चटवौगिक समझ गया कि य गद्द मरपर महान उपकार करावाले प्रभुजी ही वाज रह । उमने क्षणभर रोषको शांत करविचार-मागरमगाना गाया—आममयन करना शुरू किया । अब उमने मय समझन लगा — ‘आततक मने रोषवे बना है अनगिनत जीवाका सहार कर पापकी गठरी की-गठरी घाँघ ली है ।’ उसे अब पूर्वकृत हिसामूलन उन पापकी लिये बहुत ही पश्चात्ताप होने लगा, हृदय गहरा गया, आँखोंमेंसे अश्रुधारण

बहुत लगी। उन महान योगीराजके शुद्ध बुद्ध होनेके मन्त्राक्षरसम उन दिव्य शब्दोंकी मशालकी चिनगारीसे चडकौशिकके हृदया-
कागमें उद्दीप्त ज्ञानज्योति प्रगट हुई। अबसे अपने द्वारा किसीका
भी दुःख-दृष्ट न पहुँचे इस लिये मन-ही-मन सत्य, अहिंसा और
क्षमाका सवश्रद्धा अमूल्य व्रत धारण कर चडकौशिकने योगीराजके
चरण-कमलाम अपना मस्तक नमया। बादमें उसने अपना केवल
मुह विलम्बे रख सारा शरीर विलम्बे बाहर ही रखा और स्वयं
आत्मध्यानमें स्थिर हो गया। उपकारी महापुरुषाकी छाया क्या
कर सकती है, इसका यह अद्वितीय दृष्टान्त है।

वर्णानिधान दयामागर प्रभु श्रीमहावीरदेवने चडकौशिक-
पर महान उपकार किया और अपना निश्चित काय सफल हुआ,
ऐसा देखकर वहाँसे विहार किया। चडकौशिकके जीवनमें दिव्य
चमत्कारसमान अद्वितीय परिवर्तन हुआ गया। मार्गभ्रष्ट आत्माकी
वृत्ति स्थिर हो गई। परमदेव आत्माकी शीतल छाया पड़नेसे
साँपका भी उच्चार हो गया। दृष्टिविषय सब जैसे क्रूरतम जीवा-
त्माको भी आत्मदमनका मार्ग प्राप्त हुआ और उसमें अपूर्व सहन-
शीलताकी शक्ति (गुण) उत्पन्न हुई। अपनी हिंमत, अपनी
धीरता और अपनी आत्मशक्ति कितनी है, इनकी कसौटीका —
जानकर प्रयोगमें रखनेका समय अब आ गया है, यह देखकर
चडकौशिकको आनंद हुआ।

ऐसी पवित्र छाया पाउनेवाले अर्थात् ऐसी चमत्कारपूर्ण
परिवर्तन करनेवाले और ज्ञानका दिव्यमन्त्र मुनानेवाले (ज्ञानके
दिव्यमन्त्रका उपदेश करनेवाले) योगीश्वर भगवान श्रीमहावीर-
देवको कौन न नमस्कार? अनन्त जीवके कल्याणके लिये जिन्होंने

अपन प्राणासी भी परबाह्न दिये बिना घने व भयान्ने जगलमें प्रवेश कर गुरनम चडवीशिव विषघरकी बुझारर सबथेठ क्षमासा पाठ पढ़ाया, उन महाप्रतापी योगीश्वरजीको धन्यवाद हो । कोटि कोटि धन हो उन महाप्रतापी प्रभुजीको । सप होते हुए भी जिसने अहिंसा और क्षमाके परमपवित्र मार्गमें प्रमाण करानेवाले और क्षमाके भांडार श्रीवीरप्रभुजीका आश्रय लिया उस चडवीशिवजी भी धन्यवादा हो ।

सगम नामर जभवी दुष्ट दवन समानिधान भगवान श्रीमहावीरदेवको केवल एक ही रातमें छोट-बड़े कुल मिलाकर २० महान् महान (भयार) उपसंग किये । जाज भी इन उप संगोंका वणन सुनते ही हमारे गण्ड रूड हो जात ह । महाराजा इद्रकी "म वानवा पता" पस्त ही उन्होंने उस देवको इस दुष्ट कृत्यके लिय दंड कर वहाँम भगा दिया ।

भगवान श्रीमहावीर प्रभुजी एक समय जगन्म काउम्माग ध्यानम मग्न थ । उस समय एक ग्वाल वहाँ जाया और उसन अपने बलान्ने भगवानके पास रख स्वय किमी कामने लिये चला गया । भगवान तो ध्यानम थे इस लिय उह यह बात मालूम भी न बी । बल ता चरते चरत कहीं दूर चल गये । कुछ समयके बाद ग्वाल प्रभुजीके पास लौटा तो उसे वहाँ बल न दिखाई दिय । तब उसने भार जगलम पता ग्याया पर वहाँ भी बल न मिले । फिरम जब वह भगवानके पास आया, तब उस कहीसे चरकर लौटे हुए बल उठी लियाइ दिय । जानत हुए भी इस आशमीने मुझ वेंसार घुमाया, ऐसा समझकर नोधावक्षमें आकर उस ग्वालने प्रभुजीके कानाम कील् ठोकरर उपसंग किया, पर भगवान तो

ध्यानमेंसे जरा भी चलित न हुए । कुछ समय बाद इस बातका पता चलने ही एक श्रावक और एक बद्ध—दानाने मिलकर कील निकाली, उस समय शरीरस्वभावसे प्रभुजीने मुहमन चीम्य चिन्तपो निकल गई । पहले त्रिपुष्ट वासुदेवने (१८ वे) भवमें भगवानने अपने नौकरने कानामें सीसेका जा गरम गरम गन उडल गया था उस कमना फन इस तरह की गन उपमगद्वारा भुगतना पडा । प्रभुजीके दिलमें किसीके भी लिय राग या द्वेषका स्थान न था । स्वयं दक्षिणसपन्न होते हुए भी कीलाका उपमग करनेवालापर त्राघ न कर समभाव रखकर कष्ट सहन किये यह प्रभुजीकी मपूणताना बडा भारी (अद्वितीय) प्रमाण ह । 'कमभोग' उदयके समन रातक बनाय कम करते समय ही वन्दुत-वदुन मोच त्रिचार करना चाहिये । कारण यह ह कि कममत्ता तीर्यकर जसी महान् आत्माआका भी क्षमा नही करती ।"—यह शिक्षा हम इस घटनासे प्राप्न होती ह ।

इस प्रकार श्रमण भगवान श्रीमहावीरदवन सभी-के-सभी उपसग निडरतासे सहन किये त्रिना त्रोध किये महे दीनतारहित होकर आर शरीरकी अपूव निश्चलतान साथ बरदास्त त्रिये । आपन तीयकरके इस अन्तिम भवम भी दीक्षा लनके बाद और कवलानकी प्राप्नितक—साढेवारह वष शरीरपरके मोह ममत्वको अर्थात् कायाकी पराधीनताको दूर करनेके लिये लगातार घोर तपस्याएँ की ।

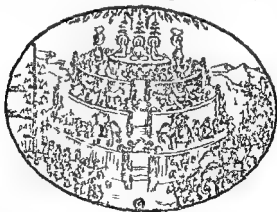
यशाख शु १० का वह दिन था । भगवान श्रीमहावीर प्रभुजी निजल छटठकी तपस्यामें थे । और आप ऋजुवालिखा नदीके तीर इयामक नामक गढम्यके खेतमें गाल नामक दूक्षके

नीचे गोदुहासनमें बठकर सूयवी आतापना ऐ ही रहे थे कि आपको
 केवलज्ञान हुआ ।

उम समय वहा
 आग्नि जगाकार
 करनक योग्य कोइ
 भी न हानसे केवल
 ज्ञान म हो त्स व
 मनानके लिय जाय
 हुए इद्र आदि
 देवाका जापने कुछ
 समयतक देशना द



और विहार कर दूसरे दिन आप पावापुरीके निवट महसेन यनमें



पहुंचे । देव भी वहाँ तुरन्त ही आ पहुँचे और उन्होंने समवसरणकी
 रचना कर केवलज्ञानी भगवत श्रीमहावीर प्रभुजीको देशना देनेके

लिये बिनती का । रत्नासे सुशोभित सिखरवाले व एकके ऊपर दूसरा, ऐसे तीन गडोंसे रमणीय समवसरणमें विराजकर भगवानने १२ पपदाओमें देशनामृतका पान कराया । ३४ अतिशयसम्पन्न प्रभुजीका सुमधुर ध्वनिवाली यह दशना एक याजन (चार कोस) तक साफ साफ सुनाई देती थी । उसे सुननेके लिये देव, देविया, विद्याधर, नर, नारिया, पशु, पक्षी जादि भी जाये थे । देशनाका चमत्कार यह था कि उसे देव मनुष्य, पशु आदि सभी अपनी अपना भाषामें समझ लेते थे । प्रभुजी पूवका ओर मुह किय बठे थे, पर दोप तीनों दिशाओमें देनेने प्रभुजीकी सत्स तीन प्रतिमाएँ बनाकर रखी थी, इसमें भगवान चारों दिशाओमें बठे ही ह, ऐसा मालूम होता था । देशना पूण होनेके बाद गौतमस्वामी महाराज एक उनके भाई आदि ११ महाविद्वान ब्राह्मण और उनके शिष्य आदि मिलाकर ४४०० ब्राह्मणोंकी शकाओका आपने एक ही साथ समाधान कर उह समागकी ओर ले जाकर दीक्षा दी । बशाख शु ११ के दिन आपने ११ गणधराकी स्थापना—तीर्थकी स्थापना एक साधु-माध्वी श्रावक श्राविका स्वरूप श्री चतुर्विध सधकी स्थापना की । इसी प्रकार लगभग ३० साल तक आपने दिय दानाएँ दी ।

गोशालक नामक एक धूत था । वह अपनका अनन्त परोपकारी प्रभुजीका शिष्य बतलाकर उनके साथ फिरता था । भगवानके लिये तो वह एक विघ्नरूप ही था । वह इतना तो दुष्ट था कि प्रभुजीने उसपर अनेकाअनेक उपकार किये थे, फिर भी वह मखलीपुत्र गोशालक अच्छे खानदानका न हानेके कारण प्रभुजीकी घोरतम आशातनाएँ करते भी हिचकिचाता न था । ममभावी भुजीने तो उसकी दया कर उसकी अनेकाअनेक प्रसंगोंमें रक्षा

की थी और उस तेजोल्ह्या भी सिपाई थी । पर वह गोशालक तो उपकारका बदला अपकारमें उतारनेके लिये भगवानके सामने हा गया । उसने तीथर जसा पाखंड आडम किया, अपना आसन अलग ही लगाया और म्वय जिनमें तेजोल्ह्या सीता था, उन प्रभुजीपर ही उस तेजोल्ह्याका प्रयोग किया । यद्यपि इससे प्रभुजीकी आयु न खतम हुई या न १५०० भी हुई पर "जो गढा खोदना है, वही उसमें गिरता है (या जो जस करहि सो तस फल खाखा)"—इस लोकावितक अनुसार वह तेजोल्ह्या उलटनेसे पामर गोशालक ही मृत्यु हुई । यह गोशालक नितना दुजन, दुष्ट और महापापी कहायेगा । वर-गतिवाले महानुभाज भगवानके पश्चात् आज भी हैं और इसी प्रकार के प्रभुजीके शासनका कलक लगे वसे काय करत हैं, यह वडे ही खदकी बात है ।

गोशालकने लिय भगवानके दिलमें खर तो था ही नहीं । क्षमानिदान प्रभुजी तो समताने भाडार थे । जो सेवा भक्ति करे उनपर राग (प्रम) नहीं और जा निरा या अहित करे उसका द्वेष भावनासे कुछ विगाडते नह—आप रागी और द्वेषीकी ओर उपकारकी समान दृष्टि ही रखते इसी लिये सभी लोग आपका 'धीतराग भगवान' समझते थे ।

गोशालकको अंतिम क्षणमें बहुत ही दुःख २ पश्चात्ताप हुआ— "मैं वैसा महान पापी । मेरे जसा अधमाधम कौन होगा ? भले उन परम पुनीत प्रभुजीके पास रहकर भी उनकी अनेकानेक आशातगएँ का ह ।" इस प्रकार पश्चात्ताप करनेसे आगिर गोशालककी भावी गति सुधरी । "भगवानके शासनमें

इस पंचम कालमें इसी प्रकार गुरु-गुरुमें दुष्ट लोग सज्जनावा
हरान-परेसान करगे घूत-मासडी लोग सत महात्माओं-सा स्वाग
वनायेंगे, पर अंतमें तो सत्यकी ही विजय होगी । ”—यह रहस्य
इस घटनामें सूचित किया जाना है । और आजका प्रत्यक्ष अनुभव
भी यही है ।

केवलज्ञान प्राप्त होनेके बाद भगवान श्रीमहावीर प्रभुजी
गांव-गांवमें विहार करते और देगना देकर अनगिनत जीवापर
जनत उपकार करते थे । आपने पावापुरी पधारकर वहां अपना
अनिम धातुर्मास किया ।

ओ हा हो हो हो ये कितने दीपक ! घर
घर और स्थान स्थानपर दीपक ! दीपकारी तो था ही नहीं ।
इसका कारण यह है कि आश्विन कृ ३० के दिन (विहार
प्रदेशमें) श्रीपावापुरी तीर्थमें भगवान श्रीमहावीर प्रभुजी निर्वाण
सिंघारे और जिस प्रकार सूर्यास्त होनेके बाद अधिकार दूर
करनेके लिये सवन दीये जलाये जाते हैं, उसी प्रकार सूर्य समान
तजस्वी ज्ञानमय साक्षात् प्रभुजी मोक्ष सिंघार तत्र पानप्रकाश
करनेवाले प्रभुजीकी अनुपस्थितिमें पसग्नवाले गहरे अधिकारका
फलाने न देनेके चिह्नस्वरूप प्रभुजीके निर्वाण दिन आश्विन
कृ ३० को लोगोंने घर घर दीपक प्रगट किया । तबसे आश्विन
कृ ३० को दीपक प्रगट करनेका पर्व (त्यौहार) ही शुरू
हुआ, जिसका नाम 'दिवाली' या 'दीपावली' रखा गया ।
(तुरंत दूसरे ही दिन) कार्तिक शु १ को महावीर प्रभुजीके
प्रथम गणघर श्रीगौतमस्वामीजीको प्रातःकालमें ही केवल ज्ञान
प्राप्त हुआ । गणघर श्रीगौतमस्वामीजी अनन्त लब्धिनिधान थे.

वीर प्रभुजीक ११ गणघराम प्रधान व प्रथम थे, फिर भी गणघर श्रीसुधर्मास्वामीजीकी आयु विनाप दीघ होनेसे वीर प्रभुजीने श्री-सुधर्मास्वामीजीको ही समग्र परिवारके मुख्य नायकके स्थानपर नियुक्त किया था। भगवान श्रीमहावार प्रभुजीको मोक्ष सिधारकर आज द्वाई हजार साल बीत गये हैं।

अतः करणवी गहराईमस—अति गहराईमेंस—अति अति गहराईमेंसे प्रादुर्भूत होकर समग्र आत्मप्रदशको व्यापकर मुझमेंसे निकलनेवाला 'महावीर' सत्य वितना सुंदर, गंभीर, भव्य और अभूत मालूम होता है। जिसके स्मरण उच्चारण मात्रके साथ ही हजारों कथा, पर असंख्य भक्ति भावसं परिपूर्ण आत्माओंके हृदय निमल हो जाते हैं और सिर महमा झुक जाते हैं, उस महान् विभूतिका वितना उपकार मान सकते हैं? जिनका भी उपकार स्मरण करके उतना कम नहीं है। सचमुच, भगवान श्री-महावीर देवने सम्यग्ज्ञानका सही प्रकाश डालकर इस दुनियामें धर्मक नामपर होनेवाली भयंकर हिसाएँ, अमानुष दुराचार, धमता आदिम होनेवाले पागल वहमी (लेकिन झूठी) मायताएँ आदिका भट्ठाफाड़ किया। 'जीजो और जीन भी दो।' और 'सभीका जीवनका अधिकार है।' —यै दाना सूत्र आपका यथायथ अमूल्य उपदेश एवं सन्देश है। शाश्वत शांतिका सत्यमाग बतलाने के लिए भारतभूमिपर महान् उपकार किया। उस परमोपकारी महान् दिव्य विभूतिने अनंत जीवोंका उद्धार करते हुए अपनी ७२ सालकी आयुको पूर्ण कर मोक्ष प्राप्त किया। कोटिश बदन हो, उस परमादरणीय विभूतिको।

(३) तपश्चर्याकी तालिका

तपस्याकी अवधि	दिनकी बार ?	भगवान श्रीमहा- श्रीरत्नेश्वरने दीक्षा लेनेके बाद केवल- ज्ञानकी प्राप्ति तक साडेबारह साल इस तपस्याके अनुसार धार तपस्या की। यह सब तपस्या निजल ही थी। आपकी कम-कम तपस्या उठुकी रही किसी भी समय आपने एक उपासण कर धारण नहीं किया था। आपन नित्य रूपमें तो किसी
६ मास	१ बार	
५ मास २५ दिन	१ बार	
४ मास	१ बार	
३ मास	२ बार	
२ मास १५ दिन	२ बार	
२ मास	६ बार	
१ मास १५ दिन	२ बार	
१ मास	१२ बार	
१५ दिन	७२ बार	
१० दिन	१ बार (सयतामद्र प्रतिमा)	
४ दिन	१ बार (महाभद्र प्रतिमा)	
३ दिन	१२ बार (अष्टम)	
२ दिन	१ बार (भद्र प्रतिमा)	
२ दिन	२०९ बार (छद्र)	
पारणा ३४९ बार		

दिन भोजन पाया ही न था। साडेबारह सालभरम आपना प्रतिदिन दो घण्ट (दो घड़ी या ४८ मिनट) तप ही निद आर्य थी।

(४) पञ्चकल्याणककी तालिका

- (१) ज्यवन कल्याणक—आपाठ शु ६
- (२) जम कल्याणक—चत्र शु १३
- (३) दीक्षा कल्याणक—वार्तिक कृ १० (३० सालकी आयुमें आपने दीक्षाका अंगीकार किया और बादमें साडेबारह सालतक घोर तपस्याएं की।)

- (४) वैवर्तज्ञान कल्याणक—वशातः दु १० (४२
 रती उग्रमें आपकी वैवर्तज्ञान हुआ ।)
 (५) मोक्ष कल्याणक—आश्विन वृ ३० (७२ साल
 में आप मास सिधारे ।)

(५) श्री चतुर्विध सघका परिवार

- (१) साधु महाराज—अनतलब्धिस्थान श्रीगौतमस्वामीजी
 महाराज श्रीसुधर्मास्वामीजी बगरह ११ गणधर आदि १४,००
 (२) साध्वीजी महाराज—चदनवालाजी प्रमुख ३६,००
 (३) श्रावक—आनंद रामन्ध आदि १,५९,०००
 (४) श्राविकाएँ—सुलसा प्रमुख ३ १८,०००
 भगवान श्रीमहावीरदेवका शासता २१,००० साल तक रहने
 वाला है । इसमेंसे जो लगभग ढाई हजार साल बीत गये हैं, उनमें
 घटानेपर भी अभी भी साढ़ेअठारह हजार सालतक आपका शासन
 रहेगा । आपके सामन्य ग्यान मातंग यक्ष और सिद्धायिका देवी हैं

(६) तीर्थस्थान

पावापुरी साचार, क्षत्रियकुंड कुलपाय, नादिया, महुवा
 पानसर दीआणा, मूछवाले (मुछाला) महावीर, लाल (राता)
 महावीर वामनवाडा आदि भगवान श्रीमहावीरस्वामीजीके
 तीर्थस्थान हैं ।

ऐसा कहा जाता है कि प्रभुजीके श्रेष्ठ बंधु श्रीनदिवधनजीके
 नामसे धीनाशियाजी तीर्थ बसा है । वहाँ महाराजा श्रीनदिवधनजीके
 जीवितस्वामीजीके संपूर्ण प्रमाणोंसे युक्त और सारे भारतभरमें
 अद्वितीय ऐसी महान् प्रतिमा स्थापित की है । मानो साक्षात्

श्रीमहावीर प्रभुजी देशना ही दे रहे हो, ऐसी वह मूर्ति अद्भुत प्रतिभात होती है।

(७) उपसर्गोंकी सीक्षित जानकारी

भगवान श्रीमहावीरदेवने अनकानेक उपसर्ग सहित किये, उनमेंसे प्रथम उपसर्गोंकी यह सन्निप्त जानकारी है।

(१) कुमार नामक ग्राममें ग्वालका उपसर्ग

(२) अस्थिक ग्राममें गूलपाणि यक्षका उपसर्ग

(३) इवेताबी नगरीकी ओरके मार्गमें जगलम चण्डीशिव सापका उपसर्ग

(४) सुरभिपुरमें गंगा नदीके किनारे सुदृष्ट दंष्ट्राका उपसर्ग

(५) हरिद्वारमें बाहर हरिद्वारके नीचे अग्निका उपसर्ग

(६) शालीशीप गावमें कटपूतना व्यतरीका शीत उपसर्ग

(यह जघन उपसर्ग है।)

(७) शालवन ग्राममें शालार्या व्यतरीका उपसर्ग

(८) वज्रभूमिमें म्लेच्छाका उपसर्ग

(९) दंड भूमिमें पटाल नामक गाँवके बाहर सगमदेवने एक ही रातमें किये हुए बड़े-बड़े बीस उपसर्ग (सगमदेवके इन बीस उपसर्गोंमें एक उपसर्ग (१८ वा) था—प्रभुजीपर कालचक्रका प्रयोग। यह मध्यम उपसर्ग है।)

(१०) पण्मानी ग्राममें ग्वालका उपसर्ग (ग्वालने ठोकी हुई कीले निकालते समयका विशेष कष्ट। यह उत्कृष्ट उपसर्ग है।)

(११) केवलान हानके बाद गाशालककी तेजोलेख्याका उपसर्ग

(४) केवलज्ञान कल्याणक—वैशाख शु १० (१४२॥ सालकी उम्रमें आपको केवलज्ञान हुआ ।)

(५) मोक्ष कल्याणक—आश्विन कृ ३० (७२ सालकी आयुमें आप मात्स्य मिषारे ।)

(५) श्री चतुर्विध सधका परिवार

(१) साधु महाराज—अनंतलब्धिनिधान श्रीगीतमस्वामीजी महाराज, श्रीसुधर्मास्वामीजी बगरह ११ गणधर आदि १४,०००

(२) साध्वीजी महाराज—चंदनवालाजी प्रमुख ३६,०००

(३) ध्यावक—आनंद कामदेव आदि १,५९,०००

(४) ध्याविकाएँ—मुलसा प्रमुख ३ १८,०००

भगवान श्रीमहावीरदेवका शासन २१,००० सालतक रहने वाला है । इसमेंसे जो लगभग ढाई हजार साल बीत गये हैं उन्हें घटानेपर भी अभी भी साठअठारह हजार सालतक आपका शासन रहगा । आपसे शासनके रक्षक मात्स्य यक्ष और सिद्धायिका देवी हैं ।

(६) तीर्थस्थान

पावापुरी, सानोर, क्षत्रियकुंड, कुल्पाक, नादिया, महवा, पानसर, दीआणा मूछवाड़े (मुछाला) महावीर, लाल (राता) महावीर, वामनवाटा जादि भगवान श्रीमहावीरस्वामीजीके तीर्थस्थान हैं ।

ऐसा कहा जाता है कि प्रभुजीक श्रेष्ठ बधु श्रीनदिवधनजीके नामसे श्रीनादियाजी तीर्थ बसा है । वहाँ महाराजा श्रीनदिवधनजीने जीवितस्वामीजीके संपूर्ण प्रमाणासे युक्त और सारे भारतभरम अद्वितीय ऐसी महान् प्रतिमा स्थापित की है । मानो साक्षात्

(११) गूढ़ रहस्य

- ★ मूल समवसरणमें बैठनेका ऐश्वर्य प्राप्त हो, ऐसी भगवान श्रीमहा-
वीरनेने पूर्वमर्षोंमें वभी भी इच्छा न की थी। [हम मर्षोंमें
कसी कसी इच्छा-आकांक्षा करते हैं ?]
- ★ प्रभुजीने देवोंको वभी भी हुक्म नहीं दिया कि समवसरणकी रचना
करा या समवसरणकी रचना क्यों नहीं की ? ऐसा दोष भी
नहीं ही लगाया। [हमारे पास खद नौकर (व कुछ धन) होनेपर
हम कसे कसे हुक्म चलाया करते ह ?]
- ★ प्रभुजीको चलनके लिये श्वेतागण नी-नी सुवर्णवर्मल उनक पाँवक
नीच धरते थे। पर आप निर्मोही हानम न ता आपको वसी उत्सृष्ट
सेवा भक्तिस्र अभिमान होना और न आप उन सुवर्णवर्मलको ठाकर
मार तितर बितर कर अडपनका म भी बनलाते। [यदि हमें
किसी बेवर्षी महक हो, तो क्या हम धरतीपर भी चलेंगे ?]
- ★ जिन प्रभुजीने सौषर्मद्रको सजग करनरे लिय (हामें लानेक
लिय) मेह पवतकी वपित किया था वे भगवान यदि चाहते ता
अपन प्रभाव बलसे अपने ५६३ पालडियोका चरनाचूर कर सकते
थ या उन्हें समागपर भी ला सकत थे। पर वीरगणी प्रभुजी अपन
बलका प्रयोग कर किसी भी कायको करग ही कग ? [अपना गत्र
कमजोर होनेपर क्या हम उसका अहित करनेमें (या उसकेद्वारा
अवरन् अपना मनमाना काम करवा लनेमें) कुछ कम करेंगे ?]
- ★ प्रभुजीने नास्तिको व हिंसकाद्वारा अपनी शक्तिके प्रभावसे बलात्कारसे
धमकियाए न करवायी और न उनके वान उमठकर अवरन धर्म
करवानेकी दवेद्रोको भी आना गी। वसे ही महापापियोंको भी दड
देनके लिय आपन दवद्राको हुक्म न किया। आपने ता स्वय उप
सग सहन किये और चडकौगिक जसे दृष्टिविष साँपको भी समझा
कर समाना प्रायोगिक पाठ पढाकर बुझाया। [इस प्रकार दूसरोंको

(८) चातुर्मासकी तालिका

भगवान् श्रीमहावीरस्वामीजीके दीक्षासे निवाणतक कुल ४२ चातुर्मास हुए। उनकी यह तालिका है।

(१) राजगृही नगरीके नालदा पाडा (मुहल्ले)म १४	(६) अस्थिव ग्राममें १
(२) बंगाली नगरीमें १२	(७) आलमिका नगरीम १
(३) मिथिला नगरीम ६	(८) थावस्ती नगरीम १
(४) पृष्ठचपापुरी नगरीम ३	(९) घञ्जभूमिमें १
(५) भद्रिया नगरीमें २	(१०) मध्यपापामें (पावापुरीम) १

(९) निकटके रिश्तेदार

माता—त्रिशलादेवी पिता—महाराजा मिथ्यायं भामा—
चेडागजा पत्नी—यशोदा पुत्री—प्रियदक्षना क्षमाद—जमाली
भाई—नदिवदहन बहन—मुत्तशा

(१०) तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन करनेवालोंके नाम

भगवान् श्रीमहावीर स्वामीजीकी निश्चा (साप्तिध्य)म
(१) श्रेणिक (२) राजा सुपाश्व (३) उदायी (४) पोटिल
(५) दुठामु (६) शस्त थावक (७) क्षतक थावक (८) मुल्ता
और (९) रेवती—इ होने तीर्थंकर नामकर्मका उपार्जन किया।

(११) गूढ रहस्य

- ★ मुझे समवसरणमें उठनेका ऐश्वर्य प्राप्त हो ऐसी भगवान श्रीमहा घोरदेवने पूर्वमवाम कभी भी इच्छा न की थी। [हम मधिरमें कसी कसी इच्छा आकोछाए करते हैं ?]
- ★ प्रभुजीन देवोका कभी भी हुक्म नहां दिया कि समवसरणकी रचना करो या समवसरणकी रचना क्यों नहीं की ? ऐसा दाप भी नहीं ही लगाया। [हमारे पास घद मोकर (ब कुछ घम) होनेपर हम इसे कमे हुक्म चलाया करते ह ?]
- ★ प्रभुजीको चल्नके लिये देखतागण नौ-नौ सुवणकमल उनक पाँवक नीचे धरते थे। पर आप निर्मोही होनेसे न तो आपका बसी उत्कृष्ट सदा भक्तिस अभिमान होता और न आप उन सुवणकमलीको ठाकर मार तितर बितर कर बडप्पनका मन् भी बतलाते। [यदि हमें किसी दबकी मदद हो, तो क्या हम धरतीपर भी चलेंगे ?]
- ★ जिन प्रभुजीने सौपमेंद्रको सज्ज करनक लिय (हानमें लानेक लिय) मेह पर्वतको वपित किया था वे भगवान यदि चाहते तो अपने प्रभाव बलसे अपने ५६३ पालडिमोका चक्काचूर कर सकते थे या उन्हें सभामपर भी ला सकते थे। पर बीतरागी प्रभुजी अपन बलका प्रयोग कर किसी भी कार्यको करगे ही कम ? [अपना गन्ध कमडोर होनेपर क्या हम उसका अहित करनेमें (या उसवेद्वारा अवलन अपना मनमाना काम करवा लेनेमें) कुछ कम करेंगे ?]
- ★ प्रभुजीने नास्तिकों व हिसकागारा अपनी गतिके प्रभावसे बलात्कारमे धमकियाए न करवायी और न उनके वान उमठकर अवलन् धर्म करवानेकी देवेद्रोंकी भी आशा दी। वसे ही महापापियोकी भी दंड देनेके लिय आपन देवेद्रोका हुक्म न किया। आपने तो स्वय उप सग सहन किये और चढकौशिक जसे दृष्टिविष साँपको भी समझा कर दामाका प्रायोगिक पाठ पढाकर बुझाया। [इस प्रकार दूसरोंको

समाजकार बुझानकी समता व समा अगत भी हमारेमें है या नसे ?]

★ सामाजिककी अनुमोदना कर भावभावन करनेवाल देवदेवेष्टीद्वारा भी प्रभुजान रक्षामीके अधिकारस या विपत्तयमे (अपवाकके तौर पर) भी सामाजिककी आराधना नहीं करवायी । इसका कारण यह न कि देवदेष्टीके भाग्यमें ही सामाजिक नहीं होना । [और हमारे भाग्यमें सामाजिक है फिर भी यदि हम सामाजिक नहीं करेंगे तो वह हमारा कितना बड़ा दुर्भाग्य !]

★ जन्मके साथ ही मर पयत उस महापयतका कपित करनकी जिनकी अमित गति और अपरपार बल है उसे परमत्यागी प्रभुजीने देवाको मर तिय समयमरणकी रचनाका समाराह कयो दिया ? मर कयो न पूछा ? एतम मुझे बडाकर क्या आपलोग मरी दिल्गी और देवत्यागका उपहास करना चाहते हैं ? क्या सामाजिक पण्यकी गिरावर मटार दाना नहीं दी जाती ? इस प्रकार डी-डपट कयो नहीं दिया ? और इस प्रकार दोष लगाकर देवाने भक्ति भावम मजाये हुए समवसरणका पाँचके नीचे चकनाचूर करी प्रभुजीको समय भी कितना लगनवाला था ? समवसरणकी रचना आदि सब बाने जो बीतरागी अवस्थाके लिये असगत हो होनी तो बीतरागी प्रभुजीन उनका नाग कयो नहीं दिया ? [ऐसा होते हुए भी जिनमदिरोंमेंकी अंगो आभूषण आदिको बीतरागीपनके साथ असगतदृष्टिस देखनवाले और गाँबीमें सहोन देगमी व पूजाके लिय मोटा सूता वस्त्र पसव आनवाले हम कसे ? दाबीके प्रसर्गोंमें सब के-सब हाजिर रहनवाले और धार्मिक समारोहोंके भीकेपर किसी तरह (राम राम करते) पाँच-बस एकजित होनेवाले हम कितन हीनभागी ! मदिरोंमें चलचित्त पर सिनमा घरोंमें स्थिर चित्त होतवाले हम कसे कइलपण ?]

सूय और चन्द्रमावाक तेजकी भी आसल बना देती थी । सचमुच अपर्याप्त तपस्या हो ना वह तेज था ? [फिर भी स्त्री पमिड या पावदरसे या दिनमें तीन बार नहानसे सौम्यका आविर्भाव होता है या खूबसूरती बढ़ती है ऐसा माननेवाले हम कैसे ?]

★ प्रभोजीकी एक ही अगुलीका भी क्षवानक लिय अमर्य नव न्येद्र असमय था । इतना ना था भगवानका अपरिमित बल । [ध्यायाम कसरत करनेसे इस गतिक कितना अगरे बलकी प्राप्ति होती होगी ? वास्तविक बल तो पुण्यके ही आपीन हो सकता है । कृत्रिम (जबरन प्राप्त किया हुआ) बल तो प्राय पागबिह हो जाता है ।]

★ तीपकर प्रभुजीक पुण्यकी भी सीमा न थी । आपक चरणकमलाकी आदर सवामें अमर्य देव-देवद्र हमदम हाजिर रहते थे । आपको खुली परतीपर पाँव भी रखन नहीं देते न तुरन् ही आपके चरण कमलकि नीच जो मुखकमल धर देते थे । फिर भी आपमें गव या अहंपनका नाम निगान तक न था । [सदा सौकी तनस्वाह या (सालाना) पाँच हजारकी आमदनी हो जानेपर बिना बाहसिकिल या मोटारक कहीं भी जानेमें अपनी प्रतिष्ठा (अंतिवट या पोशिंगन)में कमी (कोताही) माननेवाले हम अपने पुण्यका प्रमद करनेमें कितने वास्तविक हैं ?]

★ उन प्रतापी महापुरुषका प्रभाव भी एक अद्भुत बात थी । आप जहाँ जहाँ जाते वहाँ वहाँ ५०० बीसतक अकाल, भय रोग आदि उपद्रवोंका नाम निगानतक न रहता था । और वह भी किसी एक ही दिगामें नहीं किंतु ऊर्ध्व अधा और आठो निशा विदिगा ओमें । वाह ! कितनी दिव्य महिमा ! [यदि हम १०-१५ लोग किसी मरीजके पास आयेंगे तो रोगीका सब अत्यय या उसे दुःख रहित बनायेंगे ?]

★ उस दिव्य विभूतिको भूत भविष्य और वर्तमान इन तीनों कालोंका आचम्यजनक ज्ञान था । [बरुका साया हुआ भी आस हमारे

हृदयमें कहीं रहता है ? रटा हुआ भी कहीं भून नहीं जाते ? बीमारको ओटमें क्या है ? रहा है, वह भी हम नहीं जान सकते । फिर भी हम पढ़ लिख और पहुँचे हुए विद्वान हैं । " ऐसा कितना बड़ा भारी (निकम्मा) अहंकार हम रखते हैं ? बीतरागियोंके मागसे हम कितनी दूरीपर हैं हमारे परिस्थिति (अवस्था) कितनी विपरीत है ?]

★ वे परमात्मा जब विहार करते तब मायमें कौटे उल्टे हो जाते थे ? [हम तो यदि नीच देखकर भी चलेन तो भी हमें कौटे अभेद । और यदि ऊपर ही देखकर चलेन तब तो घा तो ठोकर लगेगी या गड्ढेमें गिर जायेंगे और कौटे न खुभते हों वे प्रथम अभेदों ! हमारे कमीत्रमें तटकी सुगंध होगी पर किसी गुणकी महक मिश्रना मुश्किल है ।]

★ उन महान् और पुष्पागली प्रभुजीकी देगनाका अद्भुत समतार यह था कि उसे सभी लोग अपनी अपनी भाषामें समझ लेते थे । देव, मनुष्य तिर्यक आदि भी उस देगनाको (अपनी अपनी भाषामें) सुरत ही समझ जाते थे । प्रभुजी मागधी भाषामें मालकोश रागमें देगना देते और उसे सोता व बाप या मदासी व घगाली अपनी अपनी भाषामें समझ जाते यह तो सचमुच बड़ ही आश्चर्यकी बात है । [आज इस पन्थीपर बारह भाषा जाननेवाला पंडित मिलनकी संभावना है पर एक ही भाषामें प्रवचन दिया जाता है और उसे समझ भाषा भाषी लोग समझ लेते हैं ऐसा कहीं भी ऐसा सुना ही नहीं जाता ।]

★ उन महापुरुषकी देगनाका प्रभाव ऐसा था कि उसे सुननेवाले किसी को भी भूत प्यास, बकावट नीच आदिका उपद्रव ही नहीं होता । [वक्ता और श्रोता दोनों ही प्रभावों हों, श्रोतों ही स्वाधी हों और श्रोतोंके चारित्र्यपालनमें गहनता (कमी) हो, तो फिर श्रोतों एकरस कौ होंगे ? (बानों तादात्म्यका अनुभव कसा कर सकेंगे ?) वक्ता पूर्ण उपकारी परमार्थी हो और श्रोता सच्चा जिज्ञासु हो तभी ऐसा मेल हो सकता है ।]

★ सम्यक्त्वकी प्राप्तिने अनन्तर २७ भवों (जन्मों)के बाद ही वे महान् और बमबशाली प्रभुजी केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्षपत्रको पहुँच सके । [तब तो हमारे अभी कितने भव शेष ह, यह तो महाज्ञानी और महाधृतिपर हो जानें । सम्यक्त्वके ६७ स्तरणोंमेंसे हमारेमें एकका भी तो वास्तविकरूपसे ठिकाना (अस्तित्व) दिखाई नहीं देता अर्थात् लगभग सम्यक्त्वका ही ठिकाना भालूम नहीं पड़ता तो फिर केवलज्ञान और मोक्षकी बात ही कहाँ ? (मान बात भी कैसे हो सकती ?)]

★ भगवान् श्रीमहावीरदत्त (राजपुत्र नन्दनक पचीसवें भवमें) तीसकर नामकम उपाजन करनेके बादवे भवोंमें (जन्मोंमें) त्रिदही जसा भय धारण नहीं किया । पर नयसारके भवमें सम्यक्त्व पानके बाद देखेंगे, तो कभी आपन मिथ्या प्ररूपणा भी की ह तो कभी त्रिदही भी हुए ह और कभी चारित्रका आराधन भी किया ह । अत एव तीसकरोंके विरुद्ध गान् बजानेवाले त्रिदही परस भयमें रहनवाले गदगा वस्त्र पहननवाले अन्य भयपारी आदि जा अन्क लोग इस दुनियामें फिरते हैं, उनमें भावीमें तीसकर होनेवाली पवित्र आत्मा कहाँ ही होगी, ऐसा हम नहीं कह सकते । इस कारणसे भी अय धमके किता (साधु या अनुयायी) का तिरस्कार नहीं करना चाहिये । अय धमवालोंका भी समाना (उन्हें क्षमा करना और उनसे क्षमा चाहना) चाहिये । और इसी कारणसे पृथ्वीकायस पचेन्द्रियनके सभी जीवाको हमें बारबार समाना चाहिये । [अहिंसा धमकी जडें कितनी (पाताल तक) ओढ़ी गई हुई ह और जीवमात्रको समानमें कितना गहन रहस्य भरा हुआ ह, इसका चितन हम प्रतिदिन कितनी बारतक करते ह ?]

★ भगवान् श्रीऋषभदेवजीसे महाराजा भरतजीको पता चला कि मेरा पुत्र मरीचि, जो कि त्रिदहीवें भवमें ह, भविष्यमें तीसकर होनेवाला ह । तब भरतजीने मरीचिवे पास जाकर उसके भयका अपमान नहीं किया (अपितु नमस्कार ही किया) । महाराजा भरतजीका यह दितना बड़ा गाम्भीर्य गुण कहा जायगा ? [दूसरोंको अक्षय

(अनघिन बाध) करते हुए देखकर क्या हम कभी भी पुन गभीर होकर अपने ही बिबचना और महननापर विचार (विचन) करते हैं ?]

★ प्रभुजी कवलपानने प्रभावने सब व सब लोगोके दोष (और पाप वष) जानत थे, पर आपन समवगरणमें किमीर भी दोषोंको प्रगट नहीं किया। यह बात आपका अनंत गाभीर्य सूचित करती है। [दूसरोंके सब्बे झूठे दोषोंको जाहिर करनेमें हम कैसे व कितन बड़ घुर ह !]

★ त्यागी गायु महाराजोंको नहीं गमता बनानेवाली आत्मा तो श्रीनीयकर जैसे आदरणीय पन्को भी प्राप्त कर सकनी है। दमिये, भगवान श्रीमहावीरदवकी आत्मान तयसारने भवमें इसी प्रकार ह्यमाग वतलानसे ही माधव भावमागकी प्राप्ति की। [एकल स्वापका त्याग कर हम कितन जीवोंको सम्मान बनलात ह ? य। कितन जीवोंको सब्बो गमाह देत ह]

★ भगवान श्रीमहावीरस्वामीजाका जमस ह निमल अश्लिषान था। अत एव आप जानते थे कि अपने अनंद भवन श्रीइंद्रभूतिजी प्रथम गणधर हानवा है। फिर भी आपने यह बात उन्हें अपने ज्ञान प्रभावसे बगई भी नहीं और उन्हें पहले बुलाया भी नहीं। जब इंद्रभूतिजी सम्मान करनेके लिये आपका पाग आये तभी सर्व प्रथमकी याउचीत हुई। वने तो शत्रिमकुंड और कुडकुपुर, दोनों कोई विशेष दूरीपर भी नहीं ह फिर भी इतनी गभीरता आप ज्ञानी भगवतने बताई — यही आपका बड़पन ! [हम कुछ छोडा सा भी क्यों न जानते हों पर चार आदमियोंके बीचमें ही (ऐठकर) आतेने ! मनमें शव होगा — म भी कुछ हूँ ! यह कितनी हीनता !]

★ भगवान जैसी सर्वश्रेष्ठ आत्माकी मृत्यु कभी भी पासोने सोलीते लोटाभर पानीने लिये (प्यासते) या कुअमें गिरकर नहीं ही होनी। उत्तम आत्माको अपमृत्युने मीन आनी ही नहीं। अपमृत्युसे मरने वाला दव हो ही नहीं सकता। जीवमाशाका उद्धार करनेवाले प्रभुजीका निर्वाण घातिसे और सुषमय ही होता है, नहीं कि दु लपूण।

[उत्तम गतिके लिये आखिरी क्षण भी शांतिमय हो होने चाहिये
—एसा समझकर हम समाधिके लिये कितना प्रयास करते ह ?]

★ उत्सूत्रकी प्ररूपणा करनेवालेका भी निरस्कार नहीं ही करना चाहिये। कारण यह है कि प्रभुजीकी आत्मान भी मरीचिके जन्ममें उत्सूत्र प्ररूपणा की थी मनमाना निन्दीका भेष धारण किया था और भवभ्रमण बढ़ाया था। इसी लिये जय मतक अनुयायियोंमें किसी तीर्थकरकी आत्मा हो ही नहीं सकती, एसा हम नहीं कह सकते। जिनवचनके खिलाफ आचरण करनेवालेका अपमान करनेमें किसी तीर्थकरकी आत्माका अपमान हाँ जानसे, क्या आगतना न होगी ? कमकी गति गहन है और आत्मा कमवश हानस समभावताकी साधना करनी चाहिये। [हम तो अभिमानके बस होकर प्रतिदिन अनकों धार अनेकाका निरस्कार करते होंगे !]

★ आगे चलकर समवसरणमें बैठकर जो सारी दुनियाको मोक्ष और विश्व वधुत्वका यथाथ उपदेशपूर्ण सदेशा देनवाले थे और जिन्हे जन्मसे ही महान् अवधिज्ञान था एसा प्रभुजीको पन्थानके लिये शालामें दानित करनेका तय किया गया। प्रभुजी घूम घूमसे जुनूसवे साय पडित और पाम भी पहुँचे। पर आखिरतक आप गभीर रहे। मैं जानती हूँ और आप सब यह क्या कर रहे ह ? एसा आपने कहा भी नहीं। यह आपका कितना अगाध गानीय ! [हममें एसी गभीरता क्या आवगी ?]

(१२) प्रश्नोत्तरी

प्रश्न १—भगवान् श्रीमहावीरदेवकी आत्माको किस भवमें और कैसे संयोगोंमें सम्पत्त्वकी प्राप्ति हुई ?

उत्तर—नयसारके पहले भवमें भगवान् श्रीमहावीरदेवने जगलमें मार्ग भूले हुए मुनिराजको गोचराका दान देनेका लाभ उठाया। मुनिराजको सुख हुआ देखकर नयसार दारित हुअ और मुनिराजको सही रास्ता बतलानेके

निकले। रास्तेमें मुनिराजने नयसारको उपदेश दिया, “हे भाग्यशाली ! यह तो आपने द्रव्यमाग बतलाया पर सत्य स्वरूप तो भावमार्ग ही है। सुदेव सुगुरु और सद्धर्मकी यथाथ पहचान होना ही भावमाग है।” यह उपदेश मुनिकर नयसार-
(- के भवमें भगवान् श्रीमहावीरस्वामीकी आत्मा-)-को सम्पत्त्वका प्राप्ति हुई।

प्रश्न २—भगवान् श्रीमहावीरदेवने नीचगोत्रके कर्मका बंध किस भवमें और किस कारणसे किया ?

उत्तर—भगवान् मरीचिके भवमें ज़िदहा हुए थे तब महाराजा भरतजाने आपको भावीके ताथकर समझकर बंदन किया। यह देखते सुनते ही आपने (= भगवानकी आत्माने) मरीचिके भवमें अपने कुलका बहुत ही अभिमान किया और और नाचने-झुदने भी लगे। इस कुलमदके कारण आपने नीच गोत्रका कर्मबंध किया।

प्रश्न ३—भगवान् श्रीमहावीरस्वामीकी आत्माने अपना भवभ्रमण किस कारणसे बढ़ाया ?

उत्तर—भगवान् मरीचिके भवमें थे तब कपिल नामक किसी कुलपुत्रने आपसे धर्मके बारेमें कुछ पूछा। उस समय आपने जवाब दिया, भगवान् श्रीकृत्यभदेवजीके साधुओंके पास धर्म है, तो मेरे पास भी धर्म है। आदि।” इस प्रकार उत्सूत्र-प्ररूपणा करनेसे आपने अनंत भवोंका भ्रमण बढ़ाया। सिद्धान्तोंके खिलाफ बकबक (अपलाप) करना ही उत्सूत्र-प्ररूपणा है, जो एक प्रकारका महापाप है।

प्रश्न ४—श्रीमहावीर प्रभुजीने २७ भवोंमें कौन-कौनसी बड़ी ऋद्धियाँ पायीं ?

उत्तर—प्रभुजी (१) १८ वें भवमें त्रिपृष्ठ नामक 'वासुदेव'
(२) २३ वें भवमें महाविदेहमें प्रियमित्र नामक 'चक्रवर्ती'
(३) और २७ वें भवमें तो साक्षात् महावीरस्वामी नामक
'सौर्यंकर' हुए—आपने ये तान ऋद्धियाँ पायीं ।

प्रश्न ५—श्रीमहावीर प्रभुने नदन मुनिके भवमें कितनी तपस्या की और उससे आपको क्या लाभ हुआ ?

उत्तर—प्रभुजीने नदन मुनिके २५ वें भवमें (इस भवमें आप प्रथम राजपुत्र थे और बादमें मुनिराज हुए ।) २५ लाख बपकौ आयुमें १ लाख सालतक धारित्रका पालन कर ११ लाख ८० हजार ६४५ माससमण (या माससमण) करनेके साथ ही श्रीबीसस्थानक षट्की आराधना की । इससे आपने तार्थकर नामकर्मका उपाजन किया ।

प्रश्न ६—श्रीमहावीरस्वामाजी प्रथम ब्राह्मणकुलमें क्यों आये और वहाँसे ८२ दिनोंके बाद देवने आपको क्षत्रियकुलमें क्यों रखता ?

उत्तर—प्रभुजीने मरीचिके भवमें जो नाचगोत्रका कर्मभोग किया था, उसका भोग ८२ दिनका ही शेष रह गया था । अतः ८२ दिन ब्राह्मणकुलमें रहनेके बाद ८३ वें दिन वह कर्मभोग पूरा होते ही शक्रेन्द्रका आसन कपित हुआ । और इन्द्र महाराजाने भी अपना कर्तव्य समक्षवर देवद्वारा हेरफेर कर क्षत्रियकुलमें राजा श्रीसिद्धायजीके घर आपको रखवाया ।

प्रश्न ७—थीवोरप्रभुजीने गर्भमें कौनसा अभिग्रह लिया था ?

उत्तर—माता-पिताके स्नेहके कारण प्रभुजीने गर्भमें हिलना-चलना बंद कर दिया था, पर इससे माताजाको बहुत ही दुःख हुआ। आपको ज्ञानके बलसे इसका पता चला। इसी लिये आपने माताजीका प्रेम देखकर गर्भमें ही अभिग्रह लिया कि माता-पिताजी होंगे तबतक मैं दीक्षाका अंगीकार नहीं करूँगा।

अभी हम इस प्रकार अभिग्रह नहीं ले सकते। कारण यह है कि प्रभुजीको अवधिज्ञान था, हमें वैसा ज्ञान नहीं है। प्रभुजीका आयु पूरी होनेवाली ७ थी, पर हमारी उम्रका मकान ही कहाँ है? प्रभुजीने भी तो यह अभिग्रह जन्मके पूर्व ही लिया था, जन्मके बाद नहीं, क्योंकि जन्मके बाद ऐसी (अनुबूल) परिस्थिति प्राप्त होना भी असंभव ही है। 'हम भी प्रभुजीके जैसा अभिग्रह ले सकते हैं,' ऐसी बातें करनेवालोंको तो चाहिये कि वे माता-पिताजाके स्वर्गसिंघारनेके बाद तुरत ही दीक्षा ग्रहण करें—ऐसा साफ साफ मतलब होता है। पर हमारी वास्तविक परिस्थिति यह है कि माता-पिताजाके बाद तो समा मामला हमारे हाथ सिर आ जाता है और दाशा लेनेमें कई विघ्न बाधाएँ खड़ी हो जाती हैं। ये ही सब कारण हैं कि जिनसे हम प्रभुजा-मा अभिग्रह नहीं ले सकते।

प्रभुजीके अभिग्रहमें माता पिताजीके प्रति नितात प्रेम

प्रभुजीके इस अभिग्रहसे मातापिताजीकी सेवा-भक्ति करनेकी ही शिक्षा लेनी चाहिये ।

प्रश्न ८—प्रभुजीका ‘महावीर’ यह नाम किसने रखा ?

उत्तर—प्रभुजी आमलकौ क्रीड़ा खेल रहे थे कि कोई एक देव भगवानकी पराखा लेनेके लिये आया, पर वह स्वयं ही पूरी तरह हार गया । इसी लिये उस देवने प्रभुजीका नाम ‘महावीर’ रखा । माता-पिताजीका रखा हुआ नाम तो ‘वर्द्धमानकुमार’ था ?

प्रश्न ९—‘जैनेन्द्र’ व्याकरणकी गचना कब हुई ?

उत्तर—माता-पिताजीके स्नेहके बस होकर प्रभुजी पढाईके लिये पाठशालामें गये । महाराजा इन्द्रको अवधिज्ञानके प्रभावसे इस बातका पता चला कि वे तुरत ही ब्राह्मणके रूपमें वहाँ दाजिर हो गये । पढानेवाले पंडितजीके दिलमें जिनके लिये उलझन थी, ऐसे कई प्रश्न उस ब्राह्मणने (अर्थात् इन्द्रने) प्रभुजीसे पूछे और प्रभुजीने उनके जवाब बिलकुल ठीक-ठीक देकर मानो पंडितजीकी शकाओंका समाधान हा कर दिया । यह सब देखते सुनते हा पंडितजीने प्रभुजाको नमस्कार किया । बादमें उस ब्राह्मणने कहा कि मैं इद्र हूँ और ये तो साक्षात् महाशाना प्रभुजी हैं । इन्हें पढनेका जरूरत ही नहीं हो सकती । ये तो स्वयंबुद्ध ही हैं । सभा लोग यह सब देखकर विस्मित हो हो गये । इसी समय

(२) प्रधान तीर्थोंका सक्षिप्त परिचय

मात्र	तीर्थस्थल	धर्मोत्थेयकर प्रभुजी	नन्ददीबका स्टेशन	विशेष जानकारी
(अ) गुजरात				
(१)	जीर्णेश्वरजी	पावननाथ	विरमगाम	ता. चौबीसीके अग्रतिथि अमरपुरी प्रभुजी
(२)	भीमजी	अस्तिनाथ	भीमजी	राधनपुर ३४ मील
(३)	मातर	सुमतिनाथ	महेमदावाट	पेलडा स्टेशन ३ मील
(४)	पानसर	महावीरस्वामी	पानसर	खेडा ४ मील मडियाद १४ मील
(५)	काबी	शुभदेव धमनाथ	काबी	गवामें भी खिनालय है।
(६)	तेरिता	पावननाथ	कलोल	जवसर १६ मील खभात ३२ मील
(७)	देलवाडा (आबु)	नमनाथ-आदिनाथ	आबरोड	माय महीममें मेग भरता (उत्सव होता) है।
(८)	मंधार	पारवनाथ	मंडोच	बामन ५ मील
(९)	डुडर (पहाड)	महावीरस्वामी	डुडर	अवलण्ड ५ मील खोरिया ४॥ मील
(१०)	तारंगमगिरि	अम्रितनाथ	तारंगमगिरि	अयोध २० मील
				शत्रुजय उज्जयिन्तावतार मंदिर है।
				महाराजा कुमारपालका बंधाया हुआ लोचस्थान

क्रमिक	तीर्थस्थल	धर्मतीयकर प्रभुजी	मजबूतका स्टेनन	विशेष जानकारी
११)	सागविया	आदिनाथ	सागविया	भक्तेश्वरसे छोटी लाईनमे मुरत ४५ मोल
आ) सौराष्ट्र				
२)	श्रीननुअर्गमिरि	आदिनाथ	पास्तिताणा	पहुाड नौ (९) टूक (गिलर अर्गमि विनेव विशेष स्थान) सकडों गिलरबयो मदिर ह ।
३)	तलाजागिरि	मुमतिनाथ	तलाजा	पहुाड सालध्वजमिरि ३ टूक (गिलर)
४)	गिरनारगिरि	नमनाथ	जुनागड	पहुाड ५ टूक (गिलर) नेमनाथ प्रभुजीके सीम कल्याणक यहाँ हुए ।
५)	पोयाबबर	नवलडा पादवनाथ	भावनगर	मोटररोड चमारकारी मूर्ति
६)	अजारा	पान्चभाय	वेरावड	प्राचीन प्रतिमाओ
७)	कवर्गगिरि	आविनाथ	पालीताणा	पास्तिताणा ८ मोल मत चौबीसीके दूसरे तीर्थवर श्रीनिवासी प्रभुजीके गणपत श्रीकदबजीका निवाण स्थल
इ) बगाल-बिहार				
१)	सिहपुरी	अर्पासनाथ	सारनाथ	बार कल्याणन कागी ६ मोल (मोटर)
२)	बंरपुरी	चक्रप्रभु गतिनाथ	सारनाथ	बार कल्याणक कागी १४ मोल (मोटर)

क्रमांक	सौचस्पल	धोतीयकर प्रभुजी	नज्जीकका स्थान	दिनांक जनिकारी
(२०) अयोध्या	आदिनाथ	इस चौबीसोंके	अयोध्या	सालहृदयानक कटरामहुल्ला फंजाबाद ८ मोल
(२१) अष्टावह	इस चौबीसोंके	सब प्रभुजी	(विष्णुइतीव)	आग्निनाथ निर्वाण उत्तर हिमालय, कलास आदि
(२२) बिहार शरीक	आदिनाथ	सब प्रभुजी	बिहार शरीक	तुंगिया नारो धावक वधनाला (सराय)
(२३) सोरोपुर	अग्निनाथ	महावीरस्वामी	निकोहा	अयन जय कल्याणक
(२४) अजियकुड	महावीरस्वामी	१९ १७ १८	लखीसराई जमुई	पहाड जय दीक्षा कल्याणक सिकंदराबाद ३ मोल
(२५) हस्तिनापुर	महावीरस्वामी	१९ १७ १८	औरत	बारह कल्याणक मुहानासे मोटर
(२६) जजुवातिका	महावीरस्वामी	१९ १७ १८	गिरडी	देवजान कल्याणक समेहुनिवर ८ मोल
(२७) श्रीसमेहुगिहर	पादवनाथ	पादवनाथ	गिरडी-पारसनाथ	दोवसे हाकर नरो
(२८) जपपुरी	काकुपुगयस्वामी	काकुपुगयस्वामी	भागलपुर जसन	बोस प्रभुजीका मुक्तिपाथ मधुवन कलहला २१५
(२९) पाकपुरी	महावीरस्वामी	महावीरस्वामी	बिहार शरीक	भोल
(३०) हुडलपुर	गीतमस्वामी	गीतमस्वामी	नालदा	बार कल्याणक भागलपुर २ मीन पयमाय मंदिर
(३१) राजगृही	मुनिमुञ्जतस्वामी	मुनिमुञ्जतस्वामी	राजगृही	प्रभुजीका प्रयथ व अग्निम समदतरण ४८०० को
(३२) मुगियाजी	महावीरस्वामी	महावीरस्वामी	नवादा	दीवा वीर निर्वाण भूमि
(३३) काकडी	मुविधिनाथ	मुविधिनाथ	लखीसराई जमुई	गोमस्वामीजीको जग्यभूमि बिहार ७ मोल (बडगादि)

क्रमिक	तीयस्थल	धीतीयकर प्रभुजी	नजीवकका स्टेशन	विशेष जानकारी
(ई) राजस्थान-मध्यभारत				
(३४)	पुलेवाजी (केसरियाजी)	आदिनाथ	उदयपुर	केसरियाजी उदयपुर ८० मील उदयपुरसे ३५ मरिद
(३५)	नाहिजा	जीवितस्वामी	सरजन रोड	बाभणवाडजी ४ मील तितोही १४ मील
(३६)	साधोर	महावीरस्वामी	डीसा	पावेरा ३४ मील भिलडिया ६० मील
(३७)	मोडवाड	मुपाचनाथ	मऊ	गतिनाथ (पहाड)
(३८)	राणकपुर	आदिनाथ	जालना	सोन मरिद ब्रह्मोदय दीपक राणीस्टेशन ११ मील माथ फातगुन रु १० और आन्वित न १३ को उत्सव (मैला)
(३९)	जिरावला	पाचनाथ	डीसा	आव १८ मील नाग्रपद न ४-६ को उत्सव (मैला)
(४०)	जैसलमेर	,	बाडमेर	प्राचीन शा भांडार (मोडार)
(४१)	लोडवा	,	"	जसलमेर १७ मील
(उ) महाराष्ट्र-विदर्भ				
(४२)	कुभोज	अणवत्सम पाचनाथ हाथकलमरु		मीरज १७ मील कोल्हापुर १३ मील (सांगली) कर्तिक घत्र न १५ को उत्सव (मैला)

क्र.सं.	सौचस्पत्य	सौचकर प्रभुओं	मजदूरिका स्तम्भ	विशेष जानकारी
१३) कुलपति	अविनाश	अविनाश	अविनाश	माषेकस्वामी हथकारक महावीर
१४) सारक (भगवती)	पार्वती	पार्वती	भगवती	वसुधाय पाशनाथ या भगवती
१५) सिद्ध (भगवती)	अतिरिक्त पार्वती	अतिरिक्त पार्वती	अतिरिक्त	श्री १८ मीर अतिरिक्त (बिना किसी आधारहीन) मूर्ति बालापुर ४८ मील
१६) अग्रज	महावीरस्वामी	अग्रज	अग्रज	छत्र (अतिरिक्त स्थानों पर रखें) य ऊपर से सवारों ।

(३) सोलह सतिरोंके नाम

- (१) श्री (२) सुदी (३) चदनवालाजी (४) राजीमलीजी (५) दीपदी (६) ल्या (७) भगवतीजी (८) सुलसा (९) सीताजी (१०) सुभद्रा (११) निवा (१२) पुता (१३) नीलवती (१४) दमयती (१५) प्रभावती या पुष्पचूलाजी (१६) पद्मावती

नौवेंके पद्यमें (गावूलीविशोदित वृत्तमें) इही सोलह महासतिपोंके नाम ह—

ब्राह्मी चदनबालिका भगवती, राजीमती द्रौपदी
कौगल्या च भगावती च मुलमा, सीता मुमद्रा शिवा ।
कुती शीलवती नलस्य दयिता, चूला प्रभावत्यपि
पद्मावत्यपि सुदरी दिनमुखे कुवतु वो भगलम् ॥ १ ॥

४) चौबीस तीर्थकरोंके नाम और लछन

क्रमांक	प्रभुजी	लछन	क्रमांक	प्रभुजी	लछन
१	श्रीशृंगभवेव		१२	श्रीवासुपूयस्वामीजी	महिष
	स्वामीजी सांड (या बल)				(भसा)
२	श्रीमज्जितनाथजी	हाथी	१३	श्रीविमलनाथजी	बाराह
३	श्रीसमवनाथजी	घोडा	१४	श्रीमनतनाथजी	इयेम (बाज)
४	श्रीमभिर्नदन-				पक्षी
	स्वामीजी	यानर	१५	श्रीधर्मनाथजी	घञ
५	श्रीसुमतिनाथजी	कौबपक्षी	१६	श्रीनातिनाथजी	हिरन
६	श्रीपद्मप्रभस्वामीजी	कमल	१७	श्रीकुशुनाथजी	बकरा
७	श्रीमुपाश्वनाथजी	स्वस्तिक	१८	आजरनाथजी	नदावत
८	श्रीचंप्रभस्वामीजी	चंद्र			(एक स्वस्तिक)
९	श्रीमुद्रिधिनाथजी	मकर	१९	श्रीमल्लिनाथजी	कुभ (घडा)
		(मत्स्य)	२०	श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी	कछुआ
१०	श्रीनीतलनाथजी	श्रीवत्स	२१	यानमिनाथजी	मोला कमल
११	श्रीधेयोसनाथजी	साह्यो	२२	श्रीनेमनाथजी	गल
		(गैडा)	२३	श्रीपाश्वनाथजी	साँप
			२४	श्रीमहावीरस्वामीजी	सिंह

प पू आचाय श्रीलक्ष्मीरत्नसूरिजीका भीचे लिखा (गुजराती भाषामेंका) धृत्यवदन पढिये । इसमें भी चौबीसो प्रभुजीके लच्छन दिये गये हैं ।

वृषभ लछा ऋषभदेव, अजित लछन हाथी ।
 समय लछा घोडलो, शिवपुरना साथी ॥ १ ॥
 अभिनदन लछा कपि, त्रौच लछन मुमति ।
 पद्म लछन पद्म प्रभु, विश्वदव मुमति ॥ २ ॥
 सुपादव लछन साथीओ, चद्रप्रभु लछन चद्र ।
 मगर लछा सुविधिप्रभु, धीवच्छ धीतल जिणद ॥ ३ ॥
 लछन लडगी श्रमामन वासुपूज्यन महिष ।
 सूरजर लछन विमलदव भविया त नमो धीप ॥ ४ ॥
 सींचाणो जिण जनतने वज्र लछन धीधम ।
 शाति लछन मृगलो राव धमना मम ॥ ५ ॥
 कुधुनाथ जिन धोकडो अरजिन नदावत ।
 मल्लि कुभ वसाणीए मुवत कच्छप विम्यात ॥ ६ ॥
 नमि जिनन नीलु कमल, पामीए पक्ज माही ।
 शख लछन प्रभ नमजी दीस ऊचे आही ॥ ७ ॥
 पादवायन चरण सप, नील वरण सोमित ।
 सिंह लछन कचन तणु वधमान विम्यात ॥ ८ ॥
 एणीपर लछन चितवीए ओठखीए जितराय ।
 ज्ञानविमल प्रभु संवता लक्ष्मीरत्न सूरिराय ॥ ९ ॥



(५) देवपाल चरित्र



भरतक्षेत्र मुसस्कारसि सीचा हुआ क्षेत्र ह । इसकी भू

महापुरुष इसी पवित्र भूमि पदा हुए ह । समस्त जीवाका कल्याण करनेकी, उद्धार करनेकी श्रेष्ठ भावनासे उन मत्र के-सब महा-पुरुषोंने इस भरतक्षेत्रकी पुण्यभूमिमें विहार किया है और इसी लिये भारतभूमि महापुरुष और उनके सद्गुणरूपी रत्नाकी खान या निधिमान ही मानी जाती है । भारतभूमिके कणकणमें आत्मगुणोंकी सुगंधि है, सुसस्वारके बीज ह ।

(१)

यह भारतभूमि अनेकानेक सुशोभित एवं मनाहर नगरियासे बसे ही तीर्थस्थानोंसे भी विभूषित है । पहलेकी बात ह इसी भरतक्षेत्रका अछलपुर सचमुच अचल ही था । जसा उसका नाम बसे उसके गुण भी थे—उसका नाम भावसूचक था । सुख-समृद्धि, अमनचन, राजसी ठाठ, वैभव प्रिलास और लक्ष्मीकी ता मानो वहाँ लहर ही उमड़ रही थी । अनेक उत्तार, महामना व गुणसंपन्न धनी-बुद्धिरोका वहाँ निवास था । बेपार रोजगार आदि सब भली भाँति और नीति नियमसे ही सम्पन्न हो रह थ । लोगोमें धार्मिक सत्कार थ और दय गुरु एवं धर्मकी आराधना करनेके लिय वहाँ अच्छी अच्छी सुविधाएँ व उत्तमात्तम साधन-सामग्रियाँ था । वहाँके नागरिक धनके नहीं पर गुणोंके पुजारी थ । इस प्रकार सारे-के-सारे अचलपुरकी रौनक समग्र (सोलहो) बत्ताआसे दमक रही थी ।

प्रजावत्सल और प्रतापी राजा सिंहदत्त वहाँ राज्य करता था । उसकी सत्ता और कीर्ति, याय और नीति एवं गुण, धर्म और योगाया चारो ओर फैल रही थी चारो दिशाओंमें उनका गान हो रहा था । उसकी सेवामें तो अनेक सेवक हाजिर ही थ । अपरपार था उसका राजवैभव । लक्ष्मीसे परिपूर्ण था उसका

भाडार ! और राजा स्वयं भी या अपने नामके अनुसार सिंह-
ममान पराक्रमी ! तो उसके गधू हिरनारी तरह मारे मारे भागते
फिरते थे, इसमें बड़ी बात ही बौनसी थी ?

बनकमाला और शीलवती ये राजाके दो रानियाँ थीं ।
दोना-की-दाना बहुत ही खूबमूरत और गुणोमें अकूत भी थीं ।
राजाएँ एक गुणमागर पुत्री थी, उसका नाम था मनोरमा ।
राजपुत्रा माने उमरे मौन्यके बारम्बार पूछना ही क्या ! वह मात्र
सौंदर्यका अवार (मौन्यकी छान) ही नहीं पर गुणाका भाडार
भी थी । रूप और गुण दोनों होनेसे राजपुत्री मनोरमा विशेषरूपसे
सोहती थी । गुण विनाशा अकला रूप गो कभी कभी अनय कर
देता है और बड़ी बड़ी आफतानों भाँ सिरपर लेता है इसी लिये
गुण विनाशा रूप माने नमक विनाकी रमोई ही ममय लीजिये ।

थप्पी जिनदत्त राजाके अत्यंत ही चहूत (प्रिय) सेठ थे ।
सेठजी भी दयालु उदार और मानवताके गुणोंमें विभूषित थे ।
दीन-दु खियाके दु ख-कष्टमें व अपना हाथ बटाते, गरीबोंके लिये
उनके भाडार खुले थे अपने द्वारपर आया हुआ याचक खाली
हाथ न गौटन पाए एसा तो उनका घरका नियम था सम्यक्दृष्टि
पूर्ण और सस्वार्ग जीवन ही व्यतीत करनेकी उनको महत्प्रबलापा
थी—एसे करुणामावित थे जिनदत्त सेठजी । सेठजीके घर एक
कृतज्ञ क्षत्रियवर्गी नौकर था । उसका नाम था देवपाल । सेठजीके
सहवाससे उस जन धर्मके प्रति अचल थढ़ा थी और सद्गुरु
महाराजोंके समागमसे वह जन धर्मके गढ़ रहस्याको समझता था ।
' विश्वके सभी धर्मोंमें जन धर्म ही अष्ट और सपूर्ण है ' ऐसा
सम्यक् वक्ता रग उसके मधूचे आत्मप्रदशमें व्याप्त हुआ था । धर्म
विहीन जीवन तो उस अप्रिय और एकाकी भालूम होता था ।

‘जीवनको यथाय स्वल्पमें जीनेकी शिखा देनेवाली जो कोई कला हो तो वह धमकला ही है’ ऐसा उमक दिलमें पक्का बस गया था। वह अपन मनसे धमकी सीमत तां स्वामोच्छवासम भी ज्यादा मानता था। अपनेका समयदार और मन्गरी मानने-मानवाले आजके महाशायमोंकी गिण्टना (१) उममें न थी कि जिससे वह धमका और धर्मोजनाका डोंग और ढागी समझ। यह था देवपालका जीवन। सचमुच मज्जन पुरुषावे समागमने जीव क्या क्या प्राप्त नहीं कर सकत ? कहना ही पड़गा कि कल्याण कामी आत्माएँ सत्संगसे सब कुछ पा सकती हैं।

वह वर्षा ऋतुका दिन था। गल्ल आवागमें उमड़ घुमड़ रहे थे और मिहसमान बिकराल गजना कर रहूँ थे। बिजली जरा जरासे अतरेपर धमक रही थी। लगातार मूमलधार शारिश हो रही थी। पानीका उमाट खलखल ध्वनि करत हुए बह रहा था। पानी सरिता अपने पति सरित्पति-समुद्रके मिलनके लिये बहुत ही उत्सुक हुई न हा, उस प्रकार अत्यंत ही तेजीसे दौड़ (बह) रही थी। उछलकर खलभली मचानवाले पानीका दृश्य निबल हृदयके आदमीको धमकाय त्रिना रहता ही न था और उस गानीकी आवाज चित्तविग्रम पदा करनेवाली थी। ऐसी मयावनी परिस्थितिमें भी आहेंसे हिफाजतने लिये ऊनी बबल मोड़े हुए देवपाल नन्ही किनारेके एक पठारपर गौआको चरानेके लेये गया ही था। वह एक ओर लकड़ीको टेकाकर खड़ा था और उत्सुकतासे देख रहा था गिरनेवाली बरसातके पानीका ब वारा आर बरसातसे उत्पन्न हुए लक्षवेधक दृश्याको। गौए भी वही वर्षासे रक्षा हो सकती थी वही खड़ी हो गई थीं।

धीरे धीरे वारिश धम गई । आकाश स्पच्छ हो गया ।
 गीए भी नदी-तटके पठारपर इधर-उधर चरने लगी । फिर भी
 नदीका जल प्रवाह तो अत्यंत ही तेजीस और रलखल आवाज
 करत हुए बह ही रहा था । इतनेम जल प्रवाहके अत्यंत वेगके
 कारण नदी किनारेका एक जोरका भाग सहसा गिर गया ।
 देवपालकी आँखाने भी यह दृश्य देखा । गिरे हुए भागमें
 श्रीयुगादिदेव जिनेश्वर प्रभुजीकी प्रतिमा दखते ही हृषिके आवेगसे
 देवपालके रोमाच खड़े हो गये । वह मनमें ही अपनी आत्माका
 ध्य (कृतकृत्य) और पुण्यशाली मानने लगा — ' जहा । कसा
 मेरा ध्यभाग्य ! जन-वीरानेम अबेर ही और मुझे श्रीजिनेश्वर
 प्रभुजीके दशन ! ससगरूपी महामागरका पार करनेका सर्वथेष्ठ
 साधन मुझ सहज-ही मे प्राप्त हो गया । " अब तो जरूर ही
 इन देवाग्निदेवकी किसी उत्तम स्थानपर मे स्थापना करेगा, "
 ऐसा पक्का विचार कर, देवपालन शीघ्र ही नदीके किनारेपर
 ही एक पणकुटी बनाई और उसमें देवाग्निदेवकी स्थापना की
 और साथ साथ अपने हृदय मंदिरम भी । उसी समय उसन श्री-
 धीतराग प्रभुजीके सामत दूढ़ प्रतिभा की कि प्रतिबिम्ब जयतक मे
 त्रिभुवनके नाथके दशन नहीं करेगा तबतक मे अन्नजल नहीं
 लूगा । इस प्रकार प्रतिभा स्तर देवपाल अपनी शक्तिके अनुसार
 उत्तमोत्तम साधन नामग्रीद्वारा प्रतिदिन प्रभुजीको पूजा-सेवा-
 भक्ति करने लगा ।

धीतराग प्रभुजीके दशन और उनकी सेवा भक्तिसे भूत
 कर (उनका त्याग कर) जीवनकी स्वेच्छाचारी बनाना, यह
 दुर्गति का कारण है जबकि जन दशनके रहस्योंको समझकर ज्ञान
 योगम भस्त रहना, यह सद्गति का कारण है — यह बात देवपाल

पूरी तरह समझ गया था। अतः एव उत्पत्तिके मागमें सविशेष प्रगति करनेके लिये उसने श्रीवीतराग प्रभुजीकी अनिवार्य शरणागतिका (प्रभुजीके संपूर्ण आत्मसमर्पणका) स्वीकार किया था।

‘ श्रेयासि बहुविघ्नानि ’ इस कथनके अनुसार व्रतधारियाँ अचानक अनेक प्रकारकी कठिनाइयाँ आती हैं और उन्हें उपहास भी सहने पड़ते हैं। कसौटीकी अहरनपर चढ़ना पड़ता है, वहाँ जाघात प्रहार सहकर उत्तीर्ण होना पड़ता है सभी उनकी पीमत की जाती है। महापुरपात्रों भी अपने जीवनमें अनेक प्रकारके कष्ट-संकट सहने हाते ही हैं। और अनेक कष्ट-संकटों में भी सजग रहकर सहीसलामतीके साथ अपने निश्चित मागकी ओर प्रयाण करना ही महात्माओंके सामर्थ्यकी अमली कसौटी है। देवपालकी अनुभूतिमें भी एक बार रक्काट आई थी पर वह घबड़ा जावे कि ऐसा थोड़ा ही था ? वह तो पूरी तरह समझता था कि कसौटी पर वह जीवन उत्पत्तिकी जड़ी-बूटी है।

एक दिन लगातार बेशुमार और मूसलाधार बारिश गिरना शुरू हुआ। पानीकी बाढ़ बहुत ही तेजीसे बहने लगी। कड़कड़ा-पड़के साथ बिजली चमकने लगी। बादलोंसे सूख ढँका गया। संपूर्ण परिस्थिति ही गूँघ और उदास हो गई। वही भी देखो तो पानी ही पानी ! माना पृथ्वीदेवीने पानीक ही सभी शगार मजे दे हा ! ऐसा या चारा औरका दृश्य ! घरक बाहर निकलना ही बिल्कुल नामनुमकीन हो गया था। और ऐसी वस्तुस्थिति में लगातार सात सात दिनोंतक रही !

देवपाल भी ऐसी भयानक और उदास परिस्थितिमें श्री-जनेश्वर प्रभुजीके दर्शनको नहीं जा सका। उसकी प्रतिभा की किरणें प्रभुजीके दर्शन किये बिना अतृप्त नहीं लूँगा, इसी लिये उसने तो मात्र दिनोंतक उपवास (व्रत) किया।

आठवें दिन निसर्गत ही वारिदा थम गई और देव प्रभुजीके दान करनेके लिये जा मना। उसने सबप्रथम पण्डित व्यवस्थित की। और बादमें श्रद्धा-पवित्र भक्त देवपाल आदोना हाथ जाँहकर प्रभुजीके सम्मुख नम्रभावसे स्तुति क लगा — आ प्रभुजी ! मैं क्या मदभागी कि सात-सात दिनों आपके परम पुनीत दर्शन न कर सका ! मेरे सात-सात दिन आपकी सेवा भक्तिसे बिना व्यर्थ ही गये ! आज आठवाँ आपके दान पाकर मेरी आत्मा कृताघ धन्य हो गई है ! आ दर्शनके सिवा मुझ और किसी वस्तुकी चाह ही नहीं है ! पि सात दिनातक ता शरीर भी बेचन रहता था। आपकी भक्तिका लाभ प्राप्त न होनेसे मैं तो आकुल व्याकुल रहता ! आत्मा अशांतिका भाग बन गई थी। निरुद्धकी सब परिस्थि ही शून्य और उदास मालूम होती थी। इसी लिये ओ प्रभुजी मैं आपके पास विनीत भावसे केवल एक ही प्रार्थना करता हूँ आपका दर्शन मुन नित्य प्रतिदिन किसी भी विघ्नबाधाके प्राप्ति होवे । ”

इस प्रकार देवपाल दवाधिदेवक सम्मुख प्रार्थना कर ही था कि युगादिदेवकी अधिष्ठायिका देवी श्रीचण्डेश्वरी प्रगट और उसने देवपालको संबोधन कर कहा — ‘हे देवपाल ! जन युगादिदेवका भक्त है, उही प्रभुजीकी मैं अधिष्ठायिका । तुझे जो कुछ भी कर माँगना हो सो माँग ले ।’

प्रभुजीकी भक्तिमें मस्त हुए देवपालने जवाबमें कहा ‘देवीजी ! मुझ अपन जीवनमें मात्र एक ही याचना करनी और वह — श्रीजिनेश्वर प्रभुजीकी सेवा भक्ति मुझे अविच्छि रूपसे प्राप्त होव । इसक सिवा मुझ और कुछ भी माँगना नहीं है ।’

‘देवपाल ! इममें तो तूने मांगा ही क्या ह ? म तो इस लाकवे ममग्र वाछित सुखोवा देनके लिये आई हू । म तुझपर प्रसन्न हुई हूँ, इसी लिये और कुछ माग ले ।’

‘देवीजी ! ऐहिक सुखाके लिय म प्रभुजीकी भक्ति नहीं करता हूँ, पर मोक्षमुखकी प्राप्तिके लिय ही मेरी यह प्रभु भक्ति ह । इसी लिये हूँ देवीजी ! म जो याचना कर रहा हूँ उसीम आप मेरी मदद कीजिये ।

‘देवपाल ! उममें ता मरी मदद ह ही तेरी प्रभु-भक्तिसे आर्कषित होकर ता म यहा आई हू । इस लिये दूसरा कुछ मांग ले । देव-विद्याके दान निष्फल नहीं जाते ।’

‘देवीजी ! दूसरा कुछ मागना मान हाथी बचकर गधे खरीदना ही ह । अत दूसरा कुछ मांगनके लिये स्थान ही नहीं है । (म दूसरा कुछ मागना ही नहीं चाहता हूँ ।)

‘देवपाल ! तेरी निश्चल श्रद्धा (मनावृत्ति) दंपकर म वर देती हूँ—तू चंद नमयम ही इसी नगरीका राजा हागा ।

‘देवीजी ! मुझे न राज्यकी इच्छा ह और न राजा होनेकी । क्याकि कहा ही ह कि राज-वरी सो नरकेश्वरी । जो राजा प्रभुजीकी भक्ति और धर्मकी जाराधना नहीं करता और उसकी मृत्यु हाती ह, वह नरकका अधिकारी बनना ह और मेरी नरक जानेकी इच्छा नहीं ह । राजा होनेके बाद परिणाम-स्वरूप नरकका अधिकारी होना पडता हो तो मुय बैसा राजा बननेकी तनिक-सी भी जरूरत नहीं ह ।

‘देवपाल ! तू राजा होने हुए भी नरकका अधिकारी नहा होनेवाला ह इसका म तुझे यकीन निलाती हूँ । अत एव तू आनदसे राज्यका उपभोग कर । देवी वरदान मिथ्या नहीं हाता ।”

‘देवीजी ! मेरी इच्छा न हात हुए भी आपने मुझे राज होनेका बरदान दिया है । अतः भारीभ जा हानवाला हो तो भ्रा होवे ।’

देवपाल ! चाहे तरी इच्छा न भी हो, पर तू राज होनेवाला है, यह बात निश्चित ही है ।’ ऐसा कहकर श्रीचण्डेश्वर देवी अदृश्य हो गई ।

बादमें भावनापूर्ण हृदयमें देवपालने प्रभुजीकी सनाभक्ति-व्रतान पुजा, स्नान आदि की और यह उत्साहके साथ घर लौटा मात-मात दिनाके उपवास (व्रत)का आज पारण था, पर न वह पारणा करनेकी इच्छा या हठवही और न ही तीव्र चाह या भूख । यह किमया प्रभाव था ? कहना ही पड़ा कि देवपालकी अन पायिता प्रभुभक्ति और अघट व अविच्छिन्न श्रद्धाका ही यह प्रभाव था ।

देवपाल तो जिनदत्त सेठका बचपन नौकर ही था । वह नौकराकी उत्तमना भलाईके कारण सभी सभी मालिक भी गौरवना अनुभव करते हैं । जिनदत्त सेठजीकी भी देवपालके सात दिनाके उपवास (व्रत)का पारण श्रान्तता अपूर्व अवस्था प्राप्त हुआ । सेठजीने देवपालका बहुत ही सामान दिया और बहुतमानपूर्वक व अत्यंत ही उत्साहके साथ उस खीर (दूधपाक तस्म)का पारण कराया । इस प्रकार सेठजीने भी अपने आत्माको धर्मप्राप्ती बनाई ।

(२)

एक बार अचलपुर नगरका बाहर एक बड़े गानदार बगीचेमें महातपस्वी और उग्रध्यानी मुनिराज पधारे । तपस्वी और त्याग, क्षमा और कामलता (दयालता) का एक एक रूप

समभाव इन सबके फलस्वरूप उन महर्षिका तीनों लावालावका प्रकाश (ज्ञान) करानेवाला अनंत केवलज्ञान प्राप्त हुआ। पुरंत ही देवान केवलज्ञान महात्सव मनाया। देवाका मनाया हुआ महोत्सव मान उसमें कमी ही कौनसी? केवलज्ञान महोत्सवका पता चलते ही नगरके श्रद्धालु भावुक लोग उस उद्यानमें केवली प्रभुजीका वदन करनेके लिये हर्षित हृदयसे जाने लगे।

पुरवामियाका आवागमन बढ जानके कारण राजाने अपने सेवकसे सहजम ही पूछा—“ये सब पुरजन कहाँ जा रहे ह ?”

‘महाराजाधिराज ! अपने नगरके बाहरके बगीचेमें एक केवलज्ञानी प्रभुजी पधारे ह उन्हें वदन करनेके लिये नगरजन अपने परिवारके साथ जा रह ह —सबकने नम्रतासे जवाब दिया।

राजान स्वयं भी प्रभुजीको वदन करनेके लिय जानेकी इच्छा प्रगट की और सब आवश्यक तयारी करनेके लिये आज्ञा की।

राजा सिंहस्थ अपनी ऋद्धि-सिद्धि और राजवभवर्धनरूप ऐसी सब आवश्यक तयारी (ठाठ) के साथ तीन लोकके तारक प्रभुजी श्रीदमसार केवलज्ञानी भगवानको वदन करनेके लिये गये। तब तो वे महाराजी प्रभुजी रत्नोम सुगोभित सुयजन

संहासनपर विराजमान होकर भव्य जीवोका समोपन कर ससार-दुःख निस्तारिणी एवं कल्याणमयी धमदक्षना देनेका प्रारंभ करने ही जा रह थे। दक्षना सुननेके बाद राजा सिंहस्थने पूछा—‘ओ प्रभुजी ! मेरी आयु अब कितनी बाकी ह ?’

‘तेरी आयु तो बहुत ही अल्प ह ’ जानीने बतलाया।

‘अल्प माने भी कितनी अल्प ?’

‘केवल तीन महारात्र ही ।’

बन ! हा गया ! क्या य तीन अक्षोरात्र ही जीऊंगा !'
 हाँ जीवामें जा कुछ भी म्वास खास कर लेनेका हो वह
 मय कर लात ठीक होगा ।'

आ प्रभवा ! इतन जरा से समयमें तो म क्या क्या
 कर सकूंगा ?'

' यदि जा मा दखनिश्चय कर ता थाट समयमें (दिनमें)
 भी उपलक्षण प्राप्त कर सकती ह ।

ओ भगवान ! तो मुझ क्या करना चाहिये ?'

बाह्य ब्रतारा अगीकार करो ।' नानी प्रभुजीने माग
 बतगाया ।

प्रभुजीका उपदेश सुनकर सिहरन राजान वारह ब्रतोंरा अगी-
 कार किया । अब उसे समार सरागार जान पड़ने लगा । उसके
 मनसे रामुय अब तुच्छ हा गया । जीवनका अत धिलकुल निवट
 ही मटा था और प्रभुजीकी हितकर देनाता मुनी थी, अत राजाका
 मन अब गयमका अगाकार करनेके क्रिये उहुत ही उत्सुय हो रहा था ।
 निमागपर विचाराना बाझ बढ़ गया था — 'इतन जरा-सा समयमें
 मय पुदगल-लीलावारा समंकर आ मथय विम तरह कर सकूंगा ?
 राज्यकी बागडार कौन मभालगा ? पुत्रा मनारमाया किसके
 स्वाधीन बहगा ।' इस प्रसारवे विचारकी दोड़-घपाड़ चल रही
 थी और इन्ही निचारामें राजा उलसा हुआ था कि सहसा
 राज्यकी अधिष्ठायिनी देवीन प्रगट होकर कहा — 'राजाजी !
 आप चिंता न कीजिये । सब कुशल-मंगल ही होगा ।'

पर दजीजी ! मेरी आयु तो बहुत हा कम ह और मुझे
 तो समयका अगीकार करनेका उत्कट अभिराग्य ह । क्या करूँ ?
 कुछ माग ही नहीं दिगार्द देता ।

‘हे राजन् ! मैं कहती हूँ, वरमा कीजिये । मैं पंचदिव्य प्रगट करूँगी । तब पंचदिव्यके द्वारा जिसके गलेमें पुष्पमाला पहनाई जायगी, उसे आप अपना राज्य और अपनी पुत्री मनोरमा दे दीजिये और बादमें आप खुशीमें चारित्रिका अंगीकार कीजिये ।’ इस प्रकार देवीने राजाका मांग सन्तुष्ट कर दिया और वह अदृश्य हो गई (अपने स्थान चली गई)।

पंचदिव्य प्रगट हुए । राजा, मंत्री और मंत्र अधिकारी वगैरह सबने मिलकर उन पंचदिव्यको नगरके दह-वटे मार्गोंमेंसे फिराया, तब तो देवपालके ही गलेमें पुष्पमाला पहनाई गई । देवी चक्रेश्वरीने दिया हुआ वरदान इस प्रकार सम्पन्न हुआ ।

राजा सिंहस्थन देवपालके माथे अपनी पुत्री मनोरमाका विवाह कर दिया और देवपालका राज्यका सब काराबार सांप दिया । राजा सिंहस्थन थोड़े ही समयमें यह सब कार्य समाप्त किया और केवली प्रभुजीके पाम जाकर श्रीभागवती दीक्षाका अंगीकार कर आत्माका श्रेयसाधन करना शुरू किया । अत्यल्प आयुष्यमें भी समयका पूणतया पालन कर ये नूतन समयमें सौधमें देवलोकमें देव हुए ।

पारसमणिस भी चारित्रिका प्रभाव ज्यादा ही है । इस समारम्भमें जितने भी महापुरुष भूतकालमें हो गये हैं, भविष्यकालमें होंगे और वर्तमानकालमें विद्यमान हैं वे सबके सब निम्न चारित्रिक प्रभावसे ही हैं, ऐसा समझ लीजियेगा । परमाच्च कोटिका जीवन जीनेके लिये और परभवको सुधारनेके लिये समयके मांगका अंगीकार किये बिना निस्तारा ही नहीं है । देखिये, राजा सिंहस्थ तो दो ही दिनके चारित्रिक प्रभावसे देवगतिको प्राप्त हुए !

(३)

देवीने वरदानके प्रभावसे देवपालको राज्य तो मिला, पर जिस प्रकार खाकर मस्तीमें आये हुए पुराने नौकर नये अधिकारीका कहना हँसी मजाकम उड़ा देते हैं और मौका मिल जाता है तो वे उस नये अधिकारीको उसके स्थानपरमे नीचे गिरा देते हैं, उसी प्रकार देवपाल भी वसी ही स्थितिमें आ गया था। देवपालकी आत्मा या हृदय कोई मानता ही न था। देवपाल बड़ी ही उलझनमें आ गया था। नया मंत्री मंडल बनानेमें भी काफी कठिनाई थी। पुराने मंत्रियाना राय सहन किये बिना इस नये मंत्री-मंडलकी नियुक्ति करना असम्भव ही था। एक ओर सिंह और दूसरी ओर नदी जैसी हालत हो गई थी देवपालकी। 'अब क्या करना चाहिये ? इसी मनोमथनमें देवपाल था कि उसे सूझा—'देखू ! मेरे पहलेके परम उपकारी सठजीका बुलवाऊँ ! शायद वे मुझे कुछ माग बनला दगे ! ' तुरत ही उसने सठजीका लिखा लानेके लिये नौकरको भजा। पर 'बड़े आज राजा भी क्यों न हो, लेकिन पहले वह मेरा नौकर ही था और क्या मैं अपने नौकरको ही अपना सिर झुकानेके लिये जाऊँ ? ऐसा सोचकर बहुत ही अभिमानके साथ सठजीन राजदूतको ना कह दिया। सठजीकी आशा भी व्यर्थ हो जानेसे देवपालका स्वमान पूरा पूरा नष्ट हो गया और उसकी चित्तम और बढ़ि हुई।

चिन्ताग्रस्त और उदासीन हालतमें ही देवपाल नदीतटकी पणकुटीमें श्रीजिनश्वर प्रभुजीके दर्शन करनेके लिये गया और वहाँ ध्यानस्थ होकर प्रभुजीकी प्रायना करने लगा—'हे विमो ! मैं आपकी कृपासे राजा तो हुआ, पर मेरी हालत बहुत ही दद नाक हो गई है ! राज्यके पुराने अधिकारी और सेवक मेरी

आनाको बिल्कुल मानते ही नहीं । तब मुझे राज्यका पालन किस प्रकार करना चाहिये ? म होशियार राजाकी तरह बनावटी-भात्र नामधारी राजाके नाते अपना जीवन बिताना नहीं चाहता । यह तो एक प्रकारकी गुलामी या एक तरहका बंधन ही है । ओ प्रभुजी ! आपसे प्रभावसे मेरी ये सब चिन्ताएँ दूर हों ।'

इस प्रकार देवपाल अपनी हृदय-वदनाएँ व्यक्त कर ही रहा था कि श्रीचण्डेश्वरी देवीने प्रगट हाकर कहा — 'देवपाल ! तू ऐसी चिन्ताएँ क्यों करता है ?

'देवीजी ! मैं आपके वरदानसे राजा तो हुआ पर बड़ी भारी भारी कठिनाइयाँ आ गयी हैं ।'

'देवपाल ! तेरी उलझन टिक ही नहीं सकती ।

'तो मुझे क्या करना चाहिये ?'

'उसका उपाय मैं बताती हूँ । चमत्कारके बिना इस दुनियाँ में नमस्कार नहीं । इस लिये कुम्हारको बुलवाकर उसके पासमें मिट्टीका एक सुंदर और भव्य ऐरावण हाथी बनवा दे और उसपर तू सवार हो जा । दया प्रभावसे मेघगजना करता हुआ और मदोन्मत्तकी तरह चौकड़ी (छलांग) भरता हुआ वह हाथी इधर-उधर फिरने लगेगा । यह देखते ही सबके अभिमानका पानी टूट जायगा — सब-कुछ पानी पानी हो जायेंगे ।'

देवपाल अपने महल लौटा और उसने देवीजीके कहनेके अनुसार कुम्हारका बुलवाकर उसे सुंदर व भव्य ऐरावण हाथी बनानेका आदेश दिया । हाथी तैयार होते ही देवपाल उसपर सवार हुआ । दया प्रभावसे वह हाथी ऐरावण हाथीकी तरह चौकड़ी भरता हुआ इधर उधर फिरने लगा । यह चमत्कार देखते ही राज्यके पुराने अधिकारी और सेवक हरत-अंगेज (आश्चर्यमुग्ध)

हा गये और आपसमें घात करने लगे — "मालूम हाता ह कि राजा देवपालको दबी सहाय ह । क्योंकि दबी सहायके बिना मिट्टीके हाथीको जिंदा बनाना असंभव ही है । अब तो हम चाहिये कि हम राजाजीको अनुबल हो जावे वरना वे हमें हरान-परेशान कर दगे । एष तो राजसत्ता और उसमें भी दबी सहाय, तब तो पूछना ही क्या ? वे चाहंग उसी समय हमारे हाथ पाँवोंमें लोहेकी जजोरे डलवाकर कारावासीका उडा (सरियो) के पीछे (पिंजडमें) धकेल दग । और राजाजी जो हम सज्जन खुश हागे तो हमें सभी सुविधाएँ मिल जायगी । इसी लिय हम सब मिलकर राजा देवपालजीके पास जायग और किय अपराधाकी क्षमा-याचना करगे ।"

इस प्रकार विचार कर राज्यका मंत्रीवग और सब सेवक राजा देवपालके पास आय और बोना हाथ जाडवर कहने लग— "ओ कृपानिधान राजाजी ! क्षमा कीजिये । हमन आपके जनैव अपराध कियेह क्षमा कीजिय । हम नजानी ह, आपके महद्गुण—प्रताप तेज, ऐश्वर्य आदिका नहीं जान सकते । इसी लिय आपका अनादर-अपमान कर बैठ ह । यह हमारी गजमे बडी (महान) भूल हुई ह, क्षमा कीजिय ।

तुम लाग अपने धमना भूलकर जो बरताव कर रहे थे, वह योग्य नहीं ह । किन्तु तुम लोग किय अपराधाकी क्षमा माँग रहे हो अत म (क्षमा करना यह) अपना राजधम समझकर क्षमा करता हूँ । पर अजसे जागे भविष्यमें फिरसे क्षमा माँगनेका समय न आने पाये, यह ख्यालमें रखनेका मत भूलना । '

' आपकी आज्ञा हम सिरपर चढाते ह । '

इस प्रकार मंत्री और सज्जन सेवक अनुबल हो जानेके बाद राजा देवपालन जिनदत्त सैठजीको लिवा लानके लिये सेवक

ना । वह जानता ही था कि सेठजीको आनेमें सकोच होगा ही ।
जिनदत्त सेठजी आये, पर उनके मनमें दुःख था कि पहले मने
जिजाबीका अपमान किया है और इसी कारणसे सकोच भी था ।
मने ही (देवपाल राजाके दशन होते ही) जिनदत्त सेठजीने दोनों
जोड़कर नमस्कार किया । राजा देवपालने भी नमस्कार
कीकारते हुए नमस्कार किया, सेठजीका योग्य आसनपर बठाया
और कहा—‘सेठजी ! आप पहली (पूर्वकी) परिस्थितिसे मेरे
हानि उपकारी हैं । आपकी नौकरी करनेके प्रभाव ही से मैं म
जा बना हूँ । फिर मैं आपका कर्मे भूल सकता हूँ ?’

“राजाजी ! आप बड़े दयालु और उदार हैं । आपने पहले
गया (निमन्त्रण) भेजा था, तब मैंने आपका अनादर किया था ।
मैं क्षमा कीजिये ।”

“सेठजी ! भूल तो हरेक आदमीकी होती ही है । किन्तु
लका शिकार हो जानेके बाद भी जानकी तरह उसी भूलको
भटे रहना, यही मानवकी बड़ी गंभीर भूल है ।”

“राजाजी ! फिरसे ऐसी भूल न होने पाए, इस लिये मैं
आपका सहायक रखूंगा । आज आपने मुझे जो निमन्त्रण भेजा,
मैंने लिये मैं आपका बड़ा एहसानमद (आभारी) हूँ ।”

“सेठजी ! जब मेरा विचार ऐसा है कि आप मेरे पूर्वके बड़े
उपकारी होनेसे आज मैं आपकी महाअभिलाषाके स्थानपर नियुक्ति
करूँ ।”

‘जैसी आपकी आज्ञा ।’ सेठजीने सम्मानपूर्वक जवाब दिया ।
राजा देवपालने सभी अधिकारियोंको अपने-अपने स्थानपर
बैठे । पर संपूर्ण राज्यतन्त्री लगाम महाअभिलाषा थी जिनदत्त
सेठजीके हाथमें सौंपी ।

राज्यमुखाका उपभाग करानेवाली श्रीचनेदररी दवावा सचना थी—“ह दवापाल ! राज्यसुखाका उपभाग करते हुए भी श्रीजिनश्वर प्रभुजीक दशन और उनका पूजा मन मून्ता ।” जत देवीताकी इग आज्ञाक अनुसार राज्यमुखाका उपभाग करते हुए भी राजा देखाज श्रीवोतगाग प्रभुजीकी भक्तिमें अनुरक्त ही रहता था ।

(४)

प्रतिश्राम बिहार करत करते और भय जीवोका उपदग देते देते केवलनानी श्रीदमभार प्रभुजी तगर बाहरके उद्यानमें पधार । सभी नगरवासी धोम बडे ही हर्षो-गमके साथ प्रभुजीको वदन करतके लिये जा रहे थे । परम उद्धारक केवलनानी भगवत्त पधार ह इम जानका पता चलत ही स्वय राजा लवपा भी अपने साथ और परिवारके साथ प्रभुजीका वत्न करनके लिये उन वगोघेमें पहुँचे । विधिवे अनुसार प्रभुजीकी वदन कर राजाजी यथोचित स्थानपर बठ गये और केवलनानी भगवन्तकी अमृतपूण देशना सुननेके लिये उत्तुब हो गये ।

भय जीवाका उद्धार करनेवाले कवली प्रभुजीने सुवण कमलपर विराजमान होकर कल्याण करनेवाली अमृतमयी देगना देना शुरू किया । आपने द्रव्यपूजा और भावपूजाका गूढ रहस्य तत्त्व अमृतपूण शलीमें समझाया । इमे सुनकर राजा दवापाल प्रभुभक्तिमें विशेष सजग और उत्साही हुए । और राजाजीक मनमें एक शानदार व रमणीय जिनमन्दि बनवानकी भावना उत्पन्न हुई । तुरत ही इस भावनाको मूर्तस्वरूप दिया गया और देवभवन जसा एक रमणीय जिनालय तयार हो गया । मन्दिरमें देवाधिदेवकी सुगममयी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा बडे महोसबके साथ

केवलज्ञानी प्रभुजीके द्वारा करवाई। इस प्रकार प्रतिष्ठा करवाकर राजा देवपालने अपने जीवनमें एक महान् पुण्य उपाजन किया, प्राप्त हुई लक्ष्मीका सदुपयोग किया और अपनी प्रभुभक्तिमें वृद्धि की। केवलज्ञानी प्रभुजीकी वाणी सब शुभ गुणसि अलङ्कृत और सभी मन कामनावाको पूरा करनेवाली हानसे जीव क्या प्राप्त नहीं कर सकते? कहना ही पड़ेगा कि वे सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

राजा देवपालने बीस स्थानकमसे प्रथम अरिहत पदकी विधिपूर्वक आराधना करनेकी तपस्या शुरू की—मन, वचन और कर्माके शुभ योगोद्वारा हीरे, मोती, मानिक और सुवर्णकी बड़ी भारी भारी आगियाँ (संगार) सजाकर प्रभुजीके अनेक प्रकारके स्नान महात्म्य मानाते हुए जीवनका ध्य किया और साथ साथ सीधनर पदरा उपाजन भी किया। अनेक प्रकारकी सर्वोच्च साधन-सामग्रियाँ साधर्मिक बंधुआकी सेवा भक्ति करनेका लाभ राजाजी सदैव उठाते थे। वे वैसे मौकेको कभी भी नहीं गँवाते थे। राजा देवपालने देश-देशान्तरके महातीर्थोंकी यात्राएँ भी की थी। इन सब प्रकारसि राजाजीने देव गुरु और धर्मकी वृत्त ही भली भाँति आराधना की थी।

(५)

अब तो राजा देवपाल विशेषरूपसे धर्मकी आराधनामें ही आनन्दित मग्न रहते थे। राज्यका कारोबार अब कम कर दिया था। सासारिक और राज्यके सुख अब आपको निस्सार मालूम होने लगे थे। आपकी आत्मा वराम्भनासित बन गई थी और इसी लिये आपको ससारके लिये उदासीन भाव पदा हो गया था।

एक बार राजा-रानी नगरके बाहर घूमनेके लिये गये थे। तब रानीजीने लक्ष्मियोंकी अँटिया सिंगपर उठाकर सामनेस आते

हुए एक लकड़हारेको देखा कि उन्हें मूर्च्छा आ गई। तुरन्त ही राजाने समयसूचकतासे शीतोपचार (सिरपर पानी छिड़कना, पम्पा ले पलना आदि) किये और होगमें आते ही रानीजीसे पूछा—' यरायक क्या हो गया ? '

' लकड़हारेको देखकर मुझे जातिस्मरणज्ञान हो गया है । '

' पर उममें यहोश हो जानेका क्या (वीनसा) कारण ? '

इस लकड़हारेका देखते ही मुझे पूर्वभवका स्मरण हुआ । '

' पर पूर्वभवम भी ऐसा तो तूने क्या देखा ? ' ।

' पूर्वभव सुनने लायक है, मुनिये ।

' तब सुनाइये । '

रानीजाने अपना पूर्वभव सुनाते हुए कहा— " मैं और यह लकड़हारा पूर्वभवम पति-पत्नी थे । हमारी हालत बहुत ही शोचनीय थी—भरपेट गाना मिलना भी मुश्किल था । जगलमेंसे लकड़ियोंनी अँटिया लात उह बेचते और हम अपना गुजारा चलाने थे । '

राजान बौच-ही मैं प्रश्न किया— ' पर तू तो इस भवमें रानीजी हो गई ता फिर यह लकड़हारा लकड़हारा ही क्यों रहा ? '

अपने दुष्प्रभसि । '

' ऐसे तो इसने कौन कौनसे दुष्प्रभ किये थे ? '

' सुनियेगा । एक समय पूर्वभवमें हम दोनों जगलमें लकड़ी लेने लिय गये थे । उस समय जगलमें नदीके किनारेपर श्री वीतराग प्रभुजीकी प्रतिमाके दर्शन हुए । मने श्रीवीतराग प्रभुजीकी यथाशक्ति सेवा भक्ति की और अपनी आत्माको पवित्र की । बादमें मन अपने पतिसे प्रभुजीको भावपूर्वक नमस्कार करनेके

लिये कहा, तब तो वे मेरेपर गुस्सा उतारते हुए कहने लगे कि पत्थरके बुतोंको तो नमस्कार किस लिये ? तू स्वय अपना कल्याण कर ले । इस प्रकार देवाधिदेवकी भयकरमें भयकर आशातना करनेसे वे (मेरे पति) सिधारकर फिरसे निधन कुलमें ही उत्पन्न हुए लकड़हारे ही रहे और मैं प्रभुभक्तिसे प्रभावसे आज राज-पत्नी हुई हूँ ।'

समूचे विश्वमें चार सत्ताओंका साम्राज्य है । इन चार सत्ताओंका क्रमसत्ता सभी जीवोंपर विशेषरूपसे अपना शासन चलाती है । जीवाने स्वयं किये हुए कृत्योंके अनुसार कमबख्त होत है और उन कमबख्तोंके अनुसार जीवन चलता है । कमसत्ता जीवोंको बाहे बसे बना सकती है । इस लिये उसकी करामात विचित्र ही है । और कहा भी गया है— कमणा गहना गति ।'

रानीसे लकड़हारेके पूवजमका वृत्तान्त सुनकर राजाने उसे मासमें बुलाकर कहा—' भैया ! पूवभवम तूने श्रीजिनेश्वर प्रभुजीकी घोरसे घोर आशातना की है । इसी लिये इस जन्ममें तू दुःख और दुःख भोग रहा है । अब तू कोको दूर करनेके लिये तू जिनेश्वर प्रभुजीकी भक्ति कर धर्मकी आराधना कर ।

लकड़हारेका जीव ही मुत्कर्मों (भारी कमबख्त) है इस लिये अपना कहना वह मान ही नहीं सकेगा, ऐसा देखकर राजान उस जानके लिये छुट्टी दे दी और राजा-रानी भी अपने महल छोड़ आये ।

इस प्रकार इस धार्मिक दम्पतिन कई साल ऐहिक व राज्यके सुखोका उपभोग किया ।

(६)

रानी मनोरमाक प्रतापी ऐसा एक पुत्र हुआ । उसका नाम रखता गया देवसेन । प्रबल (भरसक) पुण्यके बिना राज कुलम जम पाना मुश्किल है । देवसेन भी अत्यन्त पुण्यशाली था । क्रमशः देवसनने यीधनमें प्रवेश किया और उसका विवाह सुशीला व रूपवती राजन्याके साथ हुआ ।

राजा देवपाल अब भस्मारके मुक्तोम ऊब गया था । अब उसे राज्यका कारोबार छोड़ जसा मालूम होना था । अपन पुत्र देवसनको राज्यका उपभोग करनेके लिये याग्य देसकर राजा देवपालने उसे राज्याभिषेक किया—सम्पूर्ण राज्य सौंप दिया और स्वयनें तो श्रीचन्द्रप्रभु भगवानके पास निवृत्तिप्रधान चारित्रका अंगीकार किया । रानी मनोरमा भी अपने पतिवो अनुसरनेवाली थी । उसन भी समय ग्रहण कर अपनी आत्माको टुटवृत्त्य बनाई ।

श्रीचन्द्रप्रभुजी भगवानके पास दीक्षाका अंगीकार कर निरति-चारपूर्वक समयका पालन कर कठिनातिवठिन नपम्या कर और नौ पूव व ग्यागृ अगाता पठन-पाठन करत हुए कमकी निजरा कर श्रीजरिहत पदकी आराधना करने हुए अपना मृत्युलोकका गरीर छोड़कर देवपाल प्राणत नायक दसवे देवलानम देव हुए । साध्वीजी श्रीमनारमाजी भी उसी देवराजमें देव हुई और दोनो वहाँ मित्रतासे रहन लग ।

आयु पूण हानके बाद राजा देवपाल महाविनेह क्षेत्रमें श्रीतीर्थकर प्रभुजी हागे और रानीजी भी उसी क्षेत्रमें उही श्रीतीर्थकर प्रभुजीके गणघर होकर शाश्वत ऐसे परम मुक्तको प्राप्त करगी ।

(६) प्रारम्भिक परीक्षाके पुराने प्रश्नपत्र

[अखिल भारतीय जन समाजकी एक मात्र सर्वोत्तम शिक्षणसमस्या थी अन तत्कालीन विद्यापीठकी आरसे ता १४-५-१९४८ से अबतक आठ बार प्रारम्भिक परीक्षा की गई है । इस परीक्षामें भारतक विभिन्न प्रांताकी २०० पाठशालाआगारा ३५०० भाष्यशाली परीक्षार्थी सम्मिलित होकर उत्तीर्ण हुए हैं । इस पाठ्यक्रमके अनुसार पढाईकी सुविधाके लिय और परीक्षामें प्रश्न बिच बगल पूछ जाते ॥ इसका सवाल आनके लिय वहाँ शुरूसे ही प्रश्नपत्र न्यिे गय है ।]

(हरक प्रश्नपत्रकी सूचनाएँ—प्रश्नोंके उत्तर समझकर और विषयको लेकर लिखिये । शुद्धि और सुलेखनके लिये अंक ५ । कुल अंक १०० ।)

परीक्षा १

ता २७-६-१९४८

- १ 'एगिदिया से मिच्छा मि दुक्कड 'तव और जाव अरिहताण'से अप्पाण वोसिरामि तव सूत्राके विभाग शुद्धिपूर्वक लिखिये । १०
- २ (i) १६ मत्तियामेंसे बिन्ही १० मत्तियोंके नाम लिखिये । १०
(ii) १० महातीर्थोंके नाम लिखिये । उनमेंसे आपन कौन कौनसे तीर्थोंकी यात्रा की है ? १०
- ३ नीचेक शब्दोंमेंसे बिन्ही पाचके अर्थ सबधपूर्वक लिखिये । १०
तेइदिया जभाइएण, लोए, सधाइया, सज्जमजात्रा, माणेण पढम ।
- ४ भगवान श्रीमहावीर प्रमुजीका सक्षिप्त चरित्र पचीस पक्ति-यामें लिखिये ।

५ रिक्त स्थानोंकी पूर्ति कीजिये । १४

(अ) (i) भगवानका लछन बल ह । (ii)

भगना लछन हाथी है । (iii)

भगवानका लछन चद्र ह । (iv) भगवानका लछन कछुआ ह ।

(ब) (i) श्रीपाश्वनाथ प्रभुजीका लछन ह ।

(ii) श्रीनेमनाथ प्रभुजीका लछन ह ।

(iii) श्रीसुमतिनाथ प्रभुजीका लछा ह ।

(iv) श्रीविमलनाथ प्रभुजीका लछन ह ।

(क) ३ रे, १२ व, १५ वे और १९ वे तीथकर प्रभुजीके नाम और लछन लिखिये ।

६ उत्तर लिखिये । १५

(i) पचिदिय सूत्रमें कहे हुए गुरु महाराजजीके छत्तीस गुण गिनाइये ।

(ii) नववारमंत्रमें बताय हुए पाँच परमेष्ठी गिनाइय ।

(iii) ऐगिदिया, बइदिया, तेइदिया, चउरिंदिया, पचि दिया — इसका अर्थ स्पष्टतासे समझाइये । इन पाँचमें आप किस विभागमें आ सकते ह ?

७ उत्तर लिखिये । २१

(i) देवपालको किस तरह राज्यप्राप्ति हुई ? विस्तार पूर्वक लिखिय । (ii) रानी मनोरमाको जातिस्मरणज्ञान होनेपर उसन पूर्वभवकी कौनसी बात राजा देवपालको सुनाई ? यणन कीजिय । (iii) राजा सिंहरथने अपने राज्यका उत्तराधिकार (विरासत) किसे सौंपा ? राजाजीको उत्तराधिकारी (वारिस) कयो खोजना पडा ? समझाइये ।

परीक्षा २

ता ७-११-१९४८

- १ नीचेकी गाथाआका अथ समझाइये । १५
 (१) 'अभिह्या वत्तिया से 'तस्य मिच्छा मि दुक्कड तव'
 (२) अरिहते कित्तइस्स चउवीस पि केवली
- २ नीचेके सूत्र शुद्धिपूर्वक साफ-साफ अन्वरोध लिखिये । १५
 (१) पचिदियसूत्र सपूर्ण (२) वरेमि भत्ते सून सपूर्ण
- ३ नीचेके श्रुत्यामोंसे किन्ही पाँचके अथ सवधपूर्वक समझाइये । १५
 सव्वेसि, पचसमिओ, दुविह, तिविहेण, सघाइया, नियम
 सजुत्तो, सागरवरगमीरा, धम्मनित्थयरे ।
- ४ भगवान श्रीमहावीर प्रभुजीकी सहनशीलताकी (दीक्षा
 लेनेके बादकी) किसी एक घटना १५पक्तियोंमें लिखिये । १०
- ५ उत्तर दीजिये । ९
 (१) तीथकर भगवान याने क्या ?
 (२) २४ प्रभुजीके नाम आप किस सूत्रमें सीखे ?
 (३) १ ले, ५वे, ९वे, २१वे और २३ व प्रभुजीके लक्षण
 लिखिये ।
- ६ आपको मालूम हो, उन १२ महासतियोंके नाम लिखिये । ६
- ७ जिनदत्त मठजीका एक सामान्य नौकर प्रभु भक्तिके प्रभावसे
 राजा बसे हुआ विस्तारपूर्वक समझाइये । १०
- ८ आप जितन सूत्र सीखे ह, उनमेंसे आप कौनसा सूत्र बहुत
 ही उत्तम और शुद्धिपूर्वक लिखना जानते ह ? ६
- ९ रिक्त स्थानोंकी पूर्ति कीजिये । १०
 (१) श्रीशत्रुजय गिरिराजपर प्रभुजी विराजते ह ।
 (२) श्रीतारगाजी तीथपर " " " ।

- (३) श्रीतलाजा तीथपर प्रभुजी विराजते ह ।
 (४) श्रीमदवगिरि तीथपर प्रभुजी विराजते ह ।
 (५) श्रीगिरनारजी महातीथपर प्रभुजी विराजते हैं ।

परीक्षा ३

ता ३०-७-१९४९

- १ नीचेके सूत्रावली गुह्यपूजन लिखिये । १५
 (१) नमस्वार महामन्त्र (२) सामाद्वयव्यजुतो मूत्र
- २ जवाब लिखिये । १०
 (१) करेमि भते मूत्रमें आप क्या क्या सीखे ? संपूर्ण-
 रूपसे समझाइये । (२) इच्छामि समासमणा मूत्र अथवा
 साथ समझाइये ।
 नीचेके शब्दोंमेंसे किन्हीं सातके अर्थ सबधपूजन लिखिये । १४
- ३ जाव, पुष्पदत्त, लाए, सचसाहूण समासमणा, सिद्धाण,
 जावणिज्जाए, सुहराई, बोअवकमणे ।
- ४ उत्तर लिखिये । १३
 (१) किन्हीं सात तीर्थोंके नाम लिखिये और याद जातते
 होतो वे किस किस विभागमें (प्रातमें) आय ह, यह भी
 लिखिये । (२) ६ ठे ८ वे, ९ व, १३ वे, १७ व और १९ वे
 प्रभुजीके नाम और लछन बताइये ।
- ५ भगवान श्रीमहावीरस्वामीजीने दुनियाका कव और कौनसा
 उपदेश दिया ? उसमेंसे आप कितना आचरणम रखते ह ?
 २० पकितयोंमें उत्तर दीजिये । १५
- ६ जवाब लिखिये । १५
 (१) प्रभुजीकी अचल (ऐकान्तिकी) भक्तिसे क्या लाभ
 होता ह ? पाठ्यपुस्तकमकी घटनाके सहारे १५ पकितयोंमें

वणन कीजिये । (ii) पूजक मकी लवङ्गहारिन इस जन्म
रानी मनोरमा हुई, पर उसके पूजक मके पति फिरसे इस
जन्म भी लवङ्गहारे (भील) ही रह गया ? कारणोंके
साथ विस्तारपूर्वक समझाये ।

७ निम्न प्रश्नोंके उत्तर दीजिये ।

१३

(i) तीर्थ जाने क्या ? (ii) श्रीतीर्थवरदेव चितने ? कौन
कौनसे ? (iii) काउस्मगम जैमाई आ जाय ता ? (iv) पाँच
परमेष्ठियोंको तमस्वार करनेमें क्या लाभ ?

परीक्षा ४

ता ३० ७-१९५०

१ बुद्धिपूर्वक लोगसस सूत्र सम्पूर्ण लिखिये ।

१४

२ रिक्त स्थानोंकी पूर्ति कीजिये और उत्तरे माथातपा
अथ समझाये ।

१५

(i) सम्पूरिता हितानि (ii) गुहाय पसत्या
(iii) विमहर मणुजो (iv) अभयदयाण
बोहिदयाण (v) तह वि मम चरणान् ।

३ नीचेके शब्दोंमें किन्ही सानक भाषाय अपनी ऊँच-
(मान) भाषामें समझाये ।

२०

सामायिक, काउस्मग, समिति, गुर मृदु
नमस्वार महामत्र गुप्ति स्तुति या धान ईश्वर
जिनमन्दिर ।

४ आपकी बुद्धिके अनुसार नीचेके विषयोंके दण्ड-दण्ड
पवित्रियोंमें सक्षिप्त जानकारी दीजिये ।

२१

(i) तीर्थयात्रा (ii) प्रतिग्रमण (iii) दत्तव्य

५ याग्य शब्दांनी पूर्ति कर वाक्य पूण कीजिये । ५

(i) नन्दावत भगवानका था । (ii)

भगवानका स्वस्तिव था । (iii) गुरुमहाराजके
गुणोका वणन सूत्रमें आता ह ।

(iv) माघेरात स्वास्थ्यरे लिये स्थान बदलने जाते समय
महातीथकी करना उत्तम ह । (v) शाला-
कालिजकी पडाइ हमें सिखा भी लेनी ही चाहिये ।

६ नीचेके विषयों वारेमें आप कुछ जानत ह ? वह आपने
कहाँ पढा ? ६

वताशा, वार्षिग कपनी विमान (वायुयान) की सर ।

७ क्या सामान्य आदमी राजा हो सकत ह ? क्या मामूली
नौकर प्रभुजीनी भक्ति कर सकत ह ? इस नौकर और
राजपुत्री मनोरमाके बारेमें पढह पकितयाम त्रिवध लिखिये । १०

८ प्रश्नोके उत्तर लिखिये । १०

(i) ५ महातीथों व ५ महारातियोके नाम लिखिये ।

(ii) भगवान श्रीमहावीरवरु श्री चतुर्विध सघना परिवार
कितना था ?

परीक्षा ५

ता २९-७-१९५१

१ इरियावहिय सूत्र मपूण गुद्विपूवक लिखिय । १६

२ नीचे लिखे हुए तीन विषयोंमेंसिन्धी दोका १५-१५ पकित
यामें सक्षिप्त वणन कीजिये । १५

(i) पूजा पढना (ii) सघभोजन (iii) श्रीक्षत्रुजय नीयका
कार्तिय पूर्णिमाका मठा (यात्रा) ।

३ नीचे लिखे हुए गानामेंसिन्धी पाँचके स्पष्टाय विस्तारसे
समझाइये । और वे ही पाँच शब्द किस किस सूत्रमें ह व
किस किस विषयके साथ उनका संबंध ह, यह भी लिखिये । १५

१ वदणवतियाए, सुगुणिवकठाण, बुहाण, वाणीसदोहदेहे,
भवे भवे, जावत, आइगराण ।

४ प्रश्नाके उत्तर दीजिये ।

९

(i) रानी मनोरमाके बारेम आप जो जानते हो वह दस पवित्रयामें लिखिये । (ii) पाँच महासतियाके और पाँच महातीर्थोंके नाम लिखिये । (iii) ५ व, ७ वे, ९वे, ११ वे, १३ व, १५ और १७ व ममें किन्ही पाँच प्रभुजीक लछन लिखिये ।

५ नीचेके दाछोमें किन्ही नौ गछाके अण लिखिये ।

९

सिद्धा, निम्ब दहि मार, वदे, इच्छ, तस्म हुज्ज,
ठामि, मनि, जाग, जाव, दव, अम्ह, दिज्ज ।

६ रिक्त स्थानाकी पूर्ति कर वाक्य पूण कीजिये ।

६

(i) अचलपुर नगरम राजाके राज्यमें सेठजीके पास नामक प्रभुभक्तिसपन्न एक नौकर रहता था ।
(ii) सिंहरेय राजाने मुनिजीके पास दीक्षा ली ।
(iii) पंचदिव्य प्रगट होनेपर क गलेमें माला पहनाई गई । (iv) दवसेनके पिताजीका नाम और माताका नाम था ।

७ नीचे लिखी गाथाका पूण कर उनके अण भी समझाइये ।

१०

(i) भय बुहाण (ii) वाणी देवि । सार
(iii) इह सताइ

८ रिक्त स्थानाकी पूर्ति करते हुए भगवान श्रीमहावीर प्रभुजीका सुसंबद्ध चरित्र बनाइये ।

१५

भगवान श्री देवका जन्म नगरमें हुआ था ।

वाग्जीडाके समय शीघ्र और पराक्रम दिस गये आप
 कह गये (नामसे प्रसिद्ध हुए) । माता पिताजीने
 पढ़नेके लिये दाखिल किये और वही-वे-वही
 व्याकरणकी रचना की । आप प्रभुजीकी मधामें
 देव उपस्थित रहते थे । प्रभुजीने सालकी आयुमें
 ऐन युवावस्थामें ली । दीक्षा लेनेके बाद
 नामका एक दण्डिरिप को बुलाया यह घटना
 आश्चर्यजनक है । एक बार काउत्सर्ग
 ध्यानमें निमग्न थे उस समय प्रभुजीके वानाम
 काले टोरकर महान उपमग्न किया । बादमें उस महान
 दिव्यविभूतिको गायम वेदज्ञान प्राप्त हुआ । प्रभु-
 जीके कुल शिष्याका परिवार था महाराज
 प्रभुजीके प्रधान गणधर थे । प्रभुजीने सालतक चारि-
 त्रका पालन किया था । दीक्षा लेनेके बाद
 साल हो जानपर आपको वेदज्ञान हुआ । वेदज्ञानकी
 अवस्थामें सालतक प्रभुजीने इस पृथ्वीपर महान
 महान उपकार किये और सालकी आयुमें
 तीसम आप निर्वाण सिधार । आज हम उन प्रभुजीके
 आसनमें आराधना कर रहे हैं । आप प्रभुजीके आत्म-
 श्लेषण करानवाले वचनापर हमें रखनी चाहिये ।

परीक्षा ६

ता २७-७-१९५२

१ नीचे लिखी गाथायास शुरू कर सम्पूर्ण सूत्र लिखिये ।

(कोश भी तीन)

१५

(१) सुविहि च पुष्पदत्त (२) गमिदिया वेददिया

(३) जाव निगम (४) चारिज्जइ जद वि

- २ नीचे लिखे सूत्रोंमेंसे किसी एकका भावाय, आपने जसा पढा हा, बना लिखिये । १०
(१) लोगस्य सूत्र (२) करेमि भते सूत्र ।
- ३ ज किंचि सूत्रकी प्रस्तोतरीमेंसे आपका क्या-नया जानने मिला ? ८
- ४ पाठ्यक्रममेंके जितने सूत्राका परिमल' विभाग आपने पढा हो, उसमेंसे जापको किस सूत्रके परिमल बहुत पसन्द आते ह ? और क्यों ? लिखिये । १०
- ५ नीचे लिखे शब्द किस सूत्रम आत ह ? उनका किन शब्दोंके साथ विशेष सम्बन्ध ह ? शब्दोंके अर्थके साथ लिखिये । १५
परत्यकरण, हियण, तिदण्डविरयाण, वियट्टछउमाण नियमसजुत्ता ।
- ६ उत्तर लिखिये । १६
(क) निम्न स्थानोंकी पूर्तिकर वाक्य पूर्य कीजिय ।
(i) तारणाजीमें का लछन देखकर हम कह सकत ह कि यह प्रतिमाजी श्री भगवानकी ह । (ii) तीसरे और सातवे प्रभुजीके और लछन थे ।
(iii) अपने गाँवके जिनमन्दिर तीर्थभूमिके में अधिक आनन्द ह । (iv) इतिहासक पृष्ठ सुवर्णान्तरोंमें महासतियाके लिखे गये, इसका कारण एक ही ह कि उनकी आत्माएँ बहुत ही थी ।
(ख) देवपाल किस तरह सुखी हुआ ? १५ पकिनयाम लिखिये ।

- ७ नीचे लिखे शब्दोंमेंसे किन्हीं नौ शब्दोंके अर्थ लिखिये । ९
 जावणिज्जाए, पदम, प्रमथेर, मक्कडासताणा, निदामि,
 निग्घायणट्ठाए, अविराहिआ, पसीयतु आइच्चेसु, भते, उ ।
 ८ नीचे लिखे प्रश्नोंके उत्तर आप अपनी भाषामें विस्तार-
 पूर्वक लिखिये । १२
 (i) श्रीवीर विभुजीने गभमेंके अभिग्रहकी तरह हम अभि-
 ग्रह के सवत ह या नहीं ? (ii) भगवान श्रीमहावीर देवके
 चरित्रमेंसे कोई भी तीन गूढ़ रहस्य विस्तारपूर्वक लिखिये ।

परीक्षा ७

ता २-८-१९५३

- १ नमस्त्यु ण सूत्र शरूत्त लेकर 'मुत्ताण भोजगाण' तक शुद्धि-
 पूर्वक लिखिये । १५
 (२ रे, ३ रे और ४ व प्रश्नामेंमें
 किन्हीं दोबे उत्तर लिखिये ।)
 २ आपके गाँवके किसी भी एक जिनमन्दिरका २५ पवित्रियोंमें
 यणत कीजिये । १५
 ३ नीचे लिखे शब्दोंमेंसे किन्हीं पाँच शब्दोंको मध्यमपूर्वक
 विस्तारके साथ समझाइये । और वे शब्द किसे किसे सूत्रमें
 आये ह, यह भी लिखिये । १५
 सद्धाए वोहि शासन, बीयराय, जि के वि ठाणेण, सजुत्तो ।
 ४ नीचे लिखे हुए वाक्य आपने प्रारम्भिक पाठ्यक्रममें कहाँ पढ़े
 हैं ? और वे किस लिये लिखे गये ह ? स्पष्टतासे
 समझाइये । १५
 (i) हमारा पास (चन्द गोबर व) कुछ धन होनेपर, हम
 कैसे-कैसे दुकान चलाया करते हैं ? (ii) अपना दागु वमजोर

होनेपर क्या हम उसका अहित करनेमें कुछ कम करेंगे ?
(iii) यदि हमें किसी देवकी मदद हो तो क्या हम घरतीपर भी चलेगे ?

५ नीचे लिखे सूत्रोंमेंसे किन्ही दो सूत्रोंके भावाय और किन्ही दो सूत्रोंके ३-३ परिमल लिखिये १६

(i) जगदितामणि सूत्र (ii) इच्छकार सूत्र (iii) उवसग्गहर स्तोत्र

(iv) सामाह्यवयजुत्तो सूत्र

६ प्रश्नके उत्तर दीजिये । १०

(i) जिन भवमें भगवान श्रीमहावीरदेवको सम्मत्त्वकी प्राप्ति हुई, वह भव कौनसा (कितने अनुक्रमका) ? उस भवका संक्षेपमें वर्णन कीजिये । (ii) राजा देवपालने किस तीर्थकर प्रभुजीके पास समयका अगीशर दिया था ? (iii) राजा देवपालने किस तपकी आराधना कर श्रीतीर्थकर पदका उपाजन किया था ?

७ रिक्त स्थानोंकी पूर्ति कीजिये । ९

(i) कमल गडा और महिष प्रभुजीके लक्षण थे ।
(ii) भगवान श्रीमहावीरस्वामीजीकी निधामें (सात्रिन्धमे) और श्राविकाओने तीर्थकर नामवचका उपाजन किया था । (iii) श्री तीर्थके पास नदीके किनारेपर भगवान श्रीमहावीरदेवको प्राप्त हुआ था ।
(iv) श्री नवकार महामन्त्रके अक्षर हो तभी वह पूण कहा जाता है । (v) वषम अट्ठाइया आयबिल तपसे मनाई (सम्पन्न की) जाती ह । (vi) ३ रे, ९ वे और

- ११ व तीर्थकर प्रभुजीके नाम थे । (vii) भगवान् श्रीमहावीर प्रभुजीके १२ चातुर्मास नगरीमें हुए थे । (viii) श्री पावापुरी गुणाया राजगही और कुण्डपुर नीध प्रातर त्रिमे आये ह । (ix) गुरु महा राजक गुण हाने ह ।
- ८ नाचे लिख गद्दामेसे किन्ही नीर अथ लिखिये ।
अविघ्ण लद्ध, मन्ता उवत्ताम, भवविरहवर घाएसिरी,
सरणदयाण तिनाण जयउ, पणमामि परिदिया ।
- ९ वाक्यपूर्ति कीजिय ।
(i) अपना हित चाहनवाले बाद परीक्षामे शामिल होनाम जानाना नही करते । (ii) विद्यार्थी लोग पूना की परीक्षाजाम सम्मिलित हानके लिये बहुत ही उत्सुख रहते ह क्याकि उन (परीक्षाजा) म पाठप्रमका मानदण्ड ह और गाँव गाँवके अध्ययन करनवालाके साथ रुधा मिलता ह । (iii) देवपाल जमी भक्ति हमारेम यह दु सवा वान है ।

परीक्षा ८

ता १-८-१९५४

- [१ रे, २ रे और ३ रे प्रश्नामेंसे किन्ही दोक उत्तर लिखिये ।]
- १ नीचेके सूत्र शुद्धिपूर्वक लिखिये ।
(i) पचिदिय सूत्र (ii) करेमि भते सूत्र
- २ नीचे लिखी सपूण गायत्राके अथ विस्तारपूर्वक लिखिये ।
(i) एव मए अभियुआ सिद्धि भम दिसतु (ii) वरि-
ज्जइ जइ वि जन जयति गामनम ।
- ३ नीचे लिखे विषयामसे किमी एकपर २५ पक्तियामें विषयको लेकर (सुमगत) निवध लिखिये ।

(i) किसी सांख्यिक प्रतिप्रमाणका वर्णन (ii) उपधानकी माला पहचाननेके किसी प्रसंगका वर्णन ।

४ नीचे लिखे प्रश्नोंमेंसे निम्नी तीनके उत्तर लिखिय । १८

(i) करेमि भने सूत्रके परिमल विभागमेंसे कोई भी दो परिमल लिखिये । (ii) इच्छकार सूत्रके परिमल विभागमेंसे कोई भी दो परिमल लिखिये । (iii) अष्टापद पद्यपरकी जिन प्रतिमाओंके बारेमें आप जो जानन हो, वह लिखिये । (iv) दशमस्तवमें प्रभुजीको इनने सब (अधिक) विनोपण क्यों लगाये गये हैं ? समझाइये । (v) भवकी उदासीनता और मार्गानुरीपन याने क्या ?

५ नीचे लिखे तीस कहा आये हैं ? उनके बारेमें आप जो कुछ विनोप जानकारी रखने हों, वह लिखिये । १०

पावापुरीजी, तलाजा, गखेश्वर, शत्रुघ्न, गिरनारजी ।

६ नीचे लिखे शब्दोंमेंसे किन्ही नौके अर्थ लिखिये । ९

तुज्ज, दिज्ज, भयव, चूलावेल, जायत तेसि, इव, उ, च, बिहू, भत्तीइ ।

७ वाक्य पूर्ति कीजिये । ६

(i) दूसरोंके सच्चे झूठे जाहिर करनेमें हम कमे व कितने बडे चतुर हैं । (ii) अपना शत्रु कमजोर होनेपर क्या हम उसका अहित कुछ कम करेंगे ? (iii) हम तो बस होकर प्रतिदिन अनेकों द्वार अनेकों द्वार स्वार करते होंगे ।

८ 'देवीजी ! मैं आपके वरदानसे राजा ता हुआ, पर बड़ी भारी भारी कठिनाइयोंमें आ गया हूँ ।' यह वाक्य किसने कहा था ? प्रसंगके साथ १० पक्तियोंमें समझाओ ।

९ रिक्त स्थानोंकी योग्य शब्दाग पूर्ति कीजिये ।

१०

(i) भगवान् श्रीमहावीरदेवन पद्म पद्म उपवासोरी
(ग्रतोनी) तपस्या गारवी था । (ii) महा
सतीने श्रीवीर प्रभुजीना उरवा अलोना साग बहारानर
(भिक्षामें देकर) धारणा करानका लाभ उठाया था ।
(iii) कुम और गडा, य और प्रभुजीक लछन
थ । (iv) आजकी विषम परिस्थितिको हल करनेके लिये
आवान के अग्रयाकी आज विक्को बहुत ही
आवश्यकता है । और उसी कामके लिय आज अपनी श्री जन
विद्यापीठ परिश्रम उठा रही है । (v) श्रीमहावीर
प्रभुजीना मापन दग लिया, तब लाल के स्थान
पर गुम्न (ध्वेत) निकला था ।

